मुक्ति तरंग

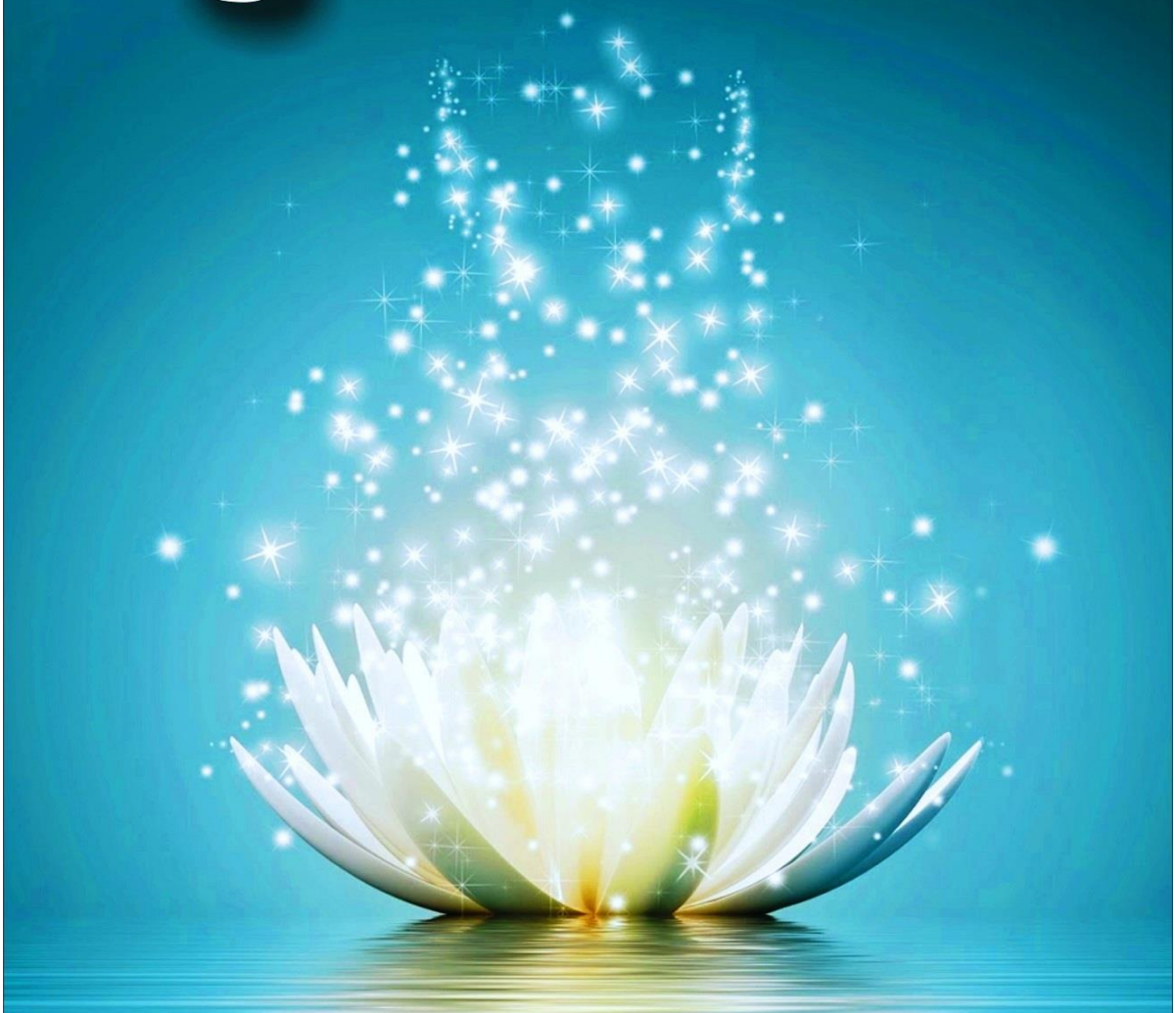

डॉ. स्वतंत्र जैन

वीर
अखिल भारतीय दिगम्बर जैन परिषद का मुखपत्र, नई दिल्ली
दिसम्बर 2006

समीक्षा

मुक्तियाँ

आप इस ब्रह्माण्ड जैसे विशाल और शक्तिशाली हो सकते हैं, लेकिन कैसे ? यह संसार दु:ख का सागर है, फिर आपको सदाकाल रहने वाले सुख का अमृत कुछ मिले तो कैसे ? आप स्वयं सिद्ध बुद्ध हो, लेकिन कैसे ? आप स्वयं परमात्मा हो सकते हो, लेकिन कैसे ? सभी प्राणी, सभी मनुष्य समान हैं, क्योंकि सभी परमात्मा हैं, लेकिन कैसे ? इस संसार में सुख का साम्राज्य स्थापित हो सकता है, लेकिन कैसे ? ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने के सद्प्रयास से सराबोर, शाश्वत सुख को दर्शाने वाली आध्यात्मिक कृति 'मुक्तियाँ' चिन्तन, मनन और अध्ययन की दृष्टि से एक प्रभावी कृति है जो मुक्ति को आत्मसात कर भगवान बनने की दृष्टि से विचारोत्तेजक एवं पठनीय कृति है।

लेखक ने जिनागम रत्नाकर के मंथन से अमृतरस से भरपूर एक सौ एक रत्नों को उदहारण देकर तत्व समझाने की अभिनव पद्धति से तत्वप्रेमियों को जिस कौशल से परोसा है, उसके लिए यह निश्चित ही एक विचारोत्तेजक, पठनीय और उपयोगी पुस्तक बन पड़ी है।

सन्मति सन्देश
आध्यात्मिक सदाचार एवं सत्य तथ्य प्रकाशक मासिक पत्रिका, दिल्ली
जुलाई 2002

समीक्षा

मुक्तियाँ

सुना है कि समुद्र मंथन से 14 रत्न निकले थे, उनमें एक अमृत और विष भी था । किन्तु जिनागम रत्नाकर के मंथन करने से 101 रत्न निकाले गये हैं। वे सभी मात्र अमृतरस से भरपूर हैं।

आत्मार्थी को सत्पथ प्रदर्शक मुक्ति के साधक ये बोल अनुभव की मथानी से मंथन किये गये हैं । उदाहरण देकर तत्व समझाने की अभूतपूर्व पद्धति है इसमें ।

तत्वप्रेमी को अपूर्व शांति रस की प्राप्ति होगी ।

मुक्ति तरंग

-:विवरणिका:-

01 मुक्ति-तरंग को जागृत करें
02 त्रिकालवर्ती तीन लोक का अप्रतिम, अलौकिक सौन्दर्य देखें
03 चैतन्य आत्मदेव की अनंत शक्ति और सत्ता को समझें
04 सिद्धत्व के अमर सुख में प्रवेश करें
05 सभी प्राणी ईश्वर ही हैं
06 अपने अन्तरंग में चैतन्य प्रभु को धारण करें
07 खुद के चैतन्य-महल में रहें
08 कर्ता-पने से मुक्त होकर सच्चे पुरुषार्थी बनें
09 चराचर का यह समस्त संसार आपसे ही प्रकाशित है
10 मृगतृष्णा से पीड़ित व्यक्ति की कल्पना का संसार
11 अपने त्रिकाली स्वरुप को स्वीकार करें
12 सृष्टि और आत्मदेव को समझें
13 मेरा चैतन्य सम्राट किसी में भी लिप्त नहीं है
14 सर्वोत्कृष्ट चैतन्य सम्राट को नमस्कार हो
15 इस संसार के छल से मुक्त हों
16 खुद के कारण परमात्म स्वरुप में ही रमण करना ही योग्य है
17 चैतन्य-अमृत को निज-अनुभूति के बाँध से रोकें
18 कम से कम इस जन्म में चैतन्य के संस्कार तो प्राप्त कर लें
19 खुद को देखने की कोशिश करें
20 इक साधे, सो सब सधे, सब साधे, सब जाये
21 पञ्च परमेष्ठी की त्रिकाल सच्ची स्तुति

22 आप तीनो काल और तीनो लोक में विभाव परिणाम से शून्य ही हो

23 सभी जीव शुद्ध चैतन्य परमात्मा ही हैं

24 त्रिकाल आनन्द प्रभु बनें -

25 द्रव्य में डूब कर द्रव्य को प्राप्त करें

26 आप तो त्रिकाल कल्याण मूर्ति शुद्ध परमेश्वर ही हो

27 सिद्ध परमात्मा बनें

28 भव-सागर से तिरने का पुरुषार्थ करें

29 चैतन्यदेव को देखने से त्रिलोकवर्ती, त्रिकालवर्ती सब कुछ दिखता है

30 परम शुद्ध कारण-परमात्म पद में परिणमन करें

31 मुक्ति रमणी से अनंत सुख पायें

32 चैतन्य-पथ का अनुसरण करें

33 निज-आत्मदेव में स्थिर रह कायोत्सर्ग करें

34 अनंत सुखदायक मुक्ति-सुंदरी के श्रीवल्लभ बनें

35 समस्त प्राणियों के आराध्य अरिहंतदेव बनें

36 निर्वाण के कारण के कारण को मानें

37 निज चैतन्य परमात्मा के अलावा अन्य कुछ भी सारभूत नहीं है

38 अपने भले की □□□□□ बनाइए

39 □□□□□□□□□□□ के □□□□-□□□□□ □□□□□□ से त्रिलोकपति बने

40 एक सार्थक कोशिश करें

41 निश्चय-प्रतिक्रमण के कारण के कारण को समझें

42 प्रतिक्रमण-स्वरूप पुराण-पुरुष बनें

43 निश्चय-व्यवहार का सुंदर संगम करें

44 चैतन्य सम्राट के परमाणु का स्ट्रक्चर

45 तीन लोक के सम्राट ही हैं आप

46 शास्त्रों को मस्तिष्क में मत भरो

47 संकल्पी हिंसा से हमेशा बचने की कोशिश करें

48 कर भला, हो भला

49 सिर्फ आत्मोद्धार का प्रयत्न करें

50 सुखस्वरूप चैतन्यदेव भगवान आत्मा की सच्ची रूचि को जागृत करें

51 सीमाहीन सुख के लिए खुद को जानें

52 सहज सुख का आनंद लेने के लिए सिद्धालय जाएँ

53 परमाणु की तरह हम सभी लोग अमर हैं

54 स्रष्टि मेरी नहीं, मैं ही स्रष्टि हूँ तथा मैं ही योगियों के ध्यान गम्य हूँ

55 खुद के आत्मदेव को अपना लें

56 सिद्ध स्वरुप परम ज्योतिर्मय चैतन्यदेव ही हो आप

57 निर्विकल्प होकर चैतन्यदेव बनें

58 लगन □□□□ अन्तरंग अगन को जलायें

59 □□□□ □□ चैतन्य-जल के लिए तड़फन

60 देव मरे, एकेंद्रिय होय

61 आत्म धर्म ही शाश्वत वैज्ञानिक धर्म है

62 ज्ञानी के चैतन्य-सूर्य के प्रकाश में खुद को देखें

63 हमारे चारो ओर नारकी से भी ज्यादा दुखी जीव रहते हैं

64 घांस पर नहीं चलें

65 आत्म-धर्म के ध्वज को पूरे संसार में लहराएँ

66 आपमें अशुद्धि न थी, न है और न होगी

67 मोक्ष महल की ट्रेन
68 सच्चा मुमुक्षु
69 यह मनुष्य जन्म न जाने आपको फिर कब मिलेगा?
70 □□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□-□□□□□□ ही हो आप
71 परम □□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□□

01 मुक्ति-तरंग को जागृत करें

हे चैतन्यदेव, अनादिकाल से आज तक □□□□□□ □□□ □□ आप□□ □□□□ □□□ भावना □□यी □□ □□ -

1. आपके आत्मदेव □□ □□□□□□ तो □□□□□□□□□ □□□□□□-□□□□□□□ है.
2. □□□□□-□□□□ है.
3. □□□□□□घन है.

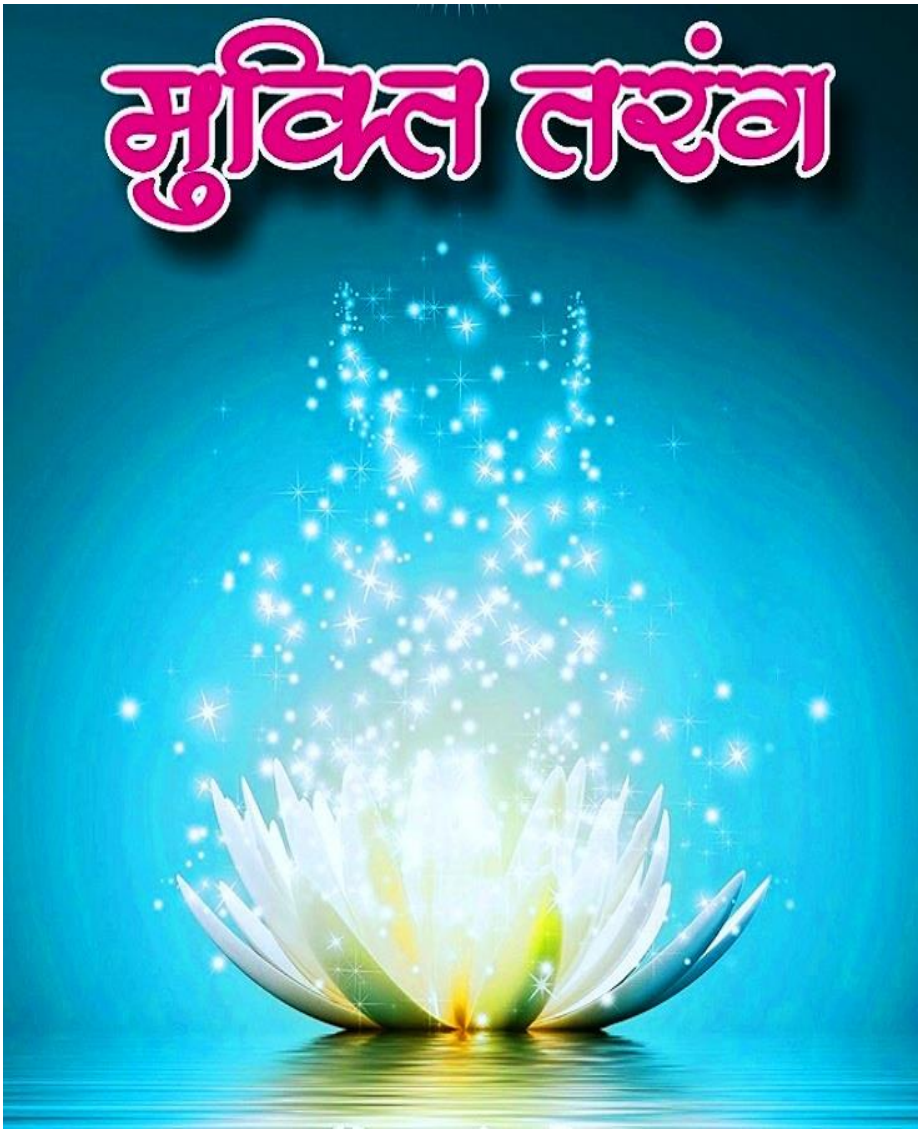

4. □□□□□□□□□□□□□□□□ है.
5. □□□□□□□□□□□ है.
6. □□□□ शक्ति□□□□ है.
7. □□□□ □□□□□□□□□□ है.
8. □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ वाला है.
9. □□□□□ □□□□□□ है.
10. पर मेश्वर है.
11. □□□□□-□□□□□ है.

12. लेकिन □□□ □□□□□ भाकर □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ आपको □□□ □□□ □□□ □□?

13. □□ प्रभो, □□□ □□□□ चैतन्य-□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ अब आप बस इस □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ कर इ□□ □□□ जम □□□, रम □□□, □□□ □□□;

14. □□□ आपका □□□□□□ □□ □□□□ □□□

15. □□ प्रभो, जब तक आप □□त □□ □□□ □□□□ □□□□□□,

16. आपके □□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□?

17. उ□□ तरह आप □□□□ हर समय □□□□□-□□□□□ □□ □□□-□□□ □□□ करो,

18. □□□□□□ आपके उस □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□,

19. □□□□□□□ आपने □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□,

20. □□□ यह □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□ अंधियारी □□□ □□□

21. □□□□□□□□□□ □□□□□शक □□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□;

22. □□□□□□ □□□ वह □□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□

23. □□□ तरह □□ प्रभो, जब तक आपको इस □□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□,

24. जब तक आप इस □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□,

25. जब तक आपको आपके खुद के इस □□□□देव की □□□□□ □□□□ या मुक्ति तरंग जागृत नहीं □□□□,

26. तब तक □□ प्रभो, आपका □□□□□□ □□□□ □□□□,

27. तब तक आप □□□□□□ □□ □□□□□ कर □□□□□ □□□ बन □□□□□□

28. बस अब चैतन्य-प्रभु बनने का निर्णय अब आपको ही करना है.
29. अतः अब इस जन्म में आपका एक मात्र कर्तव्य तो मुक्ति-तरंग को जागृत करना ही है.

02 त्रिकालवर्ती तीन लोक का अप्रतिम, अलौकिक सौन्दर्य देखें

सर्वव्यापी आकाश घट या घड़े के भीतर और बाहर स्थित रहता है,
क्योकि घट के बाहर और भीतर एक ही सर्वव्यापी आकाश स्थित होता है
इसी तरह नित्य और निरंतर रह रहा आपका आत्मदेव भी आपके इस शरीर के भीतर और बाहर भी रहता है,
तथा जैसे दोनों तरह के इन आकाशों में कोई भी भेद नहीं होता है,
इसी प्रकार आपके भीतर व बाहर एक ही चैतन्यदेव व्याप्त रहता है.

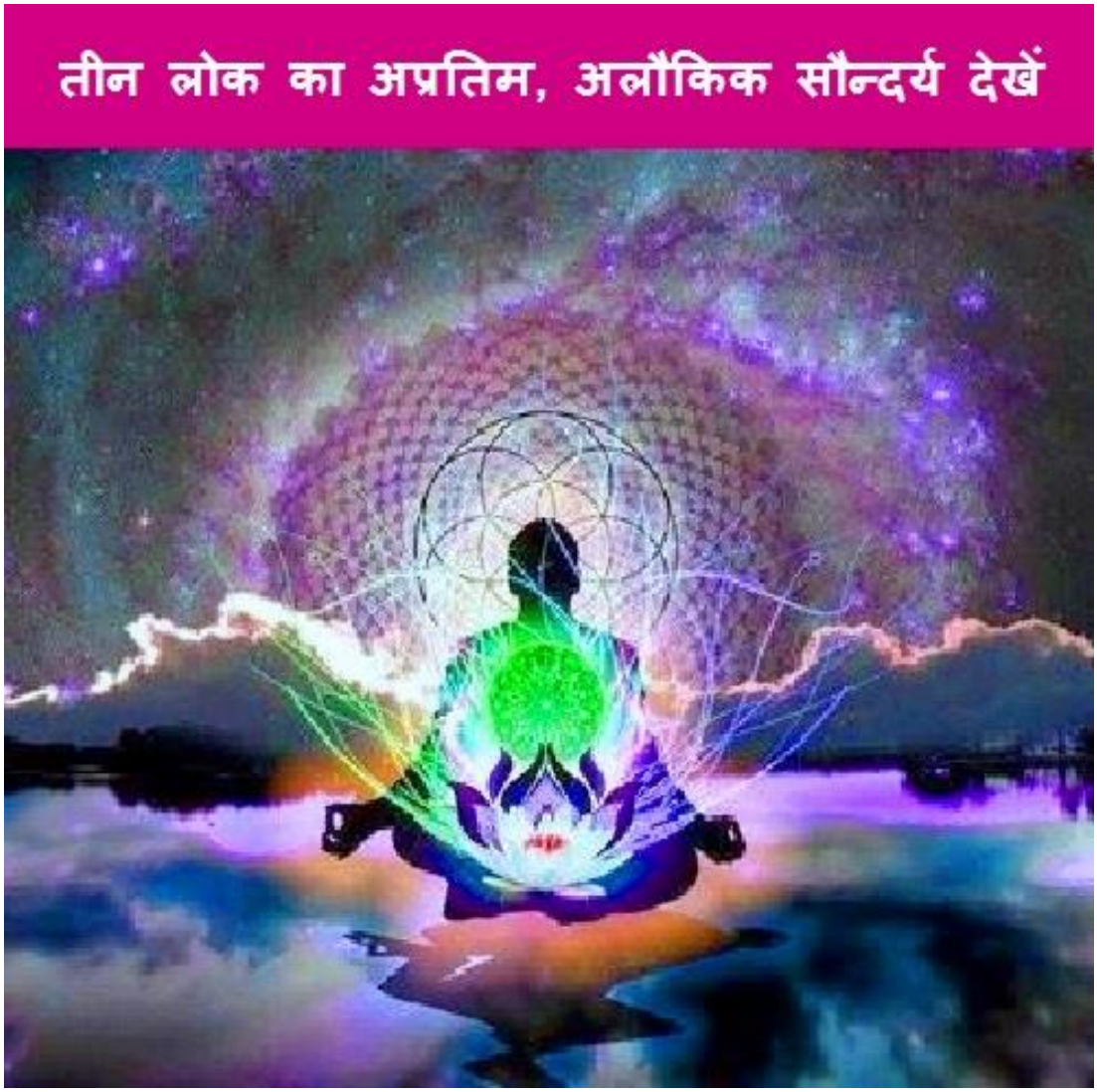

जिस तरह दर्पण अपने में प्रतिबिम्बित रूप के भीतर और बाहर भी स्थित रहता है,
इसी तरह आपका निज-चैतन्य परमात्मा भी इस शरीर के भीतर और बाहर स्थित रहता है.
अतः अब अपने आप को दर्पण की तरह स्वच्छ, निर्मल और निष्कलंक मान कर
अब आप भी उसमे अपना अद्भुत, अतुलनीय, तेजस्वी, अनंत गुणात्मक चैतन्य-सौन्दर्य को निहार लें.
हे प्रभो, अगर आप ऐसा करते हैं, तो उसमें आपको खुद के त्रिकालवर्ती तीन लोक का अप्रतिम, अलौकिक सौन्दर्य मिलेगा.

क्या आप खुद के त्रिकालवर्ती तीन लोक का अप्रतिम, अलौकिक सौन्दर्य देखना चाहेंगे?

03 चैतन्य आत्मदेव की अनंत शक्ति और सत्ता को समझें

हे आत्मदेव, आपके इस प्रिय शरीर में अभी आपको जो जीवन के लक्षण दिख रहे हैं,
अभी आपको जो इस शरीर की हलचल दिख रही है,
वह वास्तव में आपके इस शरीर की न होकर आपके खुद के आत्म तत्व की ही है.
इस आत्म तत्व के निकलने पर यह शरीर निर्जीव हो जाता है.
यदि यह सजीवता स्वयं शरीर की होती, तो किसी भी व्यक्ति की कभी भी मृत्यु ही नहीं होती.
आज वैज्ञानिक खोज जरुर कर रहे हैं कि जिस प्रकार मशीन के पुर्जे बदल-बदल कर उसकी उम्र बढ़ाई जा सकती है,
उसी प्रकार शरीर के अंग बदल-बदल कर उसे भी हजारों वर्ष जीवित रखने के प्रयत्न चल रहे हैं.
रोबोट मानव बनाने के प्रयत्न भी चल रहे हैं.
इन वैज्ञानिकों के अनुसार इस रोबोट मानव के कुछ हिस्से मानवीय होंगे, तो कुछ हिस्से यांत्रिक.
लेकिन उनके किये जा रहे ये सभी प्रयत्न निष्फल ही होंगे,

क्योकि किसी भी यांत्रिक अंग में जब चेतनता ही नहीं होगी, तो फिर उस शरीर को मानव नाम संज्ञा नहीं दी जा सकेगी.

साथ ही किसी भी शरीर से आत्मा के निकल जाने पर उसके अंगों को बदलना भी व्यर्थ हो जाएगा.

आत्मा के शरीर में रहने तक ही यह अंग बदलने का कार्य किया जा सकता है.

अत: आपका यह चैतन्य आत्म तत्व ही मुख्य है, शरीर नहीं.

क्या आप अब इस चैतन्य आत्मदेव की अनंत शक्ति और सत्ता को समझना और पाना चाहेंगे?

04 सिद्धत्व के अमर सुख में प्रवेश करें

एक बार किसी शेर का बच्चा बिछुड़ कर भेड़ों के समुदाय में पलने लगा और फिर वह अपने आपको को भेड़ ही समझने लग जाता है और भेड़ के समान ही मिमियाने लगता है.

किसी समझदार शेर ने अत्यंत करुणा कर उसे उसका स्वरुप समझाया और कहा कि वह पानी में अपना अपना चेहरा देखे और उसी की तरह ही चिल्लाये.

इस भेड़-पोषित सिंह ने ऐसा ही किया. जब उसने अपनी खुद की प्रबल गुंजायमान दहाड़ सुनी, तो उसके भीतर का सिहं जाग उठता है. फिर वह भी वैसी ही गर्जना कर अमरत्व को प्राप्त कर सर्व शक्तिमान बन जाता है और सभी भेड़ों को छोड़कर सिंहों के साथ सिद्ध-वन में चला जाता है.

यह है परम कल्याणकारी सदगुरु की महिमा जिसने उस शेर की सुप्त पड़ी चैतन्य-प्रतिभा का जागरण करवा कर उसे खुद के परमात्म स्वरूप की पहचान करवाई और उसकी खोई स्मृति को जगाकर उसे सिद्धत्व के अमर सुख में प्रवेश करवाया.

वास्तव में सदगुरु ने उसे चैतन्य-सिंह नहीं बनाया है; बल्कि उन्होंने तो केवल उसके त्रिलोकवर्ती स्वरूप का उसे बोध कराया है.

हे प्रभो, आपके निज आत्मदेव का सच्चा स्वरूप भी यही है;
आपका निज परमात्म स्वरूप भी यही है.

यही वह सच्चाई है जिसे आपको सिर्फ जानना, मानना और उसमें अंतर्लीन होना है.
क्या अब आप भी सदगुरु के प्रताप से सिद्धत्व के अमर सुख में प्रवेश करना चाहेंगे?

05 सभी प्राणी ईश्वर ही हैं

1. अहंकार एवं मोह के वश आज तक जिस संसार को मैं अपना कहता था,
2. वह कुछ भी मेरा नहीं है.
3. मैं शरीर नहीं, बल्कि चैतन्य देव ही हूँ.
4. मैं शरीर नहीं, अपितु आत्म-प्रभो ही हूँ.

5. मेरा चैतन्य प्रभो ही सम्पूर्ण जगत में भी व्याप्त है.
6. मेरी यह देह मुझ से ही प्रकाशित है.
7. साथ ही यह सम्पूर्ण संसार भी मेरे ही प्रकाश से प्रकाशित हो रहा है.
8. चैतन्य आत्मा से पृथक इस जगत का अस्तित्व ही नहीं है.
9. यह संसार मेरे ही आत्मरूप चैतन्य तत्व से प्रकाशित हो रहा है.
10. इसलिए यह सम्पूर्ण संसार मेरा ही आत्म-स्वरुप या ब्रह्म-स्वरूप है.
11. इसी तरह से इस लोक में दिख रहे और नहीं दिख रहे सभी प्राणी भी ईश्वर ही हैं,

06 अपने अन्तरंग में चैतन्य प्रभु को धारण करें

1. शरीर के प्रति आसक्ति और मोह के कारण ही आप इस शरीर और संसार को आज तक अपना समझते रहे हो.
2. लेकिन इस संसार को जिस दृष्टि से अब तक आप देखते आये हो, वह सब भूलकर सोते से आपको अब जाग जाना चाहिए.
3. आपकी आत्मा आपके चैतन्य कारण-परमात्मा से भिन्न नहीं है.
4. इस आत्म-रूचि के साथ अब आपको अपने शरीर और विषयों के प्रति अपने राग भाव के प्रति ममत्वहीन होना है.
5. बस फिर आपको कुछ भी छोड़ना नहीं है, त्याग नहीं करना है.
6. छोड़ना या त्याग करना आत्म-स्वभाव से प्रतिकूल होता है.

7. जहां करने की बात आ जाती है, वहाँ पर कर्तापना मौजूद रहने से अहंकार हो जाता है.

8. सत्य एवं शाश्वत चैतन्य प्रभो का बोध होने पर असत्य एवं अनित्य छूट जाता है. उसे छोड़ने का प्रयास नहीं करना पड़ता है.

9. स्वप्न में कोई अगर अपने आपको सम्राट के रूप में देखे, तो वह जागने पर यह नहीं कहेगा कि मैंने अब अपने साम्राज्य का त्यागकर दिया है.

10. इसी तरह आत्मस्वरूप का ज्ञान हो जाने पर इस संसार, परिवार और शरीर आदि के प्रति आपकी जो भी आसक्ति रहती है,

11. वह सब स्वतः छूट जाती है, उसका त्याग करना नहीं पड़ता है.

12. फिर सदगुरू की अतुलनीय देशना से ही आप इस गंभीर बात को समझकर खुद के निज-परमात्मा को गृहण कर सकोगे.

13. इस संसार के सभी प्राणी शीघ्र ही अपने अन्तरंग में चैतन्य प्रभु को धारण कर अपना कल्याण करें.

14. ॐ शांति.

07 खुद के चैतन्य-महल में रहें

1. मिठाई में जो भी मिठास रहती है, वह चीनी की ही होती है.

2. लेकिन जिन अबोध बालकों को इस रस का ज्ञान नहीं है, वे चीनी, मिश्री, गुड़, मिठाई आदि को भिन्न-भिन्न मानेंगे और उन सभी में अभिन्नता नहीं देख पायेंगे.

3. फिर भी जिन बुद्धिमानों को इन सबके एकत्व का बोध होगा, वे कहेंगे कि चीनी, गुड़, मिश्री आदि के रूप में मिठास के रंग-रूप-गुण भले ही भिन्न दिख रहे हों, किन्तु वे एक ही हैं.

4. लेकिन अभी भी यह अबोध बालक तो कहेगा कि वे सब हर तरह से भिन्न-भिन्न दिख रहे हैं, फिर वे एक कैसे हो सकते हैं?

5. किन्तु जो ज्ञानी उस सच्चाई को जानते हैं, वे हमेशा ही कहते हैं कि यह सम्पूर्ण मिठास उस चीनी की ही है.

6. इसी तरह किसी भी समुद्र के जल से तरंग, फेन और बुदबुदा भिन्न नहीं हैं,

7. ऐसे ही यह संसार और इसकी सभी अवस्थाएं या पर्यायें भी आत्मा से भिन्न नहीं हैं और आत्मा से ही निकली हुई हैं.

8. अतः हे आत्मदेव, चैतन्य-आत्मा के अज्ञान से ही आपको यह संसार भास रहा है.

9. लेकिन जैसे ही आपको अपने निज परम पदार्थ का ज्ञान होता है,

10. तब फिर आपको भी यह संसार पराया ही लगने लगता है.

11. क्या अब आप इस संसार को पराया मानकर अपने खुद के चैतन्य-महल में अनंत सुखो के साथ हमेशा रहना चाहेंगे?

08 कर्ता-पने से मुक्त होकर सच्चे पुरुषार्थी बनें

1. हे चैतन्यदेव, कोई भी व्यक्ति दोनों में से किसी एक को ही देख सकता है,
2. या तो खुद के आत्मदेव को
3. या फिर इस संसार को.
4. अतः अब आप यह भी जान लें कि जिस महापुरुष का निज आत्म तत्व से साक्षात्कार हो जाता है,
5. उसके इस आत्मज्ञान के बाद भी संसार तो रहता है,
6. किन्तु जैसा वह अज्ञानी को दिखाई देता है,
7. वैसा इस आत्म-ज्ञानी को नहीं दिखाई देता है.
8. इस ज्ञानी की दृष्टि ही बदल जाती है,
9. देखने का ढंग ही बदल जाता है.
10. ज्ञानी को एक नई दृष्टि मिल जाती है
11. उसके सोचने का ढंग बदल जाता है.
12. अब वह जानता है कि कर्तत्वपने से अहंकार बढ़ता है.
13. अतः अब वह सबको समझाता है कि आप भी कर्ता-भाव को छोड़ दो,

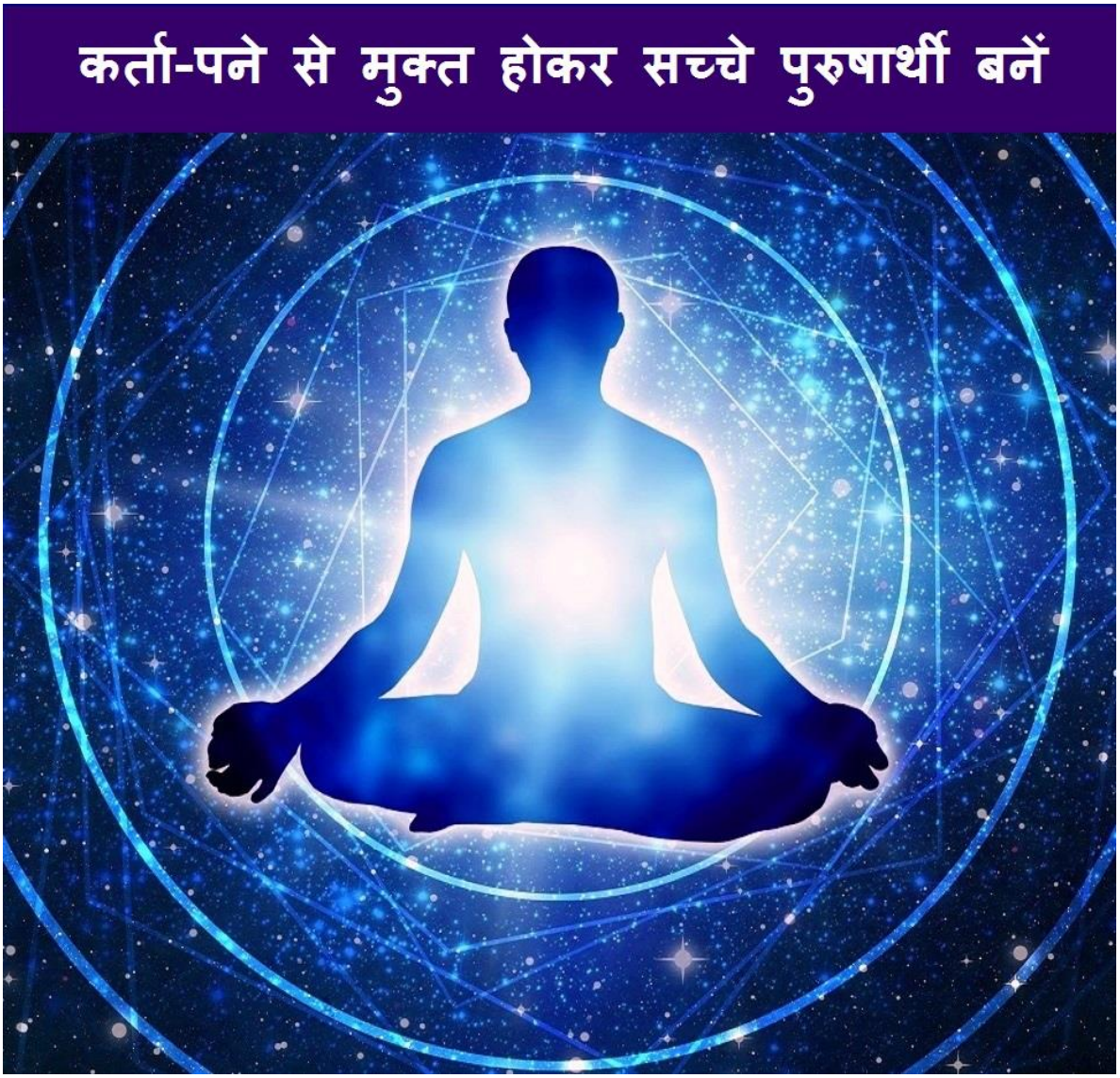

14. क्योकि सृष्टि का नियम है कि सब कुछ अपने आप ही हो रहा है.
15. फिर जो भी हो रहा है, उसे स्वाभाविक रूप से हो जाने दो,
16. अतः अब आप संकल्प लेकर किसी भी तरह का कोई भी काम मत करो,
17. सब कुछ स्वीकार कर लो.
18. कर्ता नहीं, बल्कि साक्षी बन जाओ, केवल-दृष्टा बन जाओ.
19. साक्षी का अर्थ अकर्मण्य होना नहीं है,
20. बल्कि अपने आप को कर्ता-पने से मुक्त करना है.

21. यही मानना ही सच्चा पुरुषार्थ है.
22. अतः अब आप भी कर्ता-पने से मुक्त होकर सच्चे पुरुषार्थी बनें.

09 चराचर का यह समस्त संसार आपसे ही प्रकाशित है

1. चैतन्य का प्रकाश आपका निज स्वरूप है.
2. आप उससे भिन्न नहीं हो.
3. जब यह चैतन्य प्रकाशित होता है,
4. तब वह आपसे ही प्रकाशित होता है.
5. आप आत्मस्वरूप हो,
6. इसलिए आत्मा के समस्त गुण आपके ही गुण हैं.
7. अतः आपका यह आत्मा स्वयं प्रकाशमान है.
8. आपको किसी भी अन्य प्रकाश की आवश्यकता नहीं है.
9. इस तीन लोक में चारो ओर जो भी यह प्रकाश दिख रहा है,

10. समस्त पदार्थों में भी जो आपको प्रकाश दिखाई दे रहा है,
11. वह भी आपके ही चैतन्य के ज्ञान गुण का ही प्रकाश है.
12. अतः चराचर का यह समस्त संसार आपसे ही प्रकाशित है.

10 मृगतृष्णा से पीड़ित व्यक्ति की कल्पना का संसार

बड़े ही आश्चर्य की बात है कि चैतन्य सम्राट के अज्ञान के कारण लोगो को यह कल्पित संसार ऐसा ही भासता है जैसे -
मृगतृष्णा से पीड़ित व्यक्ति को सीपी में चांदी, रस्सी में साँप और सूर्य की किरणों में जल भासता है.
लेकिन सच्चाई यह है कि

1. यह संसार सीपी के समान महत्वहीन है, किन्तु चाँदी के समान मूल्यवान दिखाई देता है.
2. यह संसार रस्सी के समान निर्जीव है, किन्तु अज्ञान से सर्प के समान दिखाई देता है.
3. यह सूर्य की किरणों में जल की भ्रान्ति के समान दिखाई देता है अर्थात इस संसार की मृग-मरीचिका में केवल जल की भ्रान्ति होती है, किन्तु वह जल प्यास नहीं बुझा सकता है; इसलिए इसे मृग मरीचिका कहते हैं.

अतः यह संसार सत्य नहीं है, सिर्फ माया-जाल है, कल्पित है तथा भ्रम मात्र है.

क्या आप अब इस कल्पना से बाहर आकर चैतन्य के अमृत को पीना चाहेंगे?

11 अपने त्रिकाली स्वरुप को स्वीकार करें

जैसे मिटटी में घड़ा, जल में लहर और सोने में आभूषण लय को प्राप्त होते रहते हैं तथा फिर उसी में ही विलीन हो जाते हैं.

इसी तरह से आपसे उत्पन्न हुआ यह संसार आप से ही लय को प्राप्त हो रहा है तथा फिर आप में ही विलीन भी हो जाता है.

इस तरह से सृष्टि का यह चक्र भी आप से ही गतिमान होकर आप में ही विलीन हो रहा है.

क्या अब आप अपने इस त्रिकाली स्वरुप को स्वीकार करेंगे?

12 सृष्टि और आत्मदेव को समझें

1. कुछ लोग मानते हैं कि यह सृष्टि ईश्वर ने बनाई है और वही सृष्टा है, वही निर्माता है.

2. किन्तु यह बात किसी भी तर्क पर खरी नहीं उतर सकती है.

3. अगर इस संसार को ईश्वर ने बनाया है,

4. तब ईश्वर या भगवान या खुदा के पास दुःख और पीड़ा कहाँ से आये, जो उसने इन दुःख, पीड़ा और कष्टों को इस संसार में डाल दिया?

5. क्योकि ईश्वर या भगवान या खुदा तो सर्व दुखों को हरने वाले माने जाते हैं.

6. विज्ञान ने भी आज तक इस बात को स्वीकार नहीं किया है.

7. वैज्ञानिक कहते हैं कि यह सृष्टि अनादि से है और उसका कोई बनाने वाला नहीं हैं.
8. तथा किसी व्यक्ति या ईश्वर ने इसे नहीं बनाया है.
9. इस संसार का कोई भी पदार्थ कभी भी नष्ट नहीं होता है,
10. इसका सिर्फ हर समय रूप परिवर्तन होता ही रहता है
11. लेकिन आपका आत्मतत्व तो अद्भुत है, विशेष है.
12. आप स्वयं चैतन्यदेव होने से नित्य ही हो.
13. ब्रह्मा से लेकर तृण पर्यन्त समस्त जगत का नाश हो जाने पर भी आपका कभी भी नाश हुआ ही नहीं है.
14. अब आप भी अब मान लो कि जब त्रिलोक की सम्पूर्ण सत्ता का आधार मैं ही हूँ, तब मैं किसी और को नमस्कार कैसे करूँ.?
15. अतः मेरा मुझ को ही नमस्कार है.
16. इस तरह मैं आश्चर्यमय ही हूँ.
17. क्या अब आप भी सृष्टि और आत्मदेव की इस सच्चाई को मानना चाहेंगे?

13 मेरा चैतन्य सम्राट किसी में भी लिप्त नहीं है

1. मैं देहधारी होते हूए भी देहातीत ही हूँ.
2. अनंत जीव राशियों से भरे इस संसार में होने पर भी मैं तो अद्वेत ही हूँ.
3. मैं न कहीं जाता हूँ,
4. न ही मैं कहीं से आता हूँ

5. मैं तो सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त और स्थित हूँ.
6. अतः मैं स्वयं ही परम आत्म रूप परमात्मा ही हूँ
7. तथा इस संसार में दिख रहे सभी पदार्थ मेरे कुछ भी नहीं है.
8. मेरी आत्मा ने किसी को अधिकृत नहीं कर रखा है
9. किसी को गुलाम नहीं बना रखा है
10. मेरा आत्मदेव तो असंग है
11. कर्ता और भोक्ता से मुक्त है
12. इसलिए इस संसार की कोई भी वस्तु मेरे आत्मदेव की नहीं है.

13. क्योकि वह तो केवल दृष्टा है, साक्षी है.
14. इस तरह जब सब कुछ आत्मा का ही है.
15. तथा दिख रही यह सारी सृष्टि उस आत्मा की ही क्रीड़ा है
16. उसी का नृत्य है
17. उसी की लीला है.
18. तथा मेरा आत्मदेव कुछ नहीं करते हुए भी सब कुछ उसके ज्ञेयपने से ही हो रहा है
19. अहो, इतना सब कुछ होने पर भी महान आश्चर्य की बात यह है कि
20. मेरा चैतन्य सम्राट फिर भी किसी में भी न लिप्त हुआ है, न है और न ही कभी भी होगा.

14 सर्वोत्कृष्ट चैतन्य सम्राट को नमस्कार हो

1. इस संसार के सभी सांसारिक भोग आपके मन और इन्द्रियों के विषय हैं,
2. आपके निज चैतन्य-सम्राट के नहीं.
3. क्योकि यह चैतन्य-आत्मा तो इस भोगमय शरीर के अंदर जल में कमल की तरह से रहता हुआ भी निर्लिप्त ही रहता है.

4. आपको जब तक अज्ञान है, तभी तक आपको ज्ञान की आवश्यकता प्रतीत होती है.

5. लेकिन ज्ञान ज्ञाता और ज्ञेय; ये तीनों भेद रूप ही होते हैं,

6. जबकि आप तो अभेद ही हो.

7. अतः आपके आत्मदेव में ये तीनों भेद नहीं रहते हैं.

8. आप स्वयं ही चैतन्यदेव होने से अखंड और निर्दोष हो.

9. अतः आपको ज्ञान की किसी भी अवस्था या पर्याय की आवश्यकता नहीं है.

10. अहो, आपके निज तत्व के इस अनुभव के बाद फिर आपका यह ज्ञान दर्पण के समान खुद को और समस्त पर को जानता है.
11. इसलिए हे प्रभो, आपके इस सर्वोत्कृष्ट चैतन्य सम्राट को नमस्कार हो.

15 इस संसार के छल से मुक्त हों

ज्ञानी के लिए यह संसार तो हर समय मिथ्या या काल्पनिक ही रहता है.
लेकिन अज्ञानी इस संसार के भोग-उपभोग में ही रहने की रागमय कल्पना करता रहता है.
साथ ही कुछ अज्ञानी लोग द्वेष बुद्धि से इस संसार को छोड़ना चाहते हैं.
इस तरह से अज्ञानी संसार की हर वस्तु का ज्ञान प्राप्त करना चाहता है
यहाँ तक कि वह खुद का भी ज्ञान प्राप्त करना चाहता है.
फिर भी वह कुछ नहीं जान पाता है.
क्योकि उसका खुद को जानने का अज्ञान शेष रह जाता है.
यदि किसी व्यक्ति को ज्ञान चाहिए तो उसे पता होना चाहिए कि जिस वस्तु का उसे ज्ञान करना है,

वह वस्तु कैसी है, कहाँ पर है और उसे प्राप्त कैसे किया जा सकता है?

फिर उसे उस ज्ञान प्राप्त करने की क्रिया भी करनी पड़ेगी.

अहो, आत्मज्ञानी तो सब कुछ जान कर तृप्त हो जाता है

उसे अन्य किसी भी ज्ञान की अपेक्षा नहीं रहती है.

अतः आत्मज्ञान होना या खुद की प्रतीति करना ही परम ज्ञान है

लेकिन जब आपका आत्मदेव तो स्वयं ही ज्ञानमूर्ति है,

साथ ही उसे दुनियाँ के सभी ज्ञानों का ज्ञान है.

तब आप ही बताओ कि आपका आत्मदेव फिर किसका ज्ञान करेगा?
अहो, आपके आत्मदेव के लिए ज्ञान-ज्ञायक-ज्ञेय के तीनों भेद यथार्थ नहीं है.
ये तीन आपको खुद के अज्ञान होने से ही भास रहे हैं,
अन्यथा ये सभी अलग-अलग न होकर आपके निज चैतन्यदेव में ही एकाकार हैं.
तात्पर्य यह है कि जो अपने आपको आत्मदेव जान और मान लेते हैं, वे ही इस संसार के छल या अज्ञान से मुक्त हो जाते हैं.
क्या अब आप भी इस संसार के छल से मुक्त होना चाहेंगे?

16 खुद के कारण परमात्म स्वरुप में ही रमण करना ही योग्य है

आत्म कल्याण होने से पहले अक्सर बारम्बार प्रबल परीषह, दुःख या मुसीबत आने का स्वभाव होता है.
परन्तु यदि उस परीषह का शांतचित से वेदन किया जाए, तो शीघ्र ही आत्मदेव से मिलन का योग बन जाता है.
अतः प्रत्येक जिज्ञासु व्यक्ति को ऐसे शुद्ध आचरण से वर्तना चाहिए कि किसी भी विषम परिस्थिति में उसका खुद के अडोल, अकंप निर्मल चैतन्यघन परमात्म स्वरुप से विश्वास स्खलित न हो.
हो सकता है कि अन्त काल या मृत्यु काल में काल या यम भी किसी व्यक्ति को कदाचित दुखदायक नहीं लगता होगा,
लेकिन आपको तो अभी ही इस संसार का संग उससे भी ज्यादा दुःखदायक लगना चाहिए.

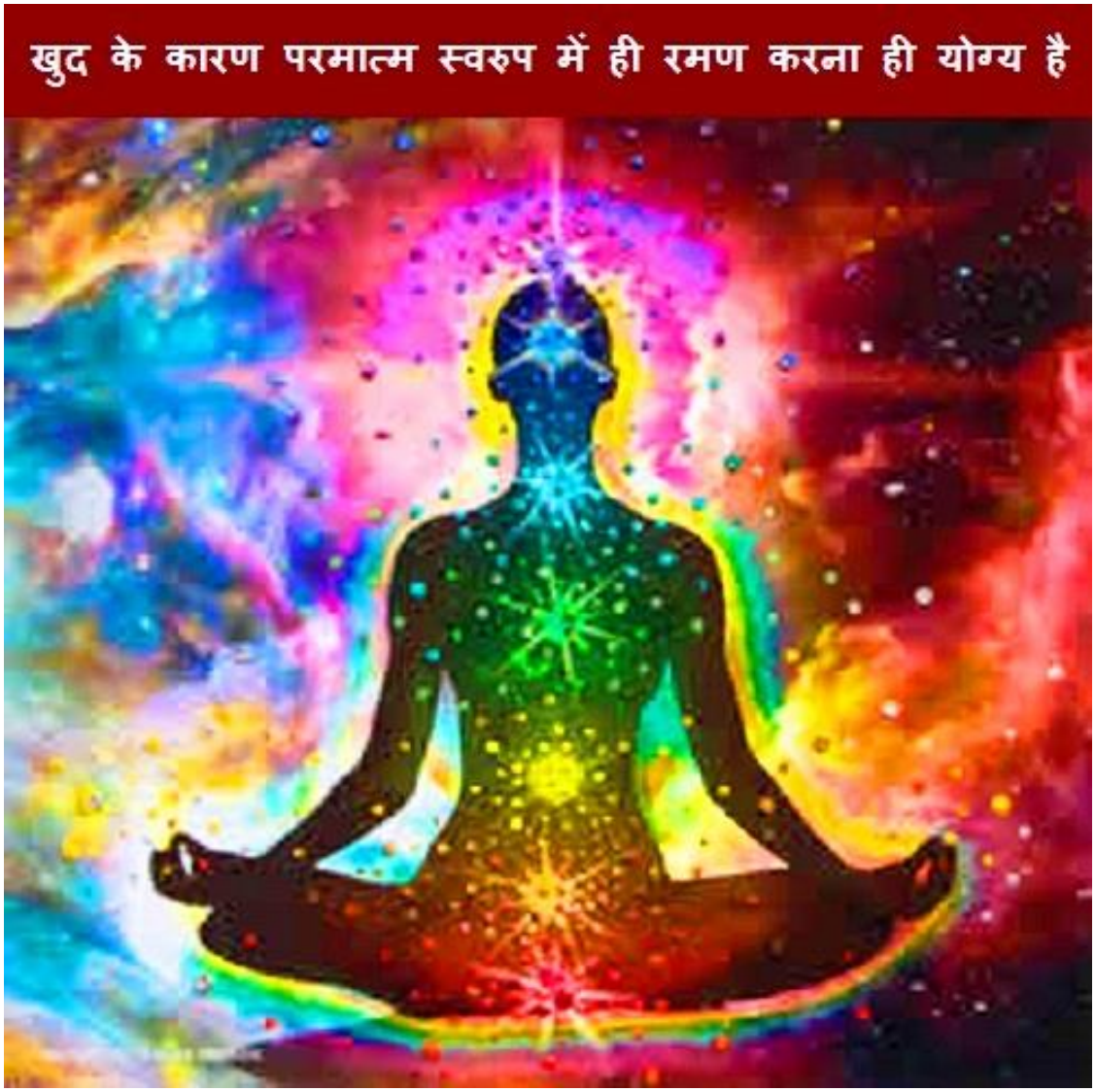

इस तरह से निज पथ का मार्ग तो सरल है, किन्तु प्राप्ति अति दुर्लभ है.

अतः अब आपको कभी भी अपने परमानन्द स्वरूप हरि या निज आत्मदेव को एक क्षण के लिए भी नहीं विसरना चाहिए.

आपके सर्व कृति, वृति और कल्याण का हेतु आपका निज स्वरूप का चिन्तन ही रहना चाहिए.

इसलिए अब आपके लिए तो संसार के अन्य सभी कार्यों में प्रवर्तते हुए भी अन्यत्व भावना से ही उनमे वर्तने का अभ्यास रखना योग्य है.

इसलिए किसी भी तरह के प्रमाद के समय में भी वैराग्य की तीव्र लगन को मन्द करना कभी भी योग्य नहीं होता है.
अतः अब आपको खुद के ऐसे कारण परमात्म स्वरुप में रमण करना ही योग्य है.

17 चैतन्य-अमृत को निज-अनुभूति के बाँध से रोकें

अहो, इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति का जीवन अल्प है और जी का जंजाल अनन्त है.
प्रत्येक जीव को मिल रही धन-संपदा भी संख्यात है और जीव को तृष्णायें अनन्त हैं.
अनादिकाल से हो रही ऐसी स्थिति में आपको खुद की स्वरूप-स्मृति सम्भव नहीं हो पा रही है.
परन्तु जिस महापुरुष को जी का जंजाल अल्प है और जिसका जीवन अप्रमत्त है.

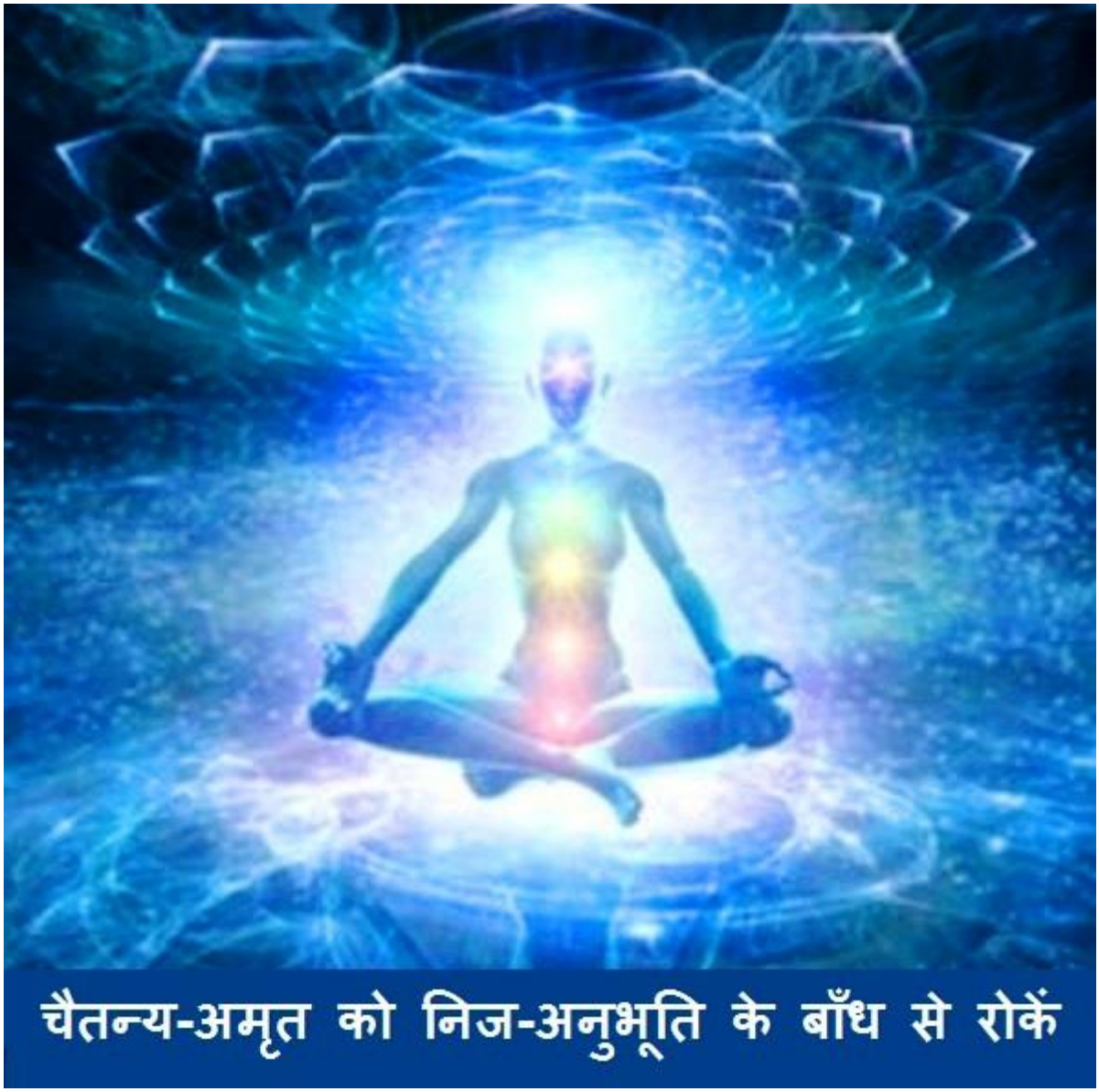

तथा जिस महापुरुष की तृष्णा अल्प है, अथवा नहीं है और जो सतत निज चैतन्य की सिद्धि में प्रयत्नशील रह रहा है
ऐसे सच्चे साधक को ही स्वरूप-स्मृति पूर्ण होना सम्भव है.
हे आत्मदेव, ऐसा आपका अद्भुत अमूल्य चैतन्य-अमृत आपकी खुद की भूल से समय के प्रवाह में बहा जा रहा है.
क्या आप अब आपकी भूलवश व्यर्थ बह रहे इस चैतन्य-अमृत को निज-अनुभूति के बाँध से रोकना नहीं चाहेंगे?

18 कम से कम इस जन्म में
चैतन्य के संस्कार तो प्राप्त कर लें

1. □□ महापुरुष अभी भी अपनी □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□ रह रहा हो,
2. □□□□□□ □□□□□□ □□□ ही रह रहा हो,
3. लेकिन अगर उसे इस □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ है,
4. तो ऐसे प्रत्येक संसारी जीव को अपनी निज-चैतन्य आत्मा के □□□□□□□ प्राप्त हो सकते हैं.
5. हे प्रभो, अगर आप इस संसार से घबड़ाकर
6. अपने संसार के सभी मोह, राग-द्वेष को समेट कर
7. अपने निज चैतन्य-परमात्मा को प्राप्त करने की कोशिश करते हो,
8. तो इस तरह करने से आपने अपने आत्मा के संस्कार प्राप्त कर लिए हैं.
9. ऐसा जीव अब खुद को हर समय मगरमच्छ के मुंह में ही देखता है,

10. वह हर समय इस संसार से डरता ही रहता है.

11. अब वह संसार के किसी भी कार्य में हर्ष या विषाद नहीं करता है.

12. अब उसको बस अपनी आत्मा की प्राप्ति की लग्न लग जाती है.

13. अब इन संस्कारों को और ज्यादा दृढ़ करने की कोशिश में ही वह जुट जाता है.

14. हर समय वह मानता है कि □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□,

15. □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□

16. □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□

17. □□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ हूँ।
18. □□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□ त्रिकाल शुद्ध ही हूँ।
19. □□ हूँ □□ हूँ।
20. □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□
21. □□□□□ □□□□□□□□□ आ□□□ □□□, □□ □□□ □□□,
22. □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□-द्रष्टा हूँ।
23. □□□ □□□□□ □□□ □□□□□ विकल्पों □□ □□□□□□□ □□□□ हूँ।
24. अहो, अब आप भी अपने अन्दर उठ रहे □□□ विकल्पों के □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□-द्रष्टा बन कर
25. □□□□□□ □□□ □□ □□□□ अंतर्ध्यान □□□ □□□ □□ जाई□□□
26. इस तरह करने से आपको खुद □□ इष्ट स्वरुप की,
27. आपके परमात्म-स्वरुप □□,
28. निज चैतन्य स्वरुप की अनंत शीतल शांति आप□□ □□□□□ प्राप्ति □□□□□
29. इस भव में न हुई, तो अगले भव में अवश्य ही प्राप्त होगी.
30. अतः अब कम से कम चैतन्य के संस्कार तो प्राप्त कर लें.
31. ॐ शांति.

19 खुद को देखने की कोशिश करें

1. आपका प्रत्येक कार्य, आपका प्रत्येक परिणमन तो
2. अनंत केवली भगवंत देख ही रहे हैं,
3. वे जो भी देख रहे हैं, वह निश्चित ही कार्य रूप परिणामित होगा.
4. लेकिन आप उसे अभी देख नहीं पा रहे हो,

5. अतः उसकी चिंता करने से क्या आपका कोई कार्य या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है?

6. अगर नहीं हो सकता है, तो फिर आपको क्या कार्य करना शेष रह जाता है?

7. इसलिए अब आपका कर्तव्य तो मात्र अपने

8. त्रैकालिक शुद्ध द्रव्य को ही देखने का शेष बच जाता है.

9. अतः अब सभी तरह के विकल्पों को छोडकर आप खुद को देखने की कोशिश करें.

20 इक साधे, सो सब सधे, सब साधे, सब जाये

हे मेरे चैतन्य रत्नाकर, मेरे परमेश्वर, आपने यह कहावत तो सुनी ही होगी कि -

- इक साधे, सो सब सधे, सब साधे, सब जाये.

अगर आप अपने चैतन्य चमत्कार, विज्ञानघन, निज-परमात्मा को साधते हैं,

तब इसके साथ ही आपकी निम्न लिखित सांसारिक, पारमार्थिक और अलौकिक पर्यायें भी अपने आप ही सध जाती हैं -

1. सुख-सम्रद्धि
2. धन-दौलत
3. उत्तम कुल
4. अच्छा परिवार
5. श्रावक धर्म
6. अणु व्रत

7. महाव्रत
8. मुनिपद
9. उच्चकोटि के देव भव
10. चक्रवर्ती पद
11. छः खंड का राज्य
12. तीर्थंकर पद
13. केवलज्ञानी
14. मोक्ष पद

अब आप ही बताइए कि आप एक निज-परमात्मा को साधना चाहेंगे कि उपरोक्त पर्यायों में से किसी एक या हरेक को अलग-अलग साधना चाहेंगे?
अनादिकाल से आप ऐसी ही भूल कर रहे हैं, इसलिये आज तक कभी भी आपका कल्याण नहीं हुआ;
अब इस भव में तो पुनः ऐसी गलती मत दोहराइये.

21 पञ्च परमेष्ठी की त्रिकाल सच्ची स्तुति

भगवान की दिव्य ॐकार ध्वनि तो पुदगल होती है, अचेतन होती है, जड़ ही होती है,
क्योकि वह तो इन्द्रियों और मन का विषय ही रहती है.
इसी तरह हमारे सभी परम श्रध्येय मुनिराजों के कल्याणकारी उपदेश भी इन्द्रिय जनित ही होते हैं
अहो, इस तरह से सभी वीतरागी पञ्च परमेष्ठी देव आपको ऐसा समझा रहे हैं कि अरे भाई, हम तो तेरी इन्द्रियों का विषय ही होते हैं.

अतः अब हम पर ध्यान देना और हमारी भक्ति-पूजा करना बंद करो.
अब सिर्फ आपके खुद के अतीन्द्रिय चैतन्य प्रभो यानी कि
आप स्वयं ही भगवान आत्मा होने के कारण
अब सिर्फ उस पर ही अपने समस्त उपयोग को केन्द्रित करें,
क्योकि आप स्वयं ही अपनी सम्पूर्ण अतीन्द्रिय चैतन्य सत्ता का विषय हो.

अतः आप अपने निज स्वभाव को अपने अस्तित्व का विषय बनाकर
उसे ही एकमात्र जाणनहार मानकर
सिर्फ उससे ही हर समय प्रीति करें.

वास्तव में यही पञ्च परमेष्ठी की त्रिकाल सच्ची स्तुति होती है.
ॐ शांति.

22 आप तीनो काल और तीनो लोक में विभाव परिणाम से शून्य ही हो

शास्त्रों में आता है कि अनंत केवली भगवन्त तो हर समय आपको समझा रहे हैं कि
प्रत्येक जीव तो तीनो काल और तीनो लोक में विभाव परिणाम से शून्य ही रहता है.

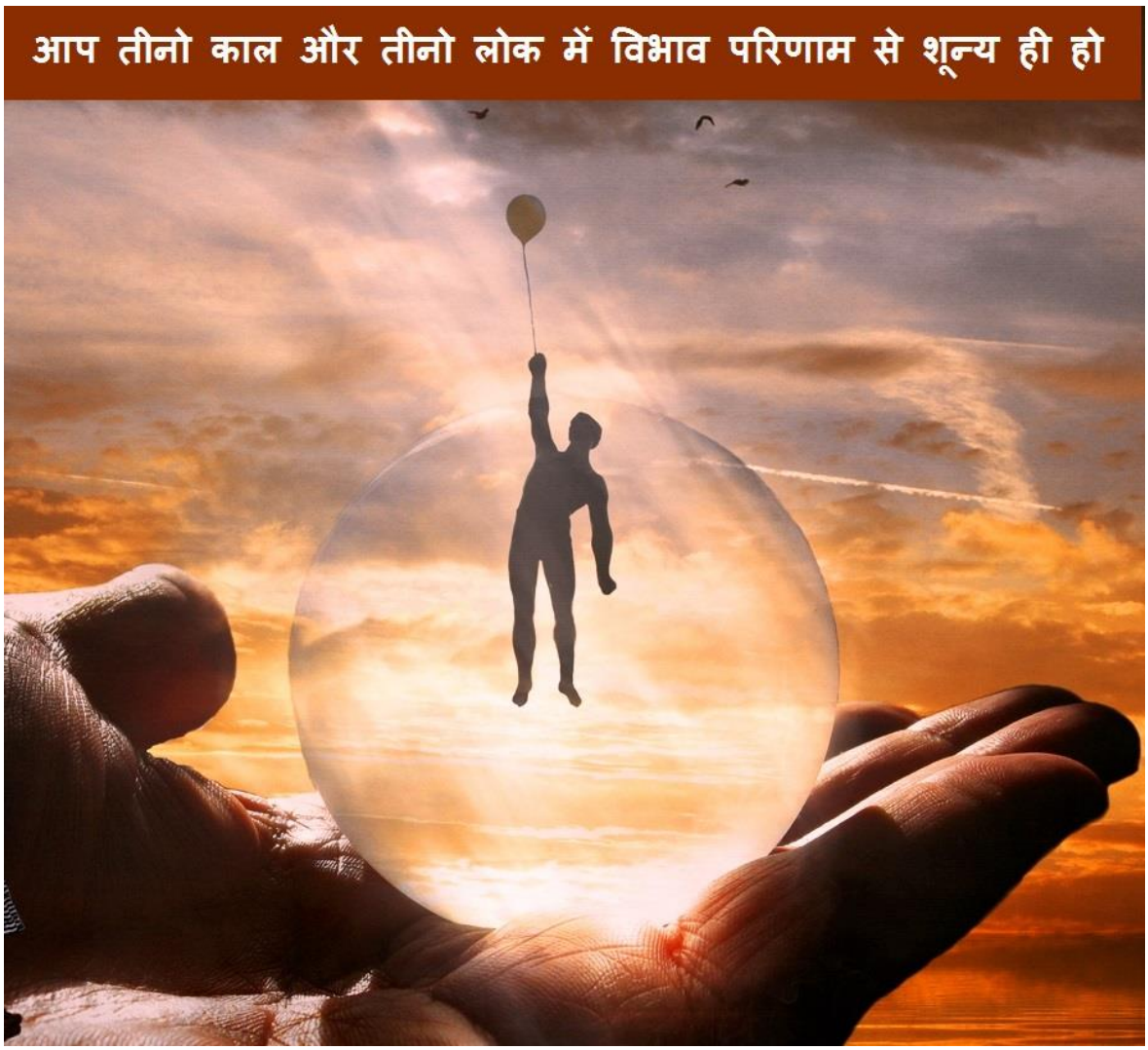

अरे जिस जीव ने अनन्तकाल में त्रसपना भी प्राप्त नही किया है
भविष्य में भी त्रसपने को प्राप्त नही होगा,
ऐसा निगोद का जीव भी विभाव के परिणाम से शून्य रहते हुए निज-स्वभावी ही है।
पर्याय में भले ही जीव की कोई भी प्रकार की अवस्था हो,
परन्तु जीव तो सदाकाल शुद्ध ही है,
वह तो हमेशा ऐसा ही शुद्ध और निर्मल रहता है।
लेकिन फिर भी बड़ा आश्चर्य होता है,
जब इस संसार में कई लोग मानते और समझाते भी हैं कि इस संसार में हो रहे अपने सभी विभाव को छोड़ दो.
लेकिन फिर यहाँ पर प्रश्न उपस्थित होता है कि जब जीव खुद ही विभाव परिणाम से शून्य है,
तो फिर विभाव छोड़ने का कार्य कैसे और किस तरह से संभव हो सकता है?
क्या आप एक पल को इस बात पर विचार करना चाहेंगे?
अगर हाँ, तो अब इस बात को शीघ्र स्वीकार कर अपना कल्याण कर लें.

23 सभी जीव शुद्ध चैतन्य परमात्मा ही हैं

प्रत्येक हीरा तो हमेशा हीरा ही रहता है.
उसके ऊपर चाहे कितनी भी मिट्टी पड़ी हो,
किन्तु उस हीरे के शुद्ध द्रव्य के अंदर कभी भी मिट्टी या अशुद्धि या विकार का प्रवेश नहीं कर सकता है.

इसी तरह तीन लोको में जितने भी जीव विद्यमान हैं,
वे सभी शुद्ध ही हैं अर्थात विभाव परिणाम से शून्य सिर्फ शुद्ध जीव ही हैं।

कोई कहे कि हम सभी जीवों को वर्तमान काल में शुद्ध नहीं मान सकते हैं,
जब भी वे भविष्य में शुद्ध होंगे, तब हम उन्हें शुद्ध मानेंगे.
लेकिन आप जानते ही हैं कि सोने से सोना ही निकलेगा.
तथा किसी भी अन्य धातु से आप कभी भी सोना नहीं पा सकते हैं.
अतः जिन नय में आगमानुसार कभी भी ऐसा न हुआ है और न ही होगा.

इसलिए प्रत्येक जीव तीनो काल में शुद्ध चैतन्य स्वरूप भगवान आत्मा ही रहता है.
इसलिए आप भी त्रिकाल शुद्ध चैतन्य स्वरूप परमात्मा ही हो.
अब आप इस सच्चाई को कब स्वीकार करेंगे?

24 त्रिकाल आनन्द प्रभु बनें

भले ही वर्तमान में पंचम काल हो या छठा काल,
भले ही जीव चाहे किसी भी योनी में रह कर विकारी भावों और कार्यों को करता हो,
किन्तु फिर भी उसके भीतर जो आत्मा है,

वह तो सदाकाल भगवत-स्वरूप शुद्ध चैतन्य धातु ही है.
विनाशीक और क्षणिक पर्याय की द्रष्टि से अविनाशी शुद्ध चैतन्य तत्व को देखना असंभव ही है.
क्योकि शुद्ध निश्चयनय से हर जीव त्रिकाल आनन्द प्रभु रहते हुए शुद्ध ही है.
यही भूतार्थ है, सत्यार्थ है और परमार्थ है.
हे चैतन्य प्रभो, इस सत्य को आप जितनी जल्दी स्वीकार करोगे, उतनी शीघ्र ही आप भी परमात्मा बन जाओगे.
तब तीन लोक की सत्ता सदा के लिये आपके हाथ में होगी.

25 द्रव्य में डूब कर द्रव्य को प्राप्त करें

अहो, क्या आप जानते हैं कि समुद्र बराबर सच्चे द्रव्यार्थिक नय से तो हमारा चैतन्य प्रभो भगवान आत्मा त्रैकालिक वस्तु की अपेक्षा से पर्याय रहित ही है,
तथापि बूँद सरीखे पर्यायार्थिक नय से हम कह सकते हैं कि उसका जो परिणमन हो रहा है, वह किसी भी माला में रह रहे मोतियों के समान क्रमानुसार ही होता है.

द्रव्य में डूब कर द्रव्य को प्राप्त करें

कभी भी किसी भी तरह से कोई भी परिणमन आगे-पीछे नही होता है.

किसी भी व्यक्ति को पर्याय में रहकर पर्याय का निर्णय नही होता है.

अतः प्रत्येक जीव का परिणमन क्रमानुसार ही होता है.

इस बात को जानकार अगर आप सोचते हो कि आपका अब खुद का क्या पुरूषार्थ हो सकता है?

तो सच्चाई यह है कि इस त्रैकालिक शुद्ध चैतन्य वस्तु को पर्याय से रहित मानना ही सबसे बड़ा पुरुषार्थ है.

ऐसा निर्णय तो सिर्फ द्रव्य में डूबने पर ही होता है.
अतः आप भी अब द्रव्य में डूब कर द्रव्य को प्राप्त करें.

26 आप तो त्रिकाल कल्याण मूर्ति शुद्ध परमेश्वर ही हो

हे प्रभो, शरीर, मन और वाणी तो आप में है ही नही,
किसी तरह का राग-द्वेष और मोह भी आप में नहीं है.
इस बात को आप स्वीकार करते हो तो अब आपको गूढ़ आध्यात्म की अंतिम सीढ़ी की बात समझाते हैं.

अगर आप इस संसार के सभी विकल्पों को त्याग कर इसे समझो, तो वह बात इस तरह की है कि –

1. आप में जो शुद्ध पर्याय उदित होती है,
2. आप में जो शुद्ध पर्याय बढ़ती होती है,
3. आप में जो शुद्ध पर्याय प्रगटती होती है,
4. फिर आप में जो पूर्ण शुद्ध पर्याय आपको खुद ही लक्ष्य में लेती है,
5. ऐसी आत्म-ध्यान वाली शुद्ध पर्याय का भी आपके चैतन्य तत्व में होना भी शुद्धनय नही कहता है.
6. अतः ये सभी पर्याय आपमें हैं ही नहीं.
7. आप तो सिर्फ त्रैकालिक चैतन्य तत्व ही हो.
8. आप तो सदाकाल कल्याण मूर्ति शुद्ध परमेश्वर ही हो.

27 सिद्ध परमात्मा बनें

1. अगर किसी अपराधी व्यक्ति को फांसी की सजा हुई हो,
2. फिर जब उसे फाँसी के मंच पर ले जाते हैं,
3. तब वह कैसे घबड़ाने और थरथराने लगता है.
4. इसी प्रकार जो व्यक्ति इस संसार के दु:खो से भयभीत होकर घबड़ाने और थरथराने लगता है,
5. उसको ही आत्म कल्याण की बातें समझ में आती हैं.
6. हमारा द्रव्य तो सदा से शुद्ध ही है.
7. हमारा निज चैतन्य भगवान आत्मा तो सदाकाल परमात्मा ही है,

8. उस परम चैतन्यता का ध्यान करके प्रत्येक मनुष्य सिद्ध भगवान के समान अपनी परमात्मा दशा या परमात्म पद को प्राप्त कर सकता है.

9. ऐसे समस्त परमात्माओं को जानकर, अपने लक्ष में लेकर,

10. अब मैं उनके समान बनने के लिये सभी सिद्ध परमात्माओं को नमस्कार करता हूँ.

28 भव-सागर से तिरने का पुरुषार्थ करें

1. हे चैतन्यदेव, किसी भी नमकीन या खारी जमीन में अगर वर्षा-जल गिरता है, तो वह किसी काम नहीं आता है.

2. वैसे ही जब तक सद्गुरु के उपदेश की बात आत्मा में परिणमित न हो,

3. ऐसी स्थिति में वह देशना भी किस काम की?

4. जब तक उपदेश की बात आत्मा में परिणमित न हो,

5. तब तक उस अमृत वाणी को बारम्बार सुनना, विचारना, उसका पीछा नहीं छोड़ना चाहिए.

6. हे प्रभो, अब आपको निज आत्म-हित में कायर नहीं होना है.

7. अगर आप कायर हो जाओगे, तो आपका आत्मदेव कभी भी ऊपर नहीं आयगा.

8. अतः अब आपको चैतन्यदेव के ज्ञान का अभ्यास जैसे भी हो बढ़ाना चाहिए.

9. उस में लीनता का प्रयत्न करते रहना चाहिए.

10. अब इस संसार की कुटिलता या अहंकार को दूर रखना चाहिए.

11. दृष्टि दोष हट जाने के पश्चात कोई भी शास्त्र, कोई भी वचन, कोई भी स्थल प्रायः अहित का कारण नहीं होता है.

12. बुद्धिबल से निर्णीत किया हुआ सिद्धांत उससे भी ज्यादा बुद्धि या विशेष बुद्धिबल अथवा तर्क से कदाचित बदल सकता है,

13. परन्तु जो वस्तु अनुभव-गम्य हुई है, वह त्रिकाल में भी नहीं बदल सकती है.

14. हम समझ गये हैं,

15. हम शांत हैं.

16. जो लोग ऐसा कहते हैं, वे तो ठगा गये हैं.

17. असाता के उदय में ज्ञान की कसौटी होती है.

18. परिणामों की धारा ही आपके ज्ञान का थर्मामीटर है.

19. जो दृढ़ निश्चय करे कि चाहे जो करूँ,

20. विषपान करूँ.

21. पर्वत से गिरूँ.

22. कुएँ में कूदूँ.

23. परन्तु जिसमें कल्याण हो,

24. वही करूँगा / करुँगी,

25. उस भव्योत्तम व्यक्ति का ज्ञातृत्व ही सच्चा है.
26. वही भव्य जीव इस भव-सागर से तिरने का पुरुषार्थ कर सकता है.
27. क्या आप भी अब इस संसार से तिरना चाहेंगे?

29 चैतन्यदेव को देखने से त्रिलोकवर्ती, त्रिकालवर्ती सब कुछ दिखता है

हे चैतन्यदेव, आप जानते ही हैं कि अँधेरे कमरे में रखी हुई कोई भी वस्तु दिखती नहीं है,
लेकिन जैसे ही किसी भी छोटे से दीपक का प्रकाश चारो ओर फैलता है,
तत्काल ही सभी वस्तुएं दिखाई देने लगती हैं.
अतः वे सभी वस्तुएं होते हुए भी अँधेरे में शून्यवत ही थी,
लेकिन महत्ता तो इस दीपक की है, जिसने उन वस्तुओं को शून्य के अँधेरे से बाहर निकाला.

इसी तरह हे प्रभो, हमे तो हमारे चारों ओर जो भी कुछ दिख रहा है, वह सब तो सिर्फ और सिर्फ हमारे चैतन्यदेव के ज्ञान-दर्शन के प्रकाश में ही दिख रहा है.

अतः समस्त चर-अचर रुपी यह संसार भी शून्य के समान ही है. महिमा तो हमारे चैतन्यदेव की ही है जो उसने इस तीन लोक और उससे भी अनंत गुना विशाल अलोकाकाश को शून्य से निकाला है. अतः हमारे चैतन्यदेव को देखने में ही त्रिलोकवर्ती, त्रिकालवर्ती सब कुछ देखने में आ जाता है.

अब कोई तो हमे बताओ कि हमें सिर्फ हमारे चैतन्यदेव या आत्मदेव के अलावा अन्य कुछ क्यों देखना चाहिए?

30 परम शुद्ध कारण-परमात्म पद में परिणमन करें

1. अहो, जब हमारे परम पूज्य मुनिराज हर समय सिर्फ परब्रम्ह के अनुष्ठान में निरत रहते हैं,
2. वे सभी मुनिराज तो हर समय परमात्मा के आचरण में ही लीन रहते हैं,
3. ऐसे मुनिराज उस अन्तर्जल्प की कभी भी भावना नहीं भाते हैं.
4. तथा विकल्प रूप अन्तरंग उत्थान से भी विमुख ही रहते हैं.
5. फिर इन परम श्रद्धेय मुनिराजों को किसी बहिर्जल्प रूपी आचरण से क्या प्रयोजन हो सकता है?

6. अतः अब आप भी समझ लीजिये कि मुनिराजों को भी जब बहिर्जल्प रूपी आचरण को छोड़कर निज अन्तर्जल्प के तथा विकल्प रूप अन्तरंग उत्थान से भी विमुख होने की सलाह दी जा रही है, तो फिर सामान्य जिज्ञासु व्यक्तियों के लिए तो इस बात को मानना और ज्यादा जरुरी हो जाता है.

7. अतः अब आप भी निश्चिन्त होकर परम शुद्ध कारण-परमात्म पद में परिणमन कर हमेशा के लिए मोक्ष सुख में गमन करें.

31 मुक्ति रमणी से अनंत सुख पायें

1. हे आत्मदेव आप तो आनंद और सुख की खान हो.
2. आप तो सहज-महिमावंत हो.
3. आप तो चैतन्य शक्ति प्रमाण हो.
4. अतः आपके शुद्ध सहज विलसते चैतन्य-चमत्कार तत्व का सतत ध्यान करने से पाप रूपी तिमिर समूह या अन्धकार का सर्वथा नाश हो जाता है.

5. फिर आपकी ॐकार वाणी से आगे भी भव्य-जीवों का भी भव-भय का नाश हो जाता है.

6. इसलिए जो महापुरुष इस संसार के समस्त वाणी समूह के जाल को काटकर मुक्तिप्रभा को अतिशय रूप से प्राप्त करते हैं,

7. वे अनंत काल तक इस मुक्ति रमणी से अनंत सुख प्राप्त करते हैं.

8. अहो, समस्त भव्य-जीवों को सिर्फ और सिर्फ शुद्ध सहज विलसते चैतन्य-चमत्कार का ध्यान करने की देशना दी जा रही है, तो फिर आप के लिए तो इस बात को मानना अपने आप ही और भी ज्यादा जरुरी हो जाता है.

9. क्या आप भी अब मुक्ति रमणी से अनंत सुख प्राप्त करना चाहेंगे?

32 चैतन्य-पथ का अनुसरण करें

1. जो योगी-तिलक (मुनियों में शिरोमणि)

2. पाप रूपी अटवी को जलाने में अग्नि के समान,

3. समस्त प्रकार के प्रशस्त-अप्रशस्त मन और वाणी के राग आदि समुदायों को छोड़कर

4. आत्म-निष्ठा में परायण रहता हुआ,

5. शुद्ध और अशुद्धनय से रहित होता है,

6. वह योगिराज ही अनघ या निर्दोष और विमल चैतन्यमात्र चिंतामणि को प्राप्त करके,

7. अनंतचतुष्टयात्मकपने के साथ सर्वदा स्थित रहने वाली जीवन-मुक्ति को प्राप्त करता है.

8. अतः समस्त मुनिराज, शिरोमणि संत तो शुद्ध और अशुद्धनय को छोड़कर विमल चैतन्यमात्र चिंतामणि आत्म-निष्ठा से ही अनंतचतुष्टयात्मकपने को पा लेते हैं,

9. इस तरह से आप जानते ही हैं कि आत्म धर्म में मुक्ति का रास्ता सबके लिए एक ही रहता है,

10. इसलिए सभी मुनिजन, श्रावक, ज्ञानीजन और सामान्य जिज्ञासु को भी शुद्ध और अशुद्धनय को त्याग कर इसी एक मात्र चैतन्य-पथ का अनुसरण करना योग्य है.

33 निज-आत्मदेव में स्थिर रह कायोत्सर्ग करें

1. कायक्रियाओं को तथा भव के कारणभूत विकारी भाव को छोड़कर अव्यग्र रूप से निज-आत्मा में स्थिर रहना ही कायोत्सर्ग कहलाता है.
2. मेरा स्वरुप तो अपरिस्पन्दात्मक है, तथा यह शरीर तो व्यवहार से परिस्पन्दात्मक है,
3. इसलिए मैं शरीर की सभी विकृति और कार्यों को छोड़ता हूँ.
4. काय या शरीर और विकार या पाप-पुण्य की सभी प्रकार की अशुद्धि को छोड़ कर जो भव्यात्मा शुद्धात्मा की सम्यक प्रकार से भावना करता है;

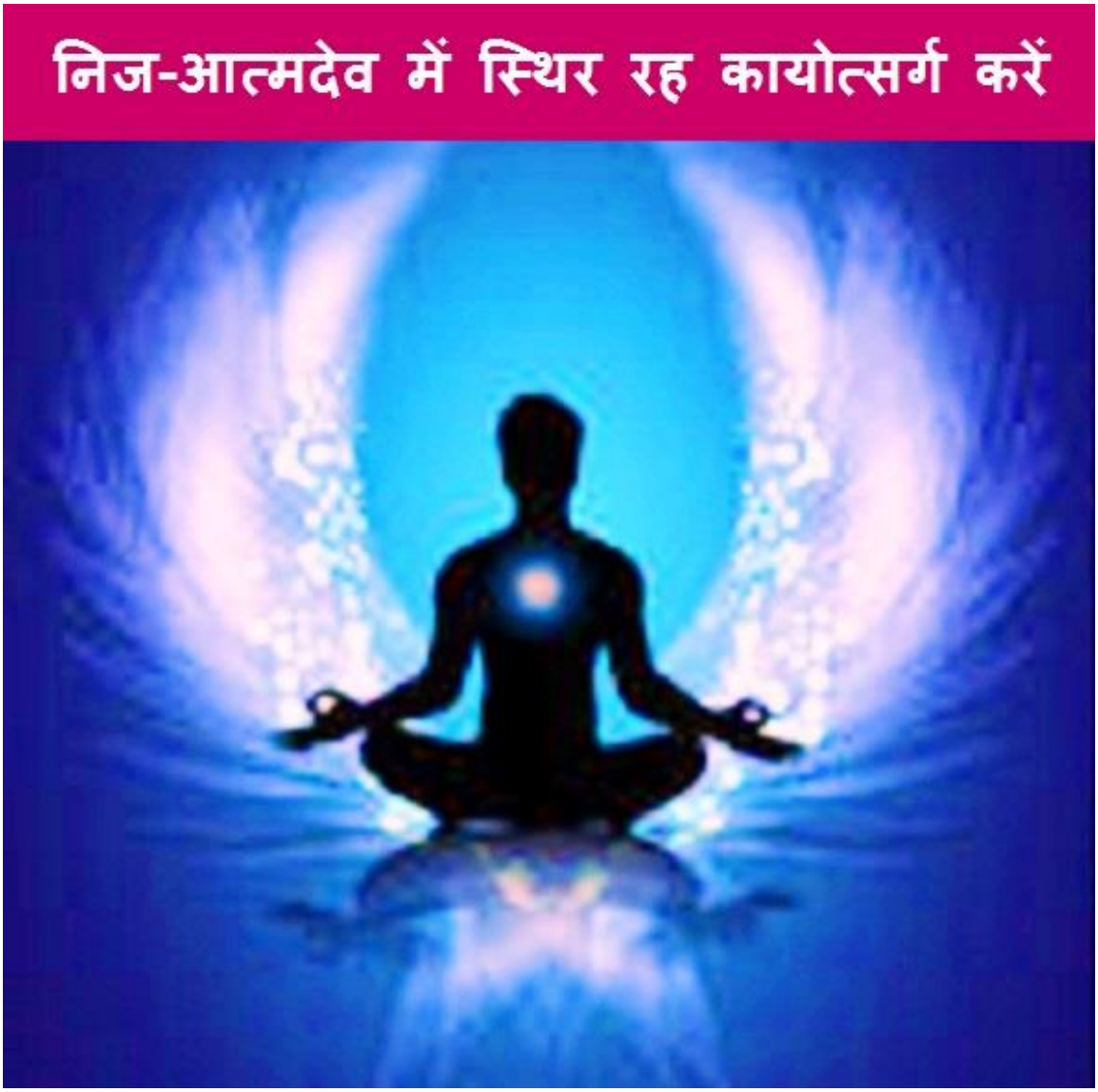

5. उसी का जन्म इस संसार में धन्यावतार कहा जाता है.

6. अतः मैं अपरिस्पन्दात्मक यानी कि शांत और निष्क्रिय स्वभाववाला इस गतिमान परिस्पन्दात्मक शरीर पर द्रष्टि रखना छोड़ता हूँ.

7. समस्त भव्य-जीवों के लिए और मुनिराजों को भी जब निज-आत्मा में स्थिर रहने की सलाह दी जा रही है, तो फिर सामान्य जीवों के लिए तो इस बात को मानना अपने आप ही और भी ज्यादा जरुरी हो जाता है.

8. अतः आप भी निज-आत्मदेव में स्थिर रह कायोत्सर्ग कर मोक्ष में गमन करें.

34 अनंत सुखदायक मुक्ति-सुंदरी के श्रीवल्लभ बनें

1. परम औदारिक जिनका शरीर है,
2. प्रफुल्लित कमल जैसे जिनके नेत्र हैं,
3. पुण्य का निवास-स्थान यानी कि तीर्थंकर पद जिनका गोत्र है,
4. पंडित रुपी कमलों को विकसित करने के लिए जो सूर्य है,
5. मुनिराज रूपी वन को खिलाने के लिए जो चैत्र मास की वसंत ऋतु है,

6. कर्मों की समस्त सेना के जो शत्रु हैं,
7. सभी जीवों के लिए हित-रूप जिनका चारित्र है.
8. अनंत सुखदायक मुक्ति-सुंदरी के जो वल्लभ हैं.
9. वे समस्त तीर्थंकर भगवंत जयवंत हों.
10. क्या आप भी अब अनंत सुखदायक मुक्ति-सुंदरी के श्रीवल्लभ बनना चाहेंगे?

35 समस्त प्राणियों के आराध्य अरिहंतदेव बनें

1. जो पुण्य रूपी कमल को विकसित करने के लिए चैतन्य-सूर्य हैं,
2. जो सर्व गुणों के समाज या पुंज या समुदाय हैं,
3. जो आपकी कल्पना में आने वाली हर इच्छित वस्तु को देने वाले कल्पवृक्ष हैं,

4. जो कामदेव रूपी हाथी को मारने के लिए सिंह के समान हैं,

5. जिन्होंने संसार रूपी वृक्ष का त्याग किया है,

6. जिन्होंने दुष्ट कर्मों के बीज को नष्ट किया है,

7. जिनके चरणों में आकर इंद्र, सुरेन्द्र, नरेंद्र आदि सभी देव नमन करते हैं,

8. वे अरिहंतदेव सदा जयवन्त हों.

9. क्या आप भी अब समस्त प्राणियों के आराध्य अरिहंतदेव बनना चाहेंगे?

36 निर्वाण के कारण के कारण को मानें

1. हे आत्मदेव, आप तो सकल इन्द्रिय समूह के आलंबन से रहित हो,
2. आप तो अनाकुल हो,
3. आप तो स्वहित में लीन हो,
4. आप तो सकल शुद्ध हो,
5. आप तो निर्वाण के कारण का कारण हो,

6. आप तो मुक्ति के कारणभूत हो,

7. शुक्लध्यान का कारण हो,

8. आप तो शम-दम-यम यानी कि शांति, इन्द्रिय-निरोध और संयम का निवास स्थान हो,

9. मैत्री, दया और दम का मंदिर हो,

10. ऐसा यह चैतन्य परिणमन हमें वन्द्य है.

11. इस तरह से वे सभी सिद्ध भगवंतों हमेशा नित्य-शुद्ध निज चैतन्य-स्वरूप में ही लीन रहते हैं.

12. अतः हे भव्योत्म, आपको भी अब हर समय सिर्फ निर्वाण के कारण के कारण को मानना चाहिए.

37 निज चैतन्य परमात्मा के अलावा अन्य कुछ भी सारभूत नहीं है

1. अनादिकाल से आजतक के अनंत काल में जितने भी महापुरुष सिद्ध हुए हैं तथा आगे भी होंगे,

2. वे सभी एक मात्र भेद-विज्ञान से ही सिद्ध बने हैं

3. तथा जो भी प्राणी अभी भी आपको इस संसार में बंधे दिख रहे हैं,

4. वे सब उस भेद-विज्ञान को नहीं समझने के कारण ही बंधे हुए हैं.

5. अतः अब आप भी बहुत अधिक सुनने, समझने, पढ़ने आदि के बहुत से दुर्विकल्पों से अब दूर हो जाओ, दूर हो जाओ.

6. तथा इस परम चैतन्य का, इस एक निज परम ब्रह्म का ही निरंतर अनुभवन करो.

7. क्योंकि निज-रस के विस्तार से पूर्ण ज्ञान के स्फुरायमान होने मात्र से ही आपका निज-परमात्मा सदाकाल चैतन्यमान रहता है,

8. वास्तव में तीन काल, तीन लोक में इससे ऊँचा अन्य कुछ भी नहीं है.

9. अतः निज चैतन्य परमात्मा के अतिरिक्त अन्य कुछ भी सारभूत मत मानो.

38 अपने भले की □□□□□ बनाइए

1. हे चैतन्य प्रभो, इस मनुष्य □□ □□□□□काल से आजतक □□□□□ भी □□□□□□ भव □□□□ □□□□ □□□

2. उन□□ एक-एक भव औसतन □□□□□ □□□ भव □□□□ □□□□ □□ □□□ ही □□□□□ □□,

3. क्योंकि तिर्यंच योनी से स्वर्ग पर्याय जाने और वापस तिर्यंच बनने का यूनिवर्सल हाईवे है. इस बात से यह सिद्ध होता है कि यह □□□□□□ भव □□□□□□□-□□□□□□□ □□□□□□ □□□

4. उच्च □□□□ □□ जो अत्यधिक □□□□□ आपने □□□□□ भव □□□ □□□□ □□,

5. उसके कारण आपको यह □□□□□□ जन्म, उच्च कुल, आत्मदेव □□ □□□ □□□□ है,

6. □□ कि □□□□□□□ □□ □□□□ □□ दुर्लभ □□□

7. अब इस □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ इस भव □□□ आप □□□□ □□□□□□□ कर □□□ हैं,

8. अब एक पल इस बात पर भी आपको □□□□□ करना चाहिये।

9. □□□ □□ कि आप □□ □□□ एक □□□त □□□□□ □□□□ □□ और □□□ □□□□ आप □□□□ □□□ □□□□□□ कर □□□ □□□

10. आप □□ □□□□□□□□□ □□ वह □□□□ □□□□□□ □□□ □□चोंबीच □□□ □□□□ □□□

11. तब यह □□□□ □□ □□□□ आप वह □□□□ □□□□ प्राप्त कर □□□□ □□?

12. □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ उस □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□?

13. आप □□□□□ □□ □□□□□ कर □□ □□□□□□ उस □□□□ □□ □□□□ प्राप्त □□□□ □□□□□ □□ होता □□□

14. □□ प्रभो, इस □□□□□□ भव □□ □□□□ □□□□□□ प्राप्त □□□□ □□ इस □□□□ □□ प्राप्ति □□ □□ □□□□ गुणा दुर्लभ □□□

15. □□□ इस □□□□□□ भव □□□ आप □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□,

16. □□ यह □□ दुर्लभ □□ □□ दुर्लभ □□□

17. □□□ □□ □□□□ □□□ आप □□ □□□□□ भव □□□ □□□□ □□□ □□□□

18. □□ आप □□ इस □□□□□□□ □□ □□□□□□ भव □□ उच्च पद तक □□ □□□ □□□□

19. अब □□□□ □□□ आप □□ एक □□□□□ कर्तव्य □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□,

20. □□□ प्राप्त □□□□ ही है।

21. इस □□□□□ □□ □□□□-□□-□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ आप □□□□□ □□□□□ □□, प्ला□□□□ □□□□ □□□

22. तब □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□, परमात्मा □□ □□□□ आप □□ □□□□ प्लानिंग □□?

23. □□□□□ भव □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ कर कब तक □□□□□□?

24. □□□ एक पल इस □□□ □□ भी □□□□□ □□ करें।

अष्टावक्र गीता प्रकरण 9 के सूत्र 6,7 में भी समझाया है कि –

1. जो भव्यात्मा अपने शरीर की उपेक्षा करके
2. सभी लोगों से समता भाव रखते हुए
3. ज्ञान रूपी तलवार द्वारा इस संसार के मोह-पाश को युक्ति पूर्वक काट कर
4. चैतन्य चमत्कारी परम आत्मदेव के सच्चे स्वरूप जानकर
5. इस क्षणिक संसार में अपने को तारता है;

6. वह महापुरुष ही दूसरे अनंत प्राणियों को तिरने का माध्यम बनता है.

7. ऐसे भव्योत्तम महात्मा को ही इस संसार में सच्चा गुरु मानना योग्य है.

8. ऐसे सद्गुरु के आश्रय से आप जब भूत (काल्पनिक) देह, इन्द्रिय और मन के विकारों को यथार्थतः भूत या काल्पनिक ही देखेंगे; उसी क्षण आप बंधन से मुक्त होकर अपने चैतन्य स्वरूप में स्थित हो जायेंगे.

अगर आप यह मानते हैं कि आत्मदेव की महिमा अद्भुत है, अपार है, अकल्पनीय है, अद्भुत है और आध्यात्म की चर्चा ही सर्वोत्कृष्ट श्रेणी की चर्चा होती है,

तो फिर इस अति गंभीर तथा उच्च कोटि की तत्व-चर्चा, आत्मचर्चा का आनन्द पाने के लिये आप सभी चैतन्यदेव के रुचिवंत भव्यात्माओं का स्वागत है.

39 □□□□□□□□□□□ के □□□□-□□□□□ □□□□□□ से त्रिलोकपति बने

1. हे चैतन्य प्रभाकर, □□□ □□ □□□□□□ □□□□ आप □□□□ खुद के □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ अन्य द्रव्यों या पदार्थों □□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□,

2. □□□□□□ आपको □□□□□काल □□ □□□□□□□□ तक इस □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□

3. लेकिन अगर आप चाहो तो □□□□□□□□□□□ के अपने □□□□-□□□□□ □□□□□□ का प्रयोग कर

4. तीन लोक के सम्राट या राष्ट्रपति केवली-भगवंत को अपनी इस संसार की □□□□□ □□द से मुक्ति की अपील कर सकते हो.

5. देखो, केवली भगवंत को आप पर अत्यंत दया आ रही है और उन्होंने आप पर अत्यंत करुणा कर आपको गोद लेना और दत्तक पुत्र बनाना स्वीकार किया है.

6. अब आप उनके बताये मार्ग पर चल कर सम्पूर्ण ब्रम्हांड के युवराज बन जाओ.

7. फिर शीघ्र ही अपने राजत्वपने को धारण कर सदाकाल के लिये त्रिलोक के स्वामी बन जाओ.

8. इसके लिये आपको अब आगे से अपने सभी सान्सारिक कार्यों जैसे कि □□□□-□□□□, □□□□□, भोग-उपभोग □□□ को करते हुए भी

9. इन सांसारिक कर्मों में रूचि न रखते हुए इनसे □□□□ तरह विरक्त होकर अपना ध्यान अपने खुद के चैतन्य स्वरुप में तथा लोक-कल्याण में लगाना पड़ेगा.

10. अतः हे प्रभो, क्या अब आप स्वतंत्र होकर त्रिलोकपति बनने के लिए तैयार हैं?

40 एक सार्थक कोशिश करें

1. गरीब लोगों की तकलीफों, मुसीबतों और बेबसी को अगर आप समझना चाहते हैं,

2. तो आपको एक पूरा दिन झोपड़-पट्टी में रहने वाले और कचरा बीनने वाले किसी बच्चे के साथ गुजरना चाहिए.

3. तभी आपको पता चलेगा कि जहाँ हम एक मिनिट भी नहीं रुक सकते हैं,

4. वहां वे आठ से बारह घंटे बैठ कर हमारी फेकी हुई वस्तुओं के सड़े-गले ढेर में से अपनी खाने योग्य, काम की, और बिकने योग्य वस्तुएं निकलते हैं.

5. क्या वे इंसान नहीं हैं?

6. क्या इस देश में उनका कोई अधिकार नहीं है?

7. हमारे गरीब लोगों को किसी अमीर से कुछ नहीं चाहिये,

8. वे तो मात्र अपने सम्मान से जीने का अधिकार चाहते हैं.

9. हमारे देश की कुल सम्पदा का 99% हमारे ही देश के 1% लोगो के पास जमा है,

10. जबकि हमारे ही देश की 99% आबादी के पास देश की कुल जमा सम्पदा का मात्र 1% ही है.

11. हमारे देश के सभी नागरिकों को हमारे संविधान द्वारा समान अधिकार दिए गए हैं.

12. फिर भी हमारे देश के गरीब नागरिक हमारे अमीरों से कुछ नहीं चाहते हैं,

13. वे चाहते हैं तो सिर्फ रोटी, मकान, कपड़ा, शिक्षा और गंभीर बीमारी से उपचार की उचित व्यवस्था को,

14. जो समान अधिकार के अंतर्गत हमारे संविधान की मूलभूत जवाबदारी है.

15. एक अध्ययन के अनुसार हमारे देश के बजट के लोक-कल्याण का 90% हिस्सा हमारे देश के बहुत थोड़े से अमीर लोग हड़प जाते हैं

16. क्योकि कई महत्वपूर्ण सरकारी योजनाओं के बहुत बड़े हिस्से को ये अमीर लोग मेनेज कर लेते हैं.

17. इसीलिये गरीबों को उनका हक़ उनके ही बैंक अकाउंट में देने के लिए आधार कार्ड योजना लायी गयी है,

18. जिसका लाभ उन्हें मिले, ऐसी कोशिश करनी चाहिए.

19. बिल गेट, बफेट तथा फेसबुक के *सीईओ* मार्क जकरबर्ग सरीखे विदेशी ख़रबपतियों ने अपनी पूरी सम्पदा गरीबों की भलाई के लिए दान कर दी है,

20. जबकि उनके यहाँ पर पुनर्जन्म की कल्पना भी नहीं है.

21. उन्हें पता भी नहीं है कि आगे आने वाले जन्मों में उन्हें इसका अकूत लाभ मिलने वाला है.

22. फिर भी वे निःस्वार्थ भाव से लोक कल्याण का यह अनुपम कार्य कर रहे हैं.

23. क्या हमारे देश के अमीर लोग भी अपने आने वाले जन्मों के सुखद भविष्य के लिये की जाने वाली

24. जीवन-बीमा के प्रीमियम के रूप में अपनी जमा पूंजी का मात्र 1% हिस्सा देकर 99% लोगो की मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए एक सार्थक कोशिश करेंगे?

41 निश्चय-प्रतिक्रमण के कारण के कारण को समझें

1. अहो, आपका निज-कारण परमात्मा तो अखंड परम तपश्चरण का कारणभूत है.

2. सहज वैराग्य सुधासागर में ज्वार लाने के लिए पूर्णिमा के चन्द्र के समान प्रेरणादायक है.

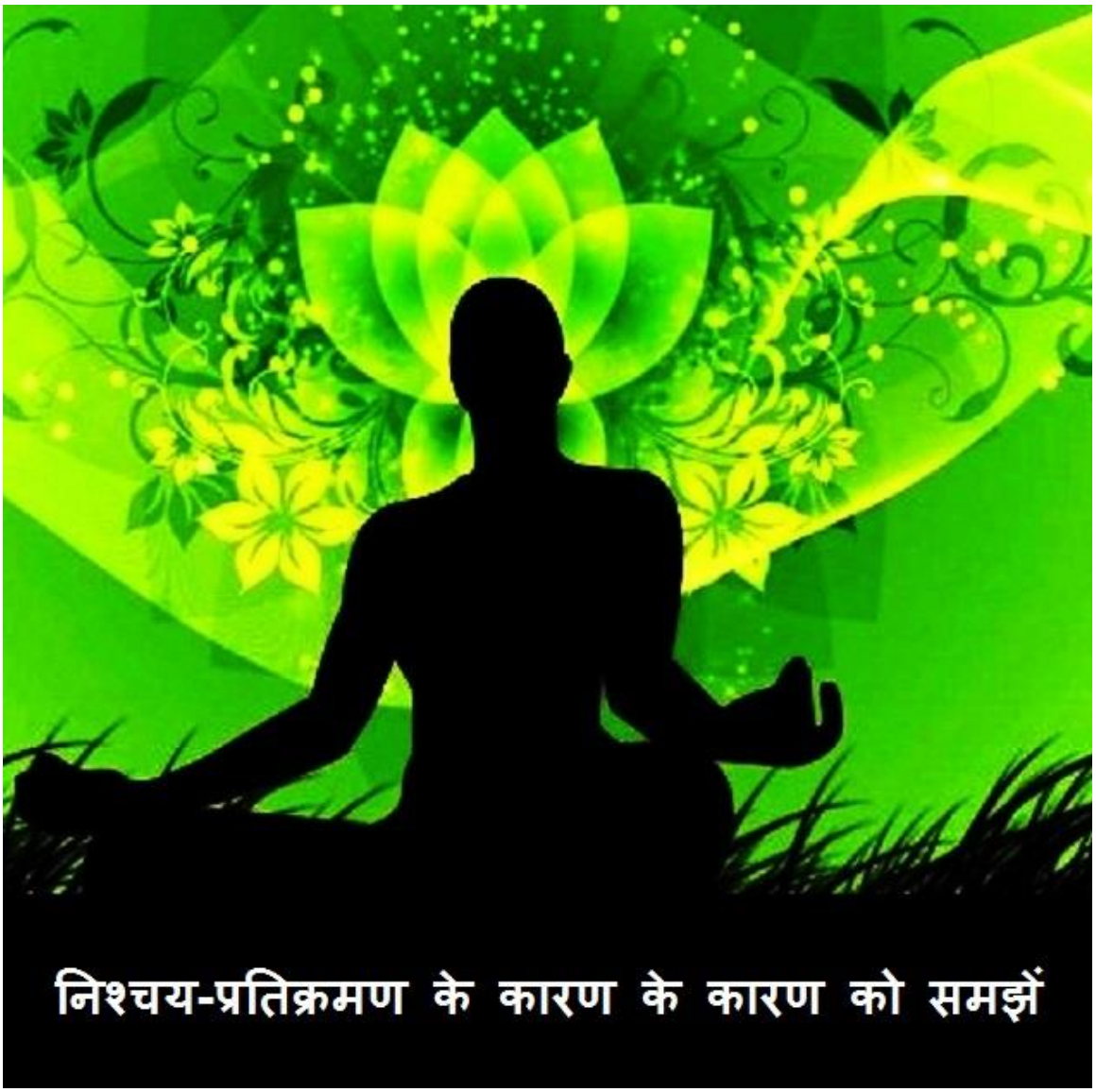

3. अप्रशस्त वचनरचना से सर्व ओर से मुक्त है.

4. प्रतिक्रमण सूत्र की विषम, विविध वचनरचना को भी त्याज्य है.

5. जिसने संसारलता के मूल-कंदभूत समस्त मोह-राग-द्वेष भावों का निवारण कर लिया है.

6. इसलिए जब कोई विरला महापुरुष जब अखंड निज-कारण परमात्मा को ध्याता है,

7. तब वही आत्मदेव वास्तव में परम-तत्व के श्रद्धा-ज्ञान और अनुष्ठान के सन्मुख आ जाता है,

8. तथा उसे ही वचनसम्बन्धी सर्व व्यापार रहित निश्चय-प्रतिक्रमण होता है.

9. अतः सभी जिज्ञासु जीवों को हर समय सिर्फ निश्चय-प्रतिक्रमण के कारण के कारण यानी कि निज-कारण परमात्मा को समझाना चाहिए,

10. ताकि आप भी सभी सिद्ध भगवंतों के समान हमेशा ही नित्य-शुद्ध निज-कारण परमात्मा में रह सकें.

42 प्रतिक्रमण-स्वरूप पुराण-पुरुष बनें

1. जो परमतत्वज्ञानी महापुरुष निरंतर आत्म-सम्मुख रहते हुए निश्छल हो जाता है.

2. तथा अटूट धारावाही परिणाम-संतति द्वारा हर समय साक्षात निर्मल-स्वभाव स्थिति में वर्तता है,

3. इस तरह से सिर्फ खुद के चैतन्य प्रभो की आराधना में लीन रहता है,

4. वह चैतन्य प्रभाकर ही निरपराध कहलाता है.

5. लेकिन जो प्राणी आत्मा के आराधन से रहित है,

6. वे सभी प्राणी सापराध है.

7. लेकिन जिस जीव के परिणाम राध रहित हैं, वह विराधन ही है.

8. अतः विराधन रहित या निरपराध जीव ही निश्चयप्रतिक्रमणमय है.

9. इसलिए ऐसे जीव को ही प्रतिक्रमण-स्वरूप पुराण पुरुष कहा जाता है.

10. इसलिए हे प्रभो, अब आप भी निरवशेष रूप से विराधन के अपराध को छोड़ कर प्रतिक्रमण-स्वरूप पुराण-पुरुष बनें.

43 निश्चय-व्यवहार का सुंदर संगम करें

कोई व्यक्ति कहे कि मुझे परमात्मा के घर में प्रवेश करना है
लेकिन फिर थोड़ी देर बाद वही व्यक्ति फिर से कहे कि
मैं तो पामर हूँ,
मैं तो पामर हूँ,
मैं तो पामर हूँ;

तो इन दो बातो में विरोधाभास नजर आता है।

लेकिन जो भी भव्योत्म महापुरुष पहली ही बार में यह कहे कि -
मैं त्रिकाल सिद्ध परमात्मा हूँ,
मैं त्रिकाल चैतन्य प्रभो हूँ,
मैं त्रिकाल पुराण पुरुष हूँ;
ऐसे सच्चे जिज्ञासु व्यक्ति को ही मुमुक्षु कहते हैं और वही परमात्मा के घर में प्रवेश की पात्रता रखता है.
अतः हे भव्यात्मा, निश्चय से तो आपको हरसमय अपनी निर्मल आत्मा के ऊपर ही द्रष्टि रखना चाहिये
तथा व्यवहार से इस शरीर को धारण करने के कारण हर समय हो रही हिंसा को कम करने की कोशिश करनी चाहिये.
यही सच्ची आत्म चर्या या जैनचर्या है.
यही निश्चय-व्यवहार का सुंदर संगम है,
इसलिये निश्चय-व्यवहार का यह सुंदर संगम अवश्य ही आपका कल्याण करायेगा ही करायेगा.

44 चैतन्य सम्राट के परमाणु का स्ट्रक्चर

विज्ञान के अनुसार हम □□□□□ □□□ □□
इस □□□□□ □□□ □□□□ तरह □□ □□□□□□ होते □□□
□□□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ शक्ति □□□ □□□□□
□□□□
□□□□□□□ (ओ2) और □□□□□□□□□□ (एच 2) □□ □□□□□□
होते □□□□
इनमे □□□□□□□ (ओ2) □□□□ □□□ □□□□□ □□
तथा □□□□□□□□□□ (एच 2) □□□□□ □□□□□शील □□□

साथ ही □□□□□□□□ (ओ2) और □□□□□□□□□□ (एच 2) □□ □□□□□□□ओं के मिलन से □□□□ बनता है.

लेकिन यह पानी तो □□□□□□□□ (ओ2) और □□□□□□□□□□ (एच 2) □□ गुणों के विपरीत

अग्नि □□ □□□□ता □□ □□□□ □□ अग्नि □□ □□□ कर ता □□□ □□□□ मतलब यह □□ □□ आपको दिख रहे □□□□ में □□□□□□□□ (ओ2) और □□□□□□□□□□ (एच 2) □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□

इस तरह हम जानते हैं कि आक्सीजन एवं हायड्रोजन सरीखे अचेतन तत्वों के निम्न गुण होते है -

1. वे सदाकाल रहते है
2. न तो उनका निर्माण किया जा सकता है
3. न ही उन्हे नष्ट किया जा सकता है
4. इन सभी परमाणुओं मे अपार शक्ति समायी हुई है।
5. इन तत्वों में समाई हुई परमाणु उर्जा का उपयोग लोगों की भलाई में किया जा सकता है.
6. इसी तरह प्राकृतिक न्याय से ऐसे ही गुण हमारे चेतन तत्व यानी कि हमारे खुद के भी होते हैं.

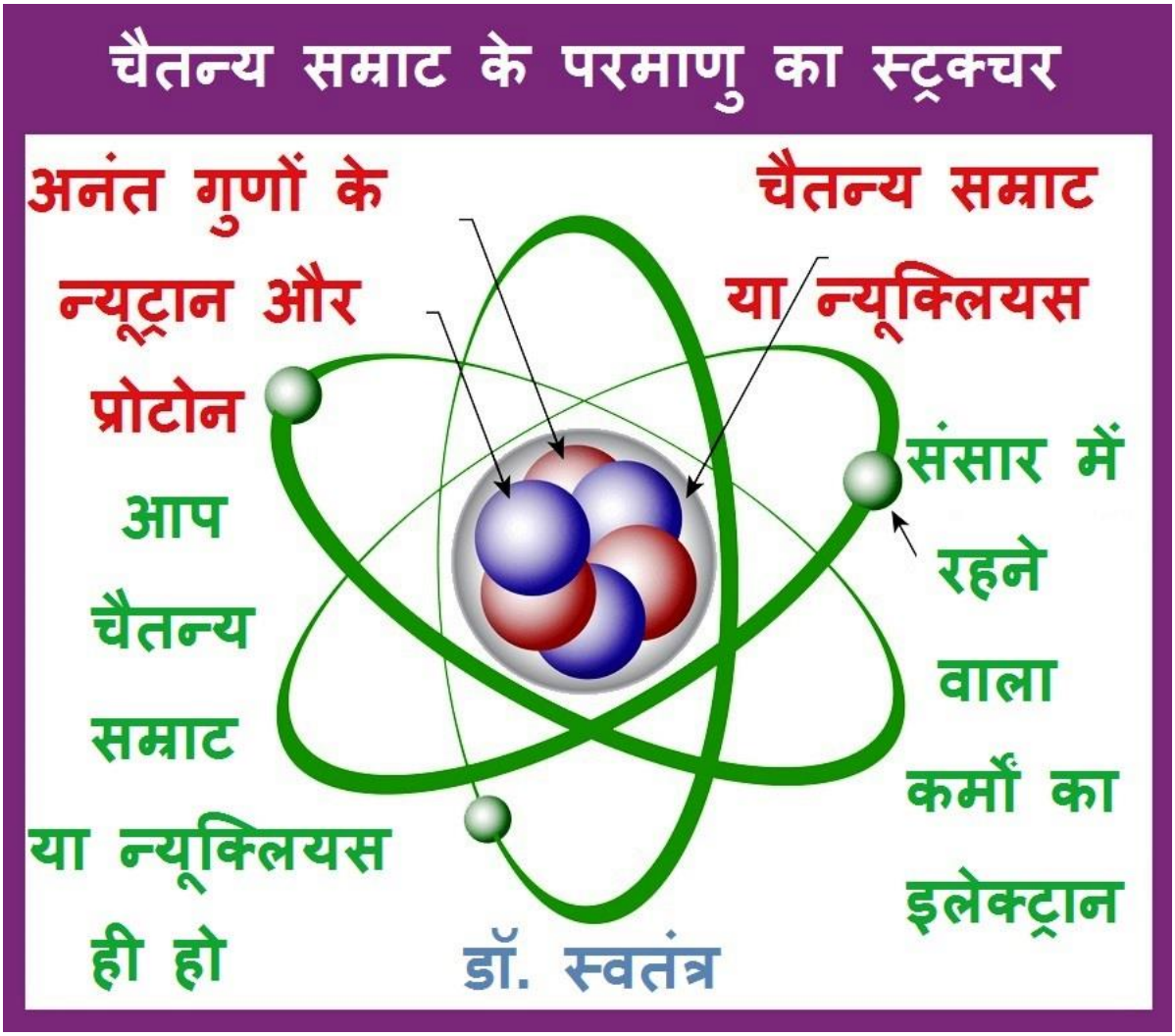

7. चित्र में दिखाए अनुसार न्यूक्लियस ही मेरा चैतन्य सम्राट है.

8. मेरे अनंत गुण ही न्यूट्रान तथा प्रोट्रान के रूप में चित्र में दर्शाए गये हैं.

9. साथ ही कर्म रुपी सभी इलेक्ट्रान मेरे चैतन्य सम्राट यानी कि न्यूक्लियस से अलग ही हैं.

10. सभी भौतिक तत्वों के समान हम भी सदाकाल रहने वाले हैं.

11. किसी भी परमाणु की तरह ही

12. न तो हम को बनाया जा सकता है

13. न ही हम कभी भी नष्ट हो सकते हैं.

14. साथ ही हम में परमाणु से भी अनन्त गुना ज्यादा शक्ति और उर्जा समाई हुई है. \

15. इस तरह से यह स्थापित हुआ कि इस □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□ ही तरह □□ □□□□ □□□□ हैं

16. □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□

17. □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□

18. □□□□ □□□□ और □□□□□ तत्व □□ □□□न □□ यह □□□□ □□□

19. जब यह □□□□ □□□□ □□ □□ पुनः □□□□□ यह □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ तरह □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□

20. □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ और □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□

21. □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ कर एक □□□ □□□□ □□□□□ □□

22. इस नये शरीर में □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ गयी □□□□□□ □□ □□□□□□ ही हमें मिलने वाले

23. हमारे □□□ शरीर □□□ हमें □□□, □□□, □□□□□, □□□□□, □□□□□□ □□□ की प्राप्ति □□□□ □□□□

24. इस तरह यह □□□□ और मरण □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□,

25. □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□

26. अतः हमारा और पूरी मानव जाति का कल्याण तभी हो सकता है

27. जब हम यह मान लें कि

28. हम स्वयं चैतन्य सम्राट हैं

29. इस बात को स्वीकार करने से अभी जो हमारी द्रष्टि अचेतन पर केन्द्रित है,

30. वह फिर हमारे चेतन तत्व पर जम जायेगी.

31. फिर हम भी सदाकाल के लिए इस लोक के ऊपर सुख पूर्वक निवास करेंगे.

32. इस बात को समझकर हम भी अपनी अनन्त उर्जा को मानवमात्र के कल्याण में लगायेंगे

33. तभी हम सच्चे अर्थो में महा मानव, चैतन्य चमत्कार निज-परमात्मा कहलायेंगे।

34. ॐ शांति.

45 तीन लोक के सम्राट ही हैं आप

आप सभी ने तीन लोक का मानवाकार नक्शा तो देखा ही होगा. अहो, आपके चैतन्यदेव का त्रिलोकवर्ती स्वरुप भी चित्र में बताये अनुसार मानवाकार ही है.

आप जानते ही हैं कि आपके एक ज्ञान गुण की एक पर्याय में ही तीन लोक के समस्त पदार्थ यानी कि सभी अनंतानंत छह द्रव्य विचरण कर रहे हैं.

जब आपके एक ज्ञान गुण की सिर्फ एक केवलज्ञान की पर्याय की इतनी ज्यादा शक्ति है,
तो फिर आपके ज्ञान गुण की कितनी ताकत होगी?
तथा जब आपके एक गुण की शक्ति ही कल्पना से बाहर है,
तो फिर आपके अनंत गुणों की शक्ति कितनी ज्यादा होगी?
अहो, जिस आप सरीखे चैतन्य सम्राट में ऐसे अद्भुत, अलौकिक, अनुपम अनंत गुण विराजमान हैं,
उस अद्भुत चैतन्य तत्व के सामने तो ऐसे अनंत तीन लोक आ जाए,

तो वो भी फीके तथा श्रीहीन ही लगते हैं.
इस अनंतानंत त्रिलोक के स्वामी के समक्ष किसी भी कर्म-पुंज की कल्पना करना भी हमे काल्पनिक और निरर्थक सा ही लगता है.
बस ऐसा जानने, मानने और स्वीकार करने से आपके लिए किसी भी विकल्प की कल्पना ही मुश्किल हो जाती है.
आप बुद्धिमान हैं, अतः आपको अपनी बुद्धि का प्रयोग किसी सच्चे आत्मज्ञानी को खोजने में करना चाहिए,
अगर वह आत्मज्ञानी या भव-समुद्र से पार ले जाने वाला मल्लाह आपको मिल जाए,
तो फिर अपनी मन की स्लेट साफ़ करके आप उसके बताये मार्ग का अनुसरण करें.
इससे निश्चित ही आपका यह भव-समुद्र पार हो जाएगा.
ॐ शांति.

46 शास्त्रों को मस्तिष्क में मत भरो

1. अभी तक पूर्व में हुए जिन आचार्यों और आत्म-ज्ञानियों के रचित सभी तरह के शास्त्रों के ज्ञान को आप सब ने अनंत बार जाना हैं,
2. उस ज्ञान से अनंत गुना ज्यादा ज्ञान तो आपकी आत्मा में अभी ही भरा हुआ है.
3. उस असंख्य शास्त्रों के ज्ञान को आप सभी कई बार जान कर भूल गये हैं.
4. अब इस भव में आप फिर से उसके किसी एक छोटे से अंश को अपने मन में याद करना चाहते हो,
5. अपने मस्तिष्क में समाना चाहते हो,

6. मेरे विचार से आत्मा का चिन्तन-मनन करने के लिये जितना शास्त्र ज्ञान जरुरी है,

7. उतने ही शास्त्रों को ज्ञानी बनने से पहले जानना योग्य है.

8. अतः बाकी सभी शास्त्रों के बोझे को अपने मस्तिष्क में भर कर इस जन्म को व्यर्थ मत जाने दो.

9. अब किसी प्रत्यक्ष ज्ञानी का अवलंबन लेकर उनके बताये मार्ग को अपनाकर

10. आपके लिए इस जन्म में अपने चैतन्य-ज्ञान को पल्लवित करना योग्य है.

47 संकल्पी हिंसा से हमेशा बचने की कोशिश करें

आत्म धर्म या जैन धर्म में त्रस और स्थावर के भेद से दो प्रकार के जीव बताए गए हैं।
संकल्प पूर्वक किसी भी तरह के त्रस जीवों के घात का मन—वचन—काय से त्याग करना अहिंसाणु व्रत कहलाता है।

जैन धर्म के अनुसार हिंसा के चार भेद होते हैं –

1. संकल्पी हिंसा -

a. संकल्प पूर्वक किसी जीव का घात करना अथवा उसे कष्ट पहुँचाना संकल्पी हिंसा है।

b. कसाइयों द्वारा प्रतिदिन असंख्य पशुओं को मारना इसी संकल्पी हिंसा का परिणाम है।

c. आतंकवाद, जातीय संघर्ष, साम्प्रदायिक दंगे एवं अपने मनोरंजन अथवा मांसाहार के लिए शिकार करना या कराना इसी संकल्पी हिंसा की पर्यायें हैं।

d. इसके अतिरिक्त धार्मिक क्रियाओं के नाम पर की जाने वाली पशुओं की बलि भी इसी हिंसा की कोटि में सम्मिलित है।

2. आरम्भी हिंसा -

घरेलू काम—काजों, दैनिक कार्यों के निमित्त से होने वाली हिंसा आरम्भी हिंसा कहलाती है।

इसके अंतर्गत भोजन बनाना, झाड़ना—बुहारना, नहाना—धोना आदि क्रियाएँ समाविष्ट हैं।

3. विरोधी हिंसा -

अपने राष्ट्र, धर्म, संस्कृति, समाज, कुटुम्ब और परिवार की अस्मिता और अस्तित्व की रक्षा के लिए की जाने वाली हिंसा विरोधी हिंसा है।

4. औद्योगिक हिंसा – अपनी नौकरी, व्यापार और आजीविका के निमित्त अनजाने में हो रही हिंसा को इस श्रेणी में रखा जा सकता है.

सच्चा जैनी इन चार प्रकार की हिंसाओं में सबसे पहले अहिंसाणुव्रती बनकर संकल्पी हिंसा का त्याग करता है.

अपने मनोरंजन एवं स्वार्थ पूर्ति के लिए शरीर और मन से किसी भी प्राणी का घात नहीं करता है

दीपावली और अन्य सभी त्योहारों में होने वाली लाइटिंग और पटाखे आदि से होने वाली हिंसा भी संकल्पी हिंसा की श्रेणी में आती है.
अतः इनसे भी बचता है,
तथा शेष तीन प्रकार की हिंसा को भी अपने विवेक से हर समय कम से कम करने की कोशिश करता रहता है।
अतः आप भी अनंत संसार में अकल्पनीय दुखों को पैदा करने वाली संकल्पी हिंसा से हमेशा बचने की कोशिश करें.

48 कर भला, हो भला

बकरा कहे कसाई से, तू क्यों काटे मोह;
इक दिन ऐसा आएगा, मैं काटूँगा तोह.
विज्ञान के सभी छात्र जानते हैं कि न्यूटन के गति के तृतीय नियम के अनुसार
To every action, there is an an equal and opposite reaction.
"हर क्रिया की समान प्रतिक्रिया होती है."
इसलिए सभी लोगो को समझना चाहिए कि जो जैसा करेगा, उसका फल भी वैसा ही उसे प्राप्त होगा.
अतः जो भी व्यक्ति भला करेगा, उसका खुद का भी भला अवश्य ही होगा.

अब इस बात पर हम विस्तार से चर्चा करते हैं -
जैसे प्रत्येक परमाणु सदा काल रहते हैं, कभी भी नष्ट नही होते हैं.
इसी तरह इस संसार में दिख रहा कोई भी व्यक्ति या प्राणी कभी भी नष्ट नही होता है.
साथ ही जैसे एक परमाणु दूसरे पदार्थ से क्रिया करके नया पदार्थ बनाते हैं, इसी तरह से आप भी अच्छे-बुरे कर्म करके सुख-दुःख पाते हो, तथा परिणाम स्वरुप दूसरा जन्म भी लेते हो.

अतः अगर आप अपना खुद का भला चाहते हैं, तो दीन-दुखियों की हर तरह से मदद करें, ताकि आपका अभी भी भला हो सके और आगे आने वाले जन्मों में भी भला हो.

इस बात को समझकर अपना कल्याण करने के लिए दूसरों का भला करना आवश्यक है.

भगवान महावीर ने जब विश्वबंधुत्व की, लोक कल्याण की भावना भाई, तब ही वे तीर्थंकर बने, परमात्मा बने और फिर अनंत जीवों का उपकार किया.

हमे भी वे इसी मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं.

भगवान महावीर समझाते हैं कि तुम मेरे ही कुल के, परिवार के, वंश के हो. तथा जैसे मेरे गुण, वैभव, और शक्ति है, वैसी तुम्हारी भी है.

अतः अब संसार में भटकना छोड़कर अपने घर, अपने मोक्ष महल में आ जाओ.

भगवान महावीर यह भी समझाते है कि हे भव्योत्तम, अगर तुम मुझ को अपने परिवार का, कुटुंब का अंग मानोगे तो मै ग्यारंटी देता हूँ कि तुम्हारे इस अनादिकाल के संसार से अनंत गुना ज्यादा काल तक मै तुम्हे सुखपूर्वक मोक्ष में रखूँगा और फिर कभी भी वापस आने नही दूँगा.

वे यह भी समझाते हैं कि इस संसार में कोई भी, कभी भी, कैसे भी आप का नुकसान कर ही नहीं सकता है.

इस बात पर विश्वास कर आपने मन से सभी के प्रति हो रही नफरत को हटाकर वास्तव में अपने आप पर ही दया कर खुद का कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें.

जो हमारा प्रिय जीवन काल हैं, उससे अनंत गुना बड़ा हमारी इस तथाकथित मौत का काल होता है. इस दुनिया की सच्चाई यही हैं.

इस बात पर विश्वास कर अगर आप किसी भी व्यक्ति के प्रति आपके मन में हो रही नफरत को हटाकर सभी लोगो पर करुणा कर उन्हें अपने परिवार का अंग मानकर उनकी हर तरह की मदद करें,
तो आपको सभी तरह की सुख-समृद्धि और शांति प्राप्त होगी.
यही सच्ची मानवता है, यही सच्चा सुख है.
मैं तो सभी लोगो को बताते ही रहता हूँ कि आप स्वयं भी परमाणु की तरह सदा काल मूर्तमान ही रहते हैं.
साथ ही क्योकि हम भी अच्छे-बुरे कर्म करके सुख-दुःख पाते हैं, दूसरा जन्म भी लेते हैं, अतः हमें लोगो का भला अवश्य करना चाहिए ताकि हमारा भी भला हो सके.
इस बात को पहचान कर हमें अपना कल्याण अवश्य करना चाहिए.
इस बात को अगर आप समझ लें, तो सच में आपका वह दिन अमर-दिवस में बदल जायेगा.
फिर आप भी चैतन्य सम्राट बन जाओगे.
अष्टावक्र गीता प्रकरण 2, सूत्र 11,12,14 में भी समझाया गया है कि -
1. अहोssss. ब्रह्मा से लेकर तिनके तक सभी का नाश होने पर भी मेरा नाश नहीं होता है, क्योकि मैं नित्य (सदाकाल रहने वाला) हूँ. इस तरह मैं आश्चर्यमय हूँ और मुझ को नमस्कार है.
2. अहोssss, मैं देहधारी होते हुए भी अद्वैत हूँ. न कहीं जाता हूँ, न आता हूँ और विश्व में व्याप्त होते हुए भी मैं स्थित हूँ. इस तरह मैं आश्चर्यमय हूँ. मुझ को नमस्कार है.
3. अहोssss, मेरा कुछ भी नहीं है, अथवा जो मन और वाणी का विषय है, वह सब कुछ मेरा है. इस तरह मैं आश्चर्यमय हूँ. मुझ को नमस्कार है.

अहो, इस तरह से आपके मन के नीरोगी होने पर आप अपने शरीर से भी स्वस्थ रहेगे. क्योकि मन में प्यार, स्नेह, अपनापन और भाईचारा होने पर ही मन नीरोगी होता है और फिर मन से तन यानि कि फिर आपका शरीर भी नीरोगी ही रहेगा.

अतः अब आप भी समझ सकते हैं कि स्वस्थ आत्मा से स्वस्थ मन और स्वस्थ मन से ही स्वस्थ शरीर की प्राप्ति संभव है.

फिर हम भी अपने शरीर से भी स्वस्थ रह कर सभी बीमारियों से मुक्त हो सकेंगे.

किसी भी व्यक्ति के मन में प्यार, स्नेह, अपनापन और भाईचारा होने पर ही वह मन से नीरोगी होता है और फिर मन के नीरोगी होने से हम शरीर से भी स्वस्थ ही रहेगे, यह मेरी ग्यारंटी है.

मेरे इस कथन की वैज्ञानिकता एवं तार्किकता पर में हर तरह की चर्चा करने के लिए तैयार हूँ.

49 सिर्फ आत्मोद्धार का प्रयत्न करें

इस संसार में सभी भव्य जीव परमात्मा बनेंगे ही बनेंगे.

बस सिद्ध भगवंतों के केवलज्ञान के अनुसार उनका मोक्ष का रिजर्वेशन अलग-अलग समय पर हुआ है,

लेकिन उन सबका मोक्ष में रहने का काल उनके संसार में रहने के काल से अनंत गुणा ज्यादा होता है,

इस अपेक्षा से सभी भव्य-परमात्मा हर द्रष्टि से समान ही होते हैं.

णमोकार मन्त्र में भी हम तीनो काल के समस्त पञ्च परमेष्ठी भगवंतों को नमस्कार करते हैं.

सभी भव्य-परमात्मा को भी हम इसी तरह णमोकार मन्त्र में नमस्कार करते हैं.

देखो भाइयों और बहनों, आध्यात्म के समयसार आदि शास्त्रों में बहुत गंभीर स्तर की चर्चा चलती है.

अतः बिना किसी भी मान्यता, राग या द्वेष के इन अमृत वचनों को अंगीकार कर, बस मात्र अपने कल्याण का ही आपको निरंतर प्रयत्न करना चाहिये.

कभी भी, किसी भी व्यक्ति पर दोष लगाने की भूल कर भी कोशिश नहीं करना चाहिये और हमेशा यह मानना चाहिये कि कोई भी जीव परमात्मा से कम होता ही नहीं है.
क्या फिर हम किसी भी परमात्मा के ऊपर ऊँगली उठा सकते हैं?
हे प्रभो, आपने मिथ्याभावों का सेवन कर-करके, संसार में भटककर, अनन्त जन्म धारण करके अनन्तकाल गँवा दिया है;
इसलिये अब आपको बहुत सावधान होकर सिर्फ आत्मोद्धार करने का प्रयत्न करना चाहिये।

50 सुखस्वरूप चैतन्यदेव भगवान आत्मा की सच्ची रूचि को जागृत करें

पुण्योदय से प्राप्त होने वाले सांसरिक सुख वस्तुत: दु:ख ही है,
क्योंकि वे पराधोन हैं,
बाधा सहित हैं
विषयों का सेवन कराते हैं,

पंचेन्द्रियों के भोगों से उत्पन्न होने के कारण पापबंध के कारण हैं। अतः सभी जीवों को चाहिए कि वे आध्यात्म शास्त्रों में आये संसार के सुखों को दु:ख सिद्ध करने वाले अनेकानेक वचनों को अपने हृदय में अंगीकार करें.

फिर संसार के सभी विषयों से अरूचि एवं सुखस्वरूप चैतन्यदेव भगवान आत्मा की सच्ची रूचि को जागृत करने की कोशिश करें।

51 सीमाहीन सुख के लिए खुद को जानें

सम्पूर्ण पर-पदार्थों में शरीर ही एक ऐसा पर-पदार्थ है, जो आपके खुद के चैतन्यदेव से एकक्षेत्रावगाह रूप से सम्बन्धित है और जन्म से लेकर मरण तक इसके साथ रहता है;
इस कारण आपको सरलता से इससे भिन्नता भासित नही होती है।
माता-पिता, भाई-बहन व स्त्री-पुत्रादि भी इसी के माध्यम से अपने लगते हैं।
आपको अगर एक बार इस शरीर का एकत्व-ममत्व टूट जाये,
तो स्त्री-पुत्रादि रुपी इस संसार से भी आपका ममत्व टूटते देर नही लगेगी।
शरीर से एकत्व-ममत्व तोडने का एक ही उपाय है कि आप इस शरीर के अन्तरंग स्वरूप पर गहराई से विचार करे.

सीमाहीन सुख के लिए खुद को जानें

इस सच्चाई को समझकर क्या अब आप अपने चैतन्यदेव को स्वीकारना चाहेंगे?

आपको यह भी सोचना चाहिये कि अब आप खुद के निज आत्मदेव से किस प्रकार अपने अन्तरंग में स्थापित कर पायेंगे?

इस बात पर जब भी आप चिन्तन करेंगे,

तो आपको अपने निज चैतन्य प्रभो के सच्चे स्वरूप में अवश्य ही दर्शन होंगे।

यदि यह भगवान आत्मा एक बार स्वयं को सही रूप से जान ले,

स्वयं को अच्छी तरह पहिचान ले,
तो फिर उसे आत्मा में एकत्व हुए बिना नही रहेगा और तब उसे शरीर से भिन्नता भी भासित हुए बिना नही रहेगी।
क्या अब आप सीमाहीन सुख के लिए खुद को जानना, पहचानना और पाना चाहेंगे?

52 सहज सुख का आनंद लेने के लिए सिद्धालय जाएँ

जैसे केले के तने को छीला जावे, तो उसके अंदर से कही से भी गूदा या सार नहीं मिलेगा,
इसी तरह इन्द्रियों के भोगों से भी हमें कोई भी सार या फल नही निकलता है।
इन्द्रियों के भोगो की इच्छा से तो कषाय की ही अधिकता होती है,
जिससे लोलुपता भी बढ़ती है
तथा हिंसात्मक भाव हो जाते हैं.
फिर वह व्यक्ति धर्म भाव से भी च्युत हो जाता है;
अतएव पापकर्म का भी बंध कर लेता है।

इसलिये इन्द्रियों के भोग तो रोग के समान होते हैं और असार हैं।
जिस सुख के पीछे संसारी लोग पागल हो रहे हैं, वह सुख, सुख सा अवश्य भासता है, परन्तु वह सच्चा सुख नही है।
इन्द्रियों के भोग द्वारा प्राप्त सुख तो इच्छा रूपी रोग का क्षणिक उपाय ही है,
लेकिन यह उपाय इतना क्षणिक होता है कि उस सुख के भोगने से यह इच्छा का रोग और अधिक बढ़ता जाता है।
अहो, अनादिकाल से इस चैतन्य प्रभो आत्मदेव की अपनी स्वयं की भूल से, भ्रम से, अज्ञान से उसकी जो मति या बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है,

तथा इस कारण वह क्या-क्या भूल कर रहा है, इसे समझाने के लिए निम्न सरल सांसारिक उदाहरणों का सहारा लेते हैं -

1. जैसे कोई व्यक्ति रस्सी को भ्रम से साँप मान ले,
2. जैसे पानी में चन्द्र की परछाई को देखकर कोई बालक उसे ही चन्द्रमा मान लें,
3. जैसे सिंह कुए में अपने प्रतिबिम्ब को देख उसे दूसरा सिंह मान लें,
4. जैसे पक्षी दर्पण में अपने को ही देख कर उसे दूसरा पक्षी मान ले,
5. जैसे पित्त ज्वर वाला व्यक्ति मीठी वस्तु को कड़वा मान ले,
6. जैसे मदिरा से उन्मत्त व्यक्ति पर-स्त्री को निज-स्त्री मान ले आदि.

इस तरह इस संसार में मोहांध होकर यह प्राणी विषय-सुख को ही सच्चा सुख मान लेता है और अपनी इसी भूल के कारण वह अनादिकाल से चतुर्गति में भटक रहा है।

अहो, हे चैतन्य सूर्य, आपका सच्चा सुख हमेशा आपके ही आधीन रहते हुए ही प्राप्त होता है,

वह किसी अन्य के कारण नहीं मिलता है;

इसलिए वह सहज है, निराकुल है, सम-भाव मय है, आपका अपना निज-स्वभाव है।

इसलिए वह वास्तव में ऐसा ही होता है, जैसे कि -

1. इक्षु या गन्ने का स्वभाव मीठा होता है,
2. नीम का स्वभाव कड़वा होता है,
3. इमली का स्वभाव खट्टा होता है,
4. जल का स्वभाव ठण्डा होता है,

5. अग्नि का स्वभाव गर्म होता है,
6. चांदी का स्वभाव श्वेत होता है,
7. सुवर्ण का स्वभाव पीला होता है,
8. स्फटिक मणि का स्वभाव निर्मल होता है,
9. कोयले का स्वभाव काला होता है
10. खड़िया मिट्टी का स्वभाव श्वेत होता है,
11. सूर्य का स्वभाव तेजस्वी होता है,
12. चन्द्र का स्वभाव शीतल होता है,
13. दर्पण का स्वभाव स्वच्छ होता है,
14. अमृत का स्वभाव मिष्ठ होता है;

ऐसे अपने निज-परमात्मा का स्वभाव वास्तव में सुख, सुख और सुख ही है। बस अब इस स्वभाव को शीघ्र ही प्राप्त कर अपना कल्याण कर लेना उचित ही है, क्योकि -

1. जैसे नमक में सर्वांग खारपना होता है,
2. मिश्री में सर्वांग मिष्ठपना होता है,
3. जल में सर्वांग तरलपना होता है,
4. अग्नि में सर्वांग उष्णपना होती है,
5. चन्द्रमा में सर्वांग शीतलता होती है,
6. सूर्य में सर्वांग ताप होता है,
7. स्फटिक में सर्वांग निर्मलता होती है,
8. घी में सर्वांग चिकनाई होती है,
9. बालू में सर्वांग कठोरता होती है,
10. लोहे में सर्वांग भारीपन होता है,
11. रूई में सर्वांग हल्कापन होता है,
12. इत्र में सर्वांग सुगंध होती है,

13. गुलाब के फूल में सर्वांग सुवास होती है,
14. आकाश में सर्वांग निर्मलता होती है;
वैसे ही हमारी आत्मा में सर्वांग सुख ही सुख है.
तथा सुख तो हमारी आत्मा का अविनाशी गुण है।
इसलिये प्रत्येक आत्मा अपने अनंत गुणों में सर्वांग तादात्म्यरूप ही है,
तथा उसके हर अंग में समस्त गुण समाये हुए रहते हैं.
जैसे नमक का एक-एक कण जिव्हा द्वारा उपयोग करने पर लवर्णपने या खारेपने का स्वादबोध कराता है,
मिश्री का एक-एक कण उपयोग करने पर मिठासपने का स्वाद देता है;
इसी तरह आत्मा के स्वभाव का एक समय मात्र का अनुभव भी सहजसुख का ही सम्पूर्ण ज्ञान कराता है।
सभी परमात्मा सर्वत्र सहजसुख की पूर्ण प्रगटता से ही परमानन्दमय होकर अनन्त सुखी हैं; अनंत सिद्ध भगवंत भी इसी सहज सुख के स्वाद में ऐसे मगन रहते हैं, जैसे भ्रमर कमल के पुष्प की गन्ध में आसक्त हो, उसी में लीन हो जाता है।
सभी अरिहंत केवली भगवंत भी इसी सहजसुख का स्वाद लेते हुए पांच इन्द्रियाँ और मन के रहते हुए भी उनकी और नही झुकते हैं और इस आनन्दमयी अमृत के रसपान को एक क्षण को भी नही त्यागते हैं।
सभी मुनिराज भी इस ही रस के रसिक हो सहजसुख के स्वाद को पाने के लिये और अपने मन को स्थिर करने के लिये अपने सभी परिग्रहों का त्याग कर प्राकृतिक एकान्त जैसे वन, उपवन, पर्वत, कंदरा, नदीतट आदि का आलंबन लेते हैं.

क्या आप भी अब इस सहज सुख का आनंद लेने के लिए सिद्धालय जाना चाहेंगे?

53 परमाणु की तरह हम सभी लोग अमर हैं

हमारे संसार के सभी धर्म यह बतलाते हैं कि कोई भी इन्सान कभी भी मरता नहीं है.
हिन्दू धर्म में पुनर्जन्म की मान्यता है ही, क्योकि सभी हिन्दू मानते हैं कि प्रत्येक मनुष्य, प्रत्येक जीव अपने-अपने कर्मों के अनुरूप फिर से जन्म लेता है.
मुस्लिम और ईसाई धर्म भी यह मानते हैं कि सभी मनुष्य मरते समय सुप्तावस्था में चले जाते हैं. इसीलिये उस व्यक्ति को कफ़न में सुरक्षित रखकर दफना दिया जाता है, ताकि खुदा या ईश्वर क़यामत के दिन उसे फिर से उठाकर जन्नत में भेज सके.
इस तरह से सभी धर्मों की यह मान्यता है कि कोई भी इन्सान कभी भी मरता या नष्ट होता नहीं है.
हमारा विज्ञान भी यही मानता है कि कोई भी वस्तु कभी भी नष्ट नहीं होती है, वह तो मात्र रूप परिवर्तन कर नया रूप लेकर पुनः अस्तित्व में आ जाती है.
अगर आप अपनी आखें बंद कर लें, तो आपको जो अपनी प्रतीति होती है, वह एक सच्चाई है, वास्तविकता है,
यह स्वयं की अनुभूति ही आपकी जीवत्व शक्ति होती है.
आपकी यह जीवत्व-शक्ति अजर-अमर ही होती है.
शरीर के किसी भी परमाणु में यह ताकत नहीं है कि वो आपको खुद की इस चेतन-शक्ति का एहसास करा सके,
आपको किसी भी तरह के सुख-दुःख का अनुभव करवा सके.

क्योकि विज्ञान भी यह मानता है कि हमारे शरीर के सभी परमाणु निर्जीव हैं और वे किसी को भी सुख-दुःख का अनुभव करने में समर्थ नहीं हैं.

इस तरह से आप में जो चेतना या जीवत्व-शक्ति है, जो प्रतीति है, वह एक सच्चाई है.

इसलिए वह ही आपका द्रव्य या पदार्थ है और विज्ञान के अनुसार कोई भी पदार्थ नष्ट नहीं होता है.

क्या आप अपने आप को, अपनी स्वयं की प्रतीति को काल्पनिक मानते हो?

क्या आप मानते हो कि आप भी सदा के लिए नष्ट हो जाओगे?

तो आपका सोचना पूर्णतः गलत है. सच्चाई यह है कि -

1. □□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□,
2. □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□,
3. □□□ तरह आप □□ □□□ □□ नष्ट □□□ □□ □□□□ □□.
4. साथ ही □□□□ एक □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ नया □□□□□□ □□□□□ □□;
5. □□□ तरह आप □□ □□□□□-□□□□ □□□□ □□□□ □□□-□□□□ □□□□ □□,
6. फिर इस जन्म के बाद दूसरा नया □□□□ □□ □□□□ □□.
7. साथ ही जैसे हर परमाणु में अपार परमाणु-शक्ति भरी हुई है,
8. इसी तरह से आप में भी उस एक सूक्ष्म परमाणु-शक्ति से अनंत गुणा बड़ी त्रिलोक-व्यापी, त्रिकाल-व्यापी जीवत्व शक्ति, चेतना-शक्ति भरी हुई है.

इस तरह हमारी इस चर्चा से यह निर्विवादित रूप से सिद्ध होता है कि हर धर्म, हर मान्यता के अनुसार कोई भी व्यक्ति वास्तव में कभी भी मरता नहीं है,

भले ही हमारी इस सांसारिक मान्यता से उसे मृतक मान लिया जाता हो.

हमारी इस दुनिया की सच्चाई यही है कि जो हमारा वर्तमान का प्रिय जीवन काल है,

उससे अनंत गुना बड़ा हमारा आगे आने वाला काल है.

इस बात पर विश्वास कर अगर आप अपने मन से सभी लोगो के प्रति हो रही
नफरत को हटाकर,
सभी पर करुणा कर,
उन्हें अपने परिवार का अंग मानकर
उनकी हर तरह की मदद करेंगे,
तो वास्तव में यही सच्ची मानवता होगी.
इस तरह से मानने से हमें सच्चा सुख मिलता है,
आपके मन और बुद्धि के नीरोगी होने की यही निशानी है.
फिर आपके मन के नीरोगी होने पर आप अपने शरीर से भी स्वस्थ रहेगे.
क्योकि मन में प्यार, स्नेह, अपनापन और भाईचारा होने पर ही मन नीरोगी होता है
तथा फिर मन से तन यानि हमारा शरीर भी नीरोगी ही रहेगा.
मेरा ऐसा मानना है कि स्वस्थ आत्मा से स्वस्थ मन और स्वस्थ मन से ही स्वस्थ शरीर की प्राप्ति संभव है|
यही वह बात है जिसे अगर समझ लिया जाये तो फिर इस संसार की सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है.
इस बात को नहीं समझ कर ही लोग अपने तात्कालिक हित को देखकर अपने सदाकाल के हित का सत्यानाश कर लेते हैं.
यह तो जंगल राज ही हुआ, जहाँ हर क्षणिक-शक्तिशाली अपने से दुर्बल का भक्षण कर लेता है.
क्या आप इस तरह के जंगलराज का सपोर्ट करते हैं?
अगर नहीं, तो फिर अपने खुद के पुनर्जन्म को मान लीजिये,

तब देखिये, आपकी द्रष्टि ही बदल जाएगी और आप भी अपने अच्छे सुखद जन्मों के लिए लोगों की भलाई के काम में जुट जावेगे.
यही वो मास्टर की या चाबी है, जिस का प्रयोग अगर प्रत्येक मनुष्य करे तो उसे फिर कोई परेशानी नहीं होगी,
क्योकि इस संसार में कोई भी, कभी भी, कैसे भी आप का नुकसान कर ही नहीं सकता है.
इस बात पर विश्वास कर आपने मन से सभी के प्रति हो रही नफरत की आग को हटाकर
सबसे पहले अपने आप पर ही दया करे.
अष्टावक्र गीता प्रकरण 2, सूत्र 16,20 में ऐसा कहा गया है कि –
1. अहो, इस संसार के सभी लोगों के दुःख का मूल कारण द्वेत (एकत्व का अभाव) मानना है; उसकी औषधि अन्य कोई नहीं है.
2. यह सब द्रश्य मिथ्या हैं. मुझे कोई दूसरा (द्वेत) दिखाई ही नहीं देता है क्योकि मैं स्वयं एक शुद्ध चैतन्य रस हूँ.
3. यह शरीर, स्वर्ग, नरक, बन्ध, मोक्ष, भय, विश्व आदि सभी कल्पना मात्र ही हैं. उससे मुझ चैतन्य का क्या काम?
जब आप इस बात को मान लेते हैं, फिर आप सभी लोगो को अपने परिवार का अंग मानकर
उन पर करुणा कर उनकी मदद करने लगते हैं.
इस तरह से सभी प्राणियों की हर तरह की मदद करना ही सच्ची मानवता है, सच्चे सुख और समृद्धि की निशानी है.
मन में प्यार, स्नेह, अपनापन और भाईचारा होने पर ही मन निरोगी होता है,
इस तरह जैसे ही आपका मन निरोगी हो जाता है,

तब आप भी हर समय बिना दवाई के ही अपने शरीर से भी स्वस्थ रहेगे.
यही तन-मन और चेतन को स्वस्थ करने की विधि है.
फिर यह निरोगता सिर्फ एक जन्म की न होकर शाश्वत होगी.
तब आप अनंत काल तक सुख समृद्धि और शांति के साथ लोक के शिखर पर विराजमान परमात्मा होंगे.
ॐ शांति.

54 सृष्टि मेरी नहीं, मैं ही सृष्टि हूँ तथा मैं ही योगियों के ध्यान गम्य हूँ

1. हे चैतन्यदेव, इस संसार में सभी दुखों का मूल यह शरीर है.
2. कोई भी तत्वज्ञानी, आत्मज्ञानी इस शरीर को नहीं चाहते हैं.
3. क्योकि वे जानते हैं कि इस संसार में मेरा कोई नहीं है.
4. अतः मैं अकेला ही रहता हूँ;
5. शुद्ध चैतन्य स्वरूप भगवान आत्मा के ध्यान के सिवाय जितने भी कार्य होते हैं,
6. वे सब सिर्फ और सिर्फ मोह से ही होते हैं.
7. तब इस मोह से फिर कर्म का बंध होता है
8. अतः इस तरह किसी भी प्राणी का एकमात्र दुश्मन मोह ही होता है.
9. निश्चय से मैं शुद्ध हूँ,
10. मैं ज्ञानी हूँ,
11. मैं एक अकेला ही हूँ
12. तथा कर्म के संयोग से होने वाले जितने भी भाव हैं,

13. वे सब भी मुझ से भिन्न हैं.

14. अतः मैं ही योगियों के ध्यान गम्य हूँ,

15. हे आत्मन, अब आप अपने वीतराग भावानुवर्ती शुद्ध चैतन्य स्वरूप आत्मदेव का ही प्रतिक्षण स्मरण करें.

16. इस आत्मदेव के स्मरण मात्र से शीघ्र ही आपके सभी कर्मों का क्षय हो जाएगा.

17. इसी से आप तीन लोक के स्वामी बन जायेंगे.

18. यह परम तपस्वी योगियों और ज्ञानियों के जानने लायक भेद है.

19. इसी से परमात्मा का स्वरुप प्रगट होता है.

अष्टावक्र गीता प्रकरण 11, सूत्र 7 भावार्थ में समझाया गया निम्न कथन भी बहुत ही गंभीर है और आत्म-पिपासुओं को इस पर भी गहन गंभीर चिन्तन, मनन करना चाहिये.

20. मैं एक हूँ.

21. मेरे अलावा दूसरा कोई भी नहीं है.

22. इस संसार में रहने वाले ब्रह्म से लेकर तृण पर्यंत मेरी आत्मा का ही विस्तार है.

23. यह स्रष्टि मेरी नहीं, बल्कि मैं ही स्रष्टि हूँ.

24. मेरे से भिन्न अन्य कुछ भी नहीं है.

25. मैं ही चैतन्य स्वरुप आत्मा हूँ.

26. इस तरह जो व्यक्ति ऐसा मानकर अपनी आत्मा को स्वीकार कर लेता है,

27. उसे दूसरा कोई भी नहीं दिखने के कारण कोई भी विकल्प रहता ही नहीं है.

28. वह निर्विकल्प हो जाता है.

29. वह निखालिस स्वर्ण हो जाता है.

30. ऐसा मानते ही उसके अंदर जितनी अशुद्धता थी, वह सब दूर हो जाती है.

31. वह व्यक्ति शांत और शुद्ध हो जाता है.

32. ऐसा व्यक्ति प्राप्य से भी मोह नहीं करता है.

33. वह अप्राप्य की चिंता भी नहीं करता है.

34. वह प्राप्य और अप्राप्य दोनों से सर्वथा मुक्त हो जाता है.

35. वह मानता है कि मेरा सब कुछ है अथवा मेरा कुछ भी नहीं है.

36. ऐसा व्यक्ति ज्ञानी हो जाता है.

37. यही मुक्ति है.

55 खुद के आत्मदेव को अपना लें

अगर कोई व्यक्ति किसी जंगल के किसी वृक्ष पर बैठा हुआ यह देखे कि
इस वन में आग लगी हुई है,
हिरन आदि सभी जंगली जानवर भागे जा रहे हैं,
किन्तु वह स्वयं न भागे और यह न ही यह विचार करे कि शीघ्र ही यह आग मेरे इस वृक्ष को भी जलाने वाली है,
तो आप समझ ही सकते हैं कि उस व्यक्ति का क्या होने वाला है?
शीघ्र ही वह व्यक्ति भी अग्नि की भीषण लपटों की चपेट में आकर अत्यंत तड़फ कर प्राण त्याग देगा.
अहो, इसी तरह इस संसार रुपी भव-वन में प्रत्येक व्यक्ति दूसरों की विपदाओं, उनकी तड़फन और उनकी मृत्यु को तो देखा करता है,
परन्तु खुद के ऊपर भी ये विपत्तियाँ आने वाली हैं,
खुद का भी मरण होने वाला है;
ऐसा नहीं मानकर उस विपत्ति से भागने की कोशिश भी नहीं करता है.

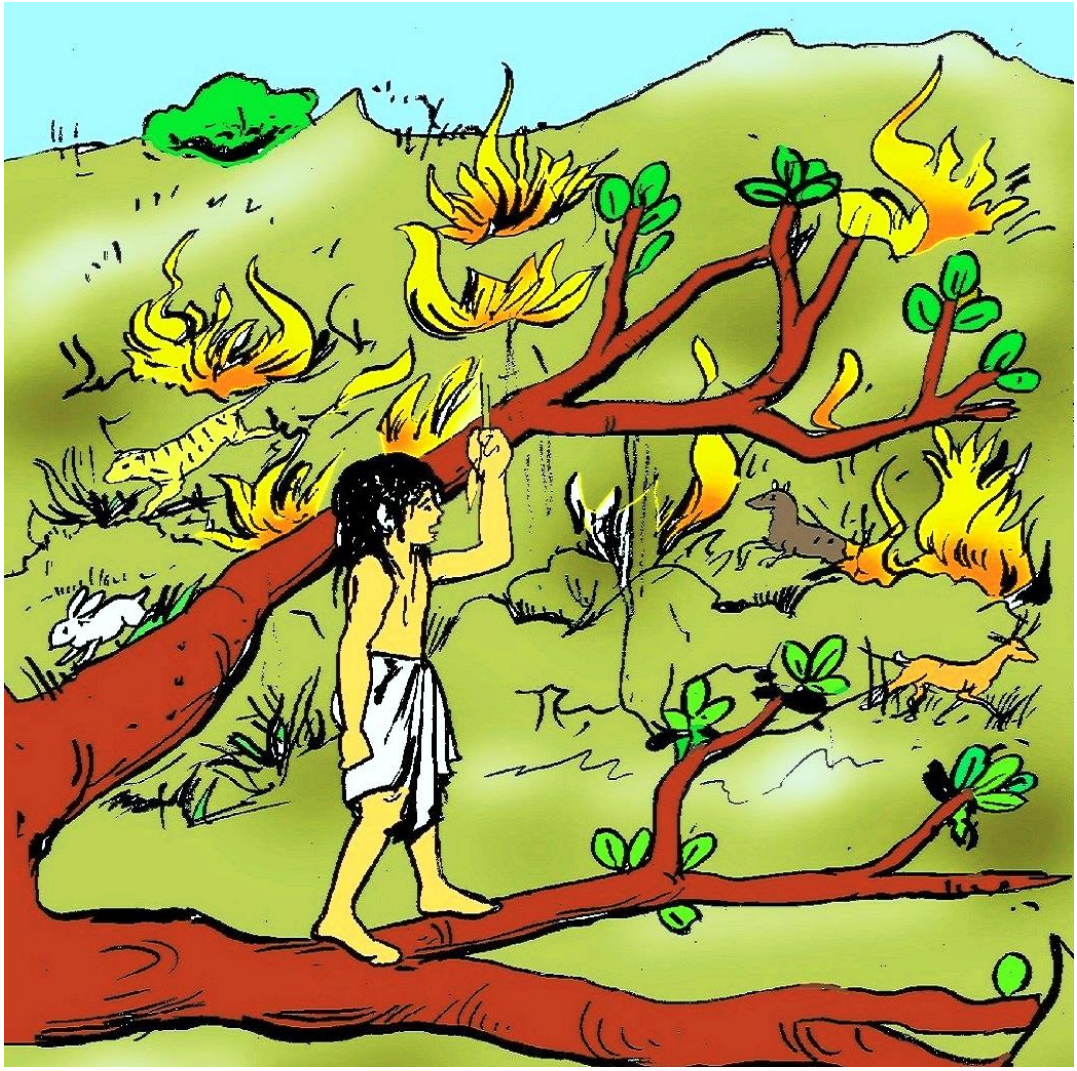

हे चैतन्यदेव, अगर आपने भी अपने चारो ओर जल रही अनंत-कर्मों की इस भीषण अग्नि से खुद को नहीं बचाया और इस संसार को छोड़कर नहीं भागे,

तो निश्चित ही जान लें कि फिर अनंत काल के लिए आपके बचने के समस्त मार्ग बंद हो जायेंगे

तथा आप फिर जन्म-मरण की इस भीषण और असहनीय पीड़ा को अनंत काल तक भोगते रहेंगे.

लेकिन आप तो स्वर्ण के समान शुद्ध चैतन्य धातु हो, यह संसार काल्पनिक है,

यह संसार हेय है तथा किसी भी तरह से उपादेय नहीं है.

अष्टावक्र गीता प्रकरण 6, सूत्र 1,2 भावार्थ में भी समझाया गया है कि –

1. यह चैतन्य आत्मा आकाश के समान असीम है,
2. विशाल है,
3. सीमा रहित है,
4. लेकिन यह संसार तुच्छ घड़े की भांति प्रकृतिजन्य है, सूक्ष्म है, असार है. ऐसा मुझे ज्ञान हुआ है.
5. यह आत्मा समुद्र के समान विशाल है
6. लेकिन यह संसार तरंगों के समान विनाशीक है. ऐसा मुझे ज्ञान हुआ है.
7. अतः मैंने देख लिया है कि सिर्फ मेरा आत्मदेव ही एक है,
8. यही एकमात्र सत्य है;
9. जो दर्शाता है कि जहाँ न कुछ पाने को है;
10. न छोड़ने को है;
11. न राग है,
12. न विराग है;
13. न आसक्ति है,
14. न विरक्ति है;
15. न संसार है,
16. न मुक्ति है;
17. ऐसा मैं हूँ.
18. अब मुझ स्थितप्रज्ञ (ज्ञाता-द्रष्टा) ज्ञानी को इस संसार में किसका त्याग है,
19. किसका गृहण है,
20. किसका लय है,
21. किसका विलय है?

22. मैं आकाश के समान असीम,
23. समुद्र के समान विशाल हूँ;
24. लेकिन यह संसार तरंगों के समान तुच्छ है.
25. अतः अब आप भी इस संसार को तुच्छ मानकर खुद के आत्मदेव को अपना लें.

56 सिद्ध स्वरुप परम ज्योतिर्मय चैतन्यदेव ही हो आप

हे प्रभो, आपके आत्मदेव का स्वरुप वचन गोचर नहीं है,
आत्मदेव का स्वरुप इन्द्रियों से व मन से प्रगट नहीं है,
आत्मदेव का स्वरुप अनंत है,
आत्मदेव का स्वरुप शब्द रहित है,
आत्मदेव का स्वरुप जन्म रहित है,
आत्मदेव का स्वरुप भव भ्रमण से रहित है,
आत्मदेव का स्वरुप निर्विकल्प है,
अहो, आपके आत्मदेव का स्वरुप ऐसा ही विचारना योग्य है.
अतः जो चैतन्यदेव विशुद्ध है,
जो चैतन्यदेव प्रसिद्ध है,
जो चैतन्यदेव परम ज्ञानमय ज्योति स्वरुप है,

जो चैतन्यदेव सनातन है;
ऐसा चैतन्यदेव सो ही मैं हूँ,
सिर्फ मैं ही हूँ.
इसलिए इस अविनाशी आत्मा को मैं अपने आप से अपने में ही देखता हूँ.
निश्चय नय से मैं न नारकी हूँ, न तिर्यंच हूँ, न मानव हूँ और न ही देव हूँ.
मैं तो सिद्ध स्वरुप परम ज्योतिर्मय चैतन्यदेव ही हूँ.

क्या अब आप भी खुद को सिद्ध स्वरुप परम ज्योतिर्मय चैतन्यदेव मानना चाहेंगे?

57 निर्विकल्प होकर चैतन्यदेव बनें

हे शक्ति पुंज, आप तो खुद ही -

1. परमात्मा हैं
2. चैतन्य चमत्कार हैं
3. निश्चल हैं
4. निश्छल हैं
5. निष्काम हैं
6. ज्ञानाकार हैं
7. अमूर्तिक हैं
8. अविनाशी हैं
9. निर्विकल्प हैं
10. निष्कम्प है
11. नित्य हैं
12. आनंद का मन्दिर हैं
13. सर्वव्यापी हैं
14. हलन-चलन क्रिया रहित हैं
15. सदा उदय रूप हैं
16. कृत-कृत्य हैं
17. शांत हैं
18. कल्याण रूप हैं
19. अज्ञानी जिसके स्वरुप को जान नहीं सकते हैं, ऐसा हैं
20. शरीर रहित हैं

21. इन्द्रियातीत हैं

22. संसार के क्लेश रुपी वृक्षों को जलाने के लिए अग्नि के समान हैं
23. शुद्ध हैं
24. कर्म लेप से रहित हैं
25. ज्ञान रुपी राज्य में स्थित हैं
26. प्रभावान हैं
27. ज्ञानज्योति मय हैं

28. महा वीर्यवान हैं
29. पूर्ण हैं
30. पुरातन है
31. सम्यक्त्वादी आठ गुण सहित हैं
32. उपाधि रहित हैं
33. रोगादि रहित हैं
34. प्रमाण अगोचर ज्ञानियों के द्वारा जानने योग्य हैं
35. सर्व तत्वों का निश्चय करने वाले हैं
36. बाहरी इन्द्रियों से ग्रहण करने योग्य नहीं हैं
37. अन्तरंग भावों से क्षण मात्र में ग्रहण करने योग्य हैं
38. अहो, ऐसे ही अनंत गुण और शक्तियों को ग्रहण करने वाले हैं
39. परम ज्योति स्वरुप परमात्म स्वभाव वाला ही आपका अपना निजात्मा हैं.
40. अतः अब आप भी शीघ्र ही निर्विकल्प होकर चैतन्यदेव बनें.

58 लगन □□□□ अन्तरंग अगन को जलायें

हमारे देश में आज भी कई गाँव ऐसे हैं, जहाँ पर अभी भी गैस नहीं पहुंची है,
वहां के जो जैन धर्मावलम्बी चूल्हे में खाना बनाते हैं

वे इस चूल्हे में लकड़ी को भी छने पानी से धोकर जलाते हैं.
चूल्हे की तेज आंच होने से वह गीली लकड़ी भी जल जाती है और उनका खाना बन जाता है.
हे प्रभो, इस तरह कोई भी □□□□ □□□□□ □□ □□□□ क्यों न □□,
अगर उसे □□□□□ □□ □□□□ □□□ रहता है, □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ होता ही है।
□□□□ □□□□ □□ तरह ही आपने भी -
1. □□□□□ □□ □□□ क्यों न □□□□ □□□,

2. □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ क्यों न □□,

3. पर न्तु □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ लगन अगर तीव्र □□,

4. □□□□ आप□□ □□□□□□□ □□ आपकी इच्छा अगर तीव्र □□,

5. □□ इस लगन □□□□ अगन □□ आपके समस्त □□□□ □□□□□ □□ जलकर □□□ □□ जायेंगे।

6. □□□ □□□□ द्रष्टि को □□□□ □□□□□ पर कभी भी नहीं रखें,

7. □□□ □□ □□□□ □□□□□-□□□□ चैतन्य-□□□□□□ पर □□ रखें.

8. □□□□ पर □□□ □□□□□□□ न □□, न □□ और न □□□□□

9. क्या आप भी अब □□□□ □□□□□-□□□□ चैतन्य-□□□□□□ पर द्रष्टि रखना चाहेंगे?

10. अगर हाँ, तो अब अपने अन्तरंग में लगन □□□□ अगन को जलायें.

59 □□□□ □□ चैतन्य-जल के लिए तड़फन

1. आप जानते ही हैं कि कोई भी □□□□ अगर □□□□ □□ □□□□ आ□□□□,

2. □□ हम देखते हैं कि वह तत्काल □□ □□□□□ □□□□ □□□

3. □□□ □□□ कहे कि तड़फो, तब □□ □□□□□□, □□□ □□□□ होता □□□

4. वह तो सहज □□□ □□□ □□ □□□□□-□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ भरकर □□□□ □□□ □□□ □□□□□□.

5. □□ □□□ □□□ उसे तडफता हुआ देखकर □□□□श खुद □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□

6. □□□□ □□ □□□□ उस मछली □□ तड़फन □□□ □□□□□□,

7. जब वह या तो □□□□□ □□ □□□□□□ □□ फिर मर □□□□□□□

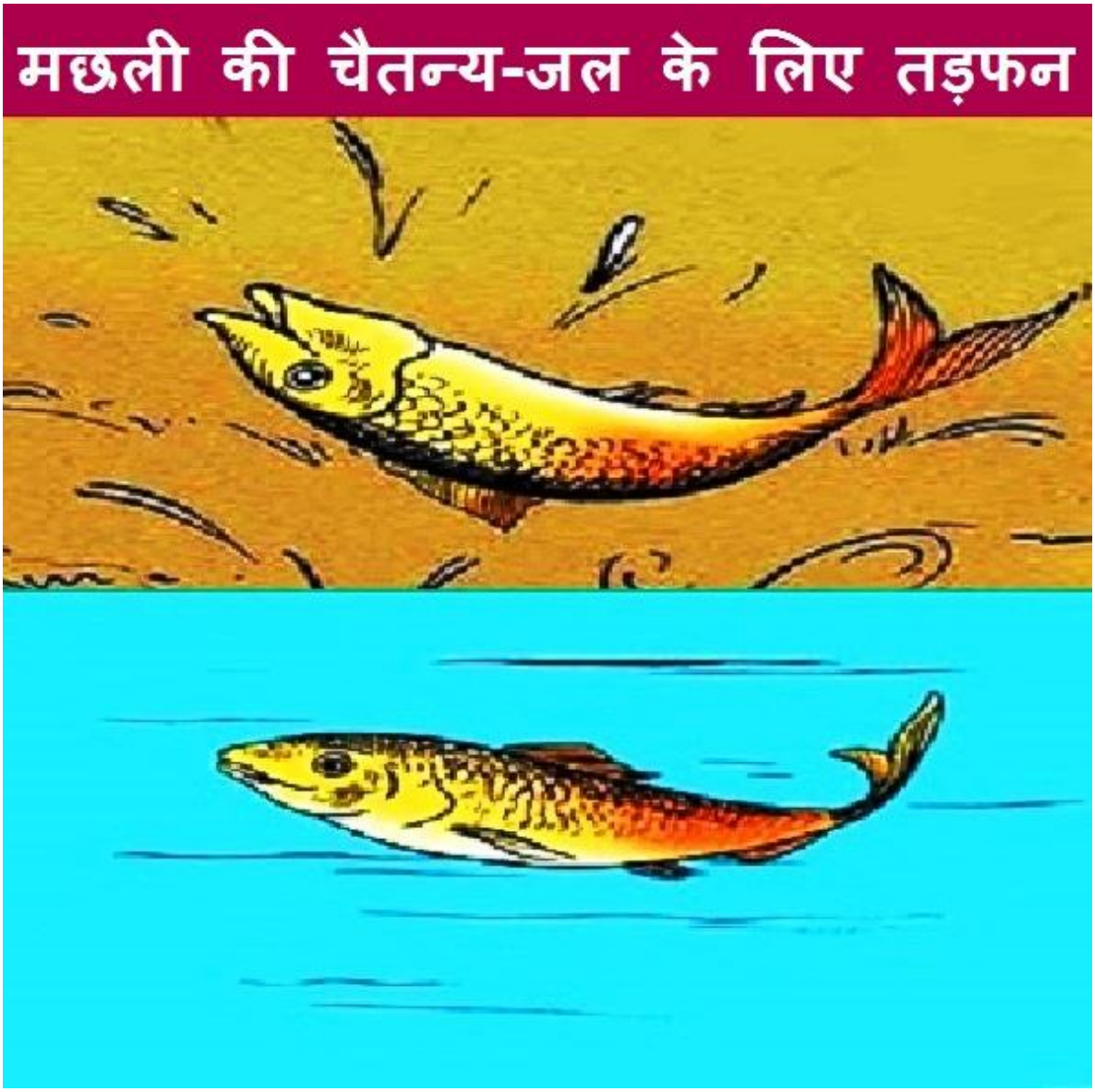

8. □□□ तरह □□ चैतन्यदेव, आप□□ □□□□ □□□□ जल, □□□□ □□□□□ □□ अनादिकाल से □□□ □□,

9. लेकिन पता नहीं, □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□-□□□□□ □□ रखी □□ □□

10. □□□□□काल □□ आज तक आप अपने चैतन्य जीवन जल के लिए □□□□□□ □□ □□□□ तड़फ □□□ □□□

11. □□□□ आप□□□□□ □□ □□ आप□□ □□□□□ □□ अपने □□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ तुल्य □□□□ □□□□□ □□ अनंत □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□-□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□

12. □□□□ □□□□□□□ □□□□□ जल □□ □□□□□ □□रकर □□□□ आपकी □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□

13. हे प्रभो, अब तो □□□ और □□□□ □□□□ □□□□ जीवनजल, □□□□त्म-जल □□ ओर □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□.

14. जब तक □□□□□ □□ □□□□□□ न □□,

15. तब तक कम □□ कम जल □□□ □□□ या मछली □□ तरह □□□□ तो सही।

16. फिर देखना, □□□□□ □□ कोई न कोई □□□□□□ आकर आप□□ □□□□□ आपके ही चैतन्य □□□□ जल □□□ □□□ □□□□□□

17. तब फिर आप भी अपने चैतन्य-जल में अनंत काल तक सुख पूर्वक रमण करोगे.

60 देव मरे, एकेंद्रिय होय

आप जानते ही हैं कि आध्यात्मिक शास्त्रों में ऐसा कथन आता है कि

देव मरे, एकेंद्रिय होय,
यानी कि देव गति पाना इतना खतरनाक है कि वह हमारी बड़ी मुश्किल से पायी त्रस पर्याय का ही नाश कर देती है.
अगर कोई इसकी लौकिक तुलना करना करना चाहे तो हम बस एक ही बात से इसकी तुलना कर सकते हैं कि जिस तरह किसी बकरे की बली देने से पूर्व उसे खूब खिलाया पिलाया जाता है, सजा-धजा कर बेंड-बाजे के साथ उसका जुलूस निकाला जाता है और फिर तिलक लगाकर उसका गला काट दिया जाता है,

उसी तरह हमें इस देव भव में भी खूब लौकिक सुख मिलता है और फिर सीधे हमारी त्रस पर्याय रुपी गर्दन को काटकर हमें एकेंद्रियपने में फेंक दिया जाता है.
सिर्फ और सिर्फ सम्यकद्रष्टि देवों को छोडकर अरबों-खरबों देवों में से कोई एकाध जीव ही इस दुर्गति को प्राप्त से बच पाता है.
अहो, ऐसा जानकर तो सभी लोगों को देव गति के नाम से ही कंपकंपी लगना चाहिये.
साथ ही उन्हें यह भी सोचना चाहिये कि कहीं वे ऐसे पापानुवर्ती पुण्य कर्म तो नहीं कर रहे हैं,
जिनके कारण गलती से भी कहीं उनकी अज्ञान अवस्था में देव गति न बंध जाये?
फिर क्या होगा, यह आप सभी अब अच्छी तरह समझ सकते हैं.
देखो भाई, जो जीव इस संसार में मात्र वीतरागीपने बातें सोच रहा है और चर्चा कर रहा है, उसे ही बहुत उच्च कोटि का अतिशय पुण्य बंधता है; जो नियम से आपका कल्याण करेगा ही करेगा.
देखो भाई, मुक्तिमार्ग के रास्ते में भक्ति-पूजा के कई स्थान आते हैं.
उन को कार्यकारी मानकर वहां पर अटकना नहीं चाहिए,
बल्कि सहज भाव से भगवान् की भक्ति-पूजा कर सिर्फ और सिर्फ अपने आत्मा के ध्यान में ही आगे बढ़ जाना चाहिये.
ऐसा जानकर और मानकर सब जीव अपने निज परमपद में ही चिर विश्राम करें, ऐसी मंगल भावना भाते हैं.

61 आत्म धर्म ही शाश्वत वैज्ञानिक धर्म है

1. आप जानते ही हैं कि प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बोस ने इस बात को सिद्ध किया था कि पेड़-पौधों में जान होती है.

2. अतः जो बात आज के वैज्ञानिक सिद्ध कर रहे हैं, वह तो आत्म धर्म या जैन धर्म में अनंत काल पहले से ही बताया गया है.

3. आप जानते ही हैं कि आज के वैज्ञानिकों के सिद्धांत तो हर 10 से 15 साल में बदल जाते हैं

4. किन्तु हमारे इस आत्म धर्म के सिद्धांत तो अनंत काल पहले जो थे,

5. वही आज भी हैं और अनंत काल बाद भी यही रहेंगे.

6. इस तरह आपका खुद का आत्म धर्म तो शाश्वत वैज्ञानिक धर्म है.

7. इस बात को स्वीकार कर शीघ्र ही आप भी अपना कल्याण कर पामर से परमात्मा बनें.

62 ज्ञानी के चैतन्य-सूर्य के प्रकाश में खुद को देखें

आप जानते ही हैं कि शास्त्रों के अनुसार प्रत्येक जीव अधिक से अधिक 2000 सागर प्रमाण त्रस पर्याय में आता है,
फिर वह वापस वनस्पतियों की एकेंद्रिय एवं निगोद की अवस्था या पर्याय में चला जाता है.
ऐसी त्रस पर्याय भी सभी प्राणियों को अनंत बार मिली हैं.
अब अगर आपने इस जन्म में अपना कल्याण नहीं किया,
तो फिर चौरासी लाख योनियों में आपको फिर से चक्कर लगाने पड़ेंगे.
लेकिन किसी भी व्यक्ति का कल्याण तो सद्गुरु के माध्यम से ही संभव है.

अतः अब इस मनुष्य जन्म में आपका एकमात्र कर्तव्य तो सद्गुरु को ढूंढना ही है.

शास्त्रों के अनुसार इस कलियुग या पंचम काल में कही भी, कभी भी ज्ञानी सद्गुरु का अभाव नहीं बताया है.

अगर कोई सच्चा जिज्ञासु व्यक्ति सच्ची रूचि, लगन और तन्मयता से उन्हें ढूंढे,

तब वह भव्योत्तम व्यक्ति निश्चित ही स्वानुभवी ज्ञानी सद्गुरु से परिचय प्राप्त कर अपना खुद का कल्याण कर लेता है.

ज्ञानी तो हमेशा ही कोशिश करते हैं कि वे जो भी लिखें, वह आपको अलग लगे, नया लगे और आपने कही भी पढ़ा न हो.
आप देख ही रहे हैं कि पिछले कई सालों से आ रहे डॉ. स्वतंत्र जैन सा. के हर लेख और उनकी सभी तेरह पुस्तकों में आपको कही भी शास्त्रों का आधार नहीं मिलेगा,
क्योकि उनके ये सभी लेख स्वानुभव से ही निकले तथा नय-न्याय और तर्क की कसौटी पर खरे ही होते हैं.
लेकिन अगर आप ढूंढना चाहे, तो आपको आगम शास्त्रों में उनकी हर बात का प्रमाण अवश्य मिल जायेगा.
अतः ज्ञानी के चैतन्य-सूर्य के प्रकाश में खुद को देखने के दुर्लभ अवसर को व्यर्थ मत होने दें.

63 हमारे चारो ओर नारकी से भी ज्यादा दुखी जीव रहते हैं

हे प्रभो, हमारे चारो ओर मच्छर, चींटी सरीखे बहुत से जीव मंडराते ही रहते हैं. ये छोटे-छोटे जीव किसी भी नारकीय जीव से ज्यादा दुखी जीव होते हैं; आइये आज इस पर भी चर्चा करें -

1. अब क्या कोई बता सकता है कि पंचेन्द्रिय संज्ञी जीव ज्यादा सुखी रहता है या एक इन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय असंज्ञी अवस्था में रहने वाले स्थावर और विकलात्रय जीव?
2. क्या किसी भी परिस्थिति में कोई भी विकलात्रय जीव, किसी पंचेन्द्रिय संज्ञी जीव से ज्यादा सुखी हो सकता है?

3. अतः हम सभी अब यह मान लेते हैं कि हर परिस्थिति में विकलात्रय जीव तो पंचेन्द्रिय संज्ञी जीव से ज्यादा दुखी ही रहता है.

4. आप सभी लोगो को कोटिशः धन्यवाद कि हमारी चींटी सरीखी पर्यायें जिनको हमने अनंत बार धारण की है, उस पर आपने विचार तो किया.

5. हे प्रभो, इस तरह का सिर्फ विचार करने से ही इतना अतिशय पुण्य का बंध होता है, कि जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते हैं.

6. हमने जो चींटी की पर्याय अनंत बार धारण की है, उसके दुःख नारकी से भी कई-कई गुणा ज्यादा होते हैं और जैसे-जैसे इन्द्रियाँ कम होती जाती हैं, जीव के दुःख भी बढ़ते जाते हैं.

7. एकेंद्रिय और निगोद के दुःख तो नारकी से अनंतानंत गुणा ज्यादा हो जाते हैं.

8. जो जीव ज्यादा पुण्यात्मा होता है, उसी को तो ज्यादा साता वेदनीय का या ज्यादा लौकिक सुख का उदय रहता है.

9. इस तरह से सिद्ध होता है कि सभी पंचेन्द्रिय संज्ञी नारकी जीव चींटी से ज्यादा सुखी है.

10. हे प्रभो, अगर आप इस बात को स्वीकारते हैं, तो आपको यह भी मानना पड़ेगा कि नारकी से भी ज्यादा दुखी जीव हमारे ही चारों ओर छोटे-छोटे कीड़ों जैसे कि मच्छर, मक्खी, कीट-पतंगे आदि के रूप में मंडरा रहे हैं.

11. हे प्रभो, जिस संसार से तीर्थंकर भगवंत और चक्रवर्ती सम्राट भी डरे,

12. क्या अब आपको भी इस संसार से नहीं डरना चाहिये?

64 घांस पर नहीं चलें

1. आध्यात्म शास्त्रों में आता है कि अगर हम एक पेड़ की पत्ती या किसी पौधे का एक फूल या पत्ती भी तोड़ते हैं,

2. तो उनको इतना क्रोध आता है कि अगर वे उस समय मनुष्य होते, तो हमे कितनी ही बार उठा-उठा कर फेंक-फेंक कर मार डालते. लेकिन वे तो बस बेबस होकर सिर्फ दुःख और दुःख का ही अनुभव करते रहते हैं.

3. जब हम घांस पर चलते हैं, तो उस समय कितने ही घांस के एकेंद्रिय जीव कुचल कर मर जाते हैं या अधमरे होकर कई दिन तक तड़फते रहते हैं.

4. साथ ही उस समय घांस के आश्रय से रह रहे कितने ही दो और तीन इन्द्रिय जीव भी कुचल कर मर जाते हैं या अधमरे होकर कई दिन तक तड़फ रहे होते हैं.

5. आपका इस तरह घांस पर घूमना या बगीचा लगाना हर रोज लाखो-करोड़ो जीवों को मरण या घनघोर दुःख का त्रास देता है.

6. आपका इस तरह का कार्य आपके खुद के आगे होने वाले असंख्य एक से तीन इन्द्रिय के जन्मों को पैदा करता है.

7. आज जो भी घांस-फूस में जीव रह रहे हैं, वे भी पूर्व में हमारे जैसे ही इन्सान थे,

8. लेकिन उन्होंने अत्यंत प्रमादी होकर उस समय घांस को कुचला था, इसलिए आज वे मिट्टी में मिल कर इतना भयानक दुःख उठा रहे हैं.

9. जिस संसार से तीर्थंकर भी डरे, क्या अब आपको भी इस संसार से नहीं डरना चाहिये?

10. हे प्रभो, इस बात को सिर्फ स्वीकार करने से ही आपको इतना अतिशय पुण्य का बंध होता है, कि जिसकी कोई भी कल्पना नहीं कर सकता है.

11. क्या अब भी आप बगीचा लगाना चाहेंगे?

12. क्या अब भी आप घांस पर चलना चाहेंगे?

65 आत्म-धर्म के ध्वज को पूरे संसार में लहराएँ

1. आप जानते ही हैं कि हमारी इस प्रथ्वी की आबादी सिर्फ 7 अरब है.

2. जबकि मैं इससे अनंत गुणा ज्यादा बार मनुष्य बना हूँ.

3. इस तरह आज मुझे दिख रहे सभी मनुष्य किसी न किसी भव के मेरे ही रिश्तेदार कई बार बने होंगे ही.

4. अतः मेरा यह कर्तव्य है कि मैं मेरे इन सभी रिश्तेदारों की भलाई का कार्य भी करूँ, उनका कल्याण करूँ.

5. साथ ही मैं कोशिश भी करूँ कि मेरे साथ वे सभी भी परमपद पाकर हमेशा मेरे ही साथ रहें.

6. क्या अब भी हमें हमारे किसी भी धर्म के भाई-बहिनों में जात और पंथ का भेदभाव करना चाहिये?

7. आइये दिल से कहें, हम सब एक हैं,

8. हम सब आत्म-धर्म के अनुयायी हैं.

9. हम सब विश्व-बंधुत्व के रखवाले हैं.

10. आइये इस आत्म-धर्म के ध्वज को पूरे संसार में लहराएँ.

66 आप में कोई भी अशुद्धि

न थी, न है और न होगी

1. विज्ञान बताता है कि हर परमाणु, भले ही अभी वह ऑक्सीजन के परमाणु की तरह मल-मूत्र-विष्ठा में ही रह रहा हो,
2. फिर भी वह तो सदाकाल शुद्ध ही रहता है.
3. लेकिन आपको अभी उसकी मल-मूत्र-विष्ठा की अवस्था में दिख रही जो कुछ भी अशुद्धि है,

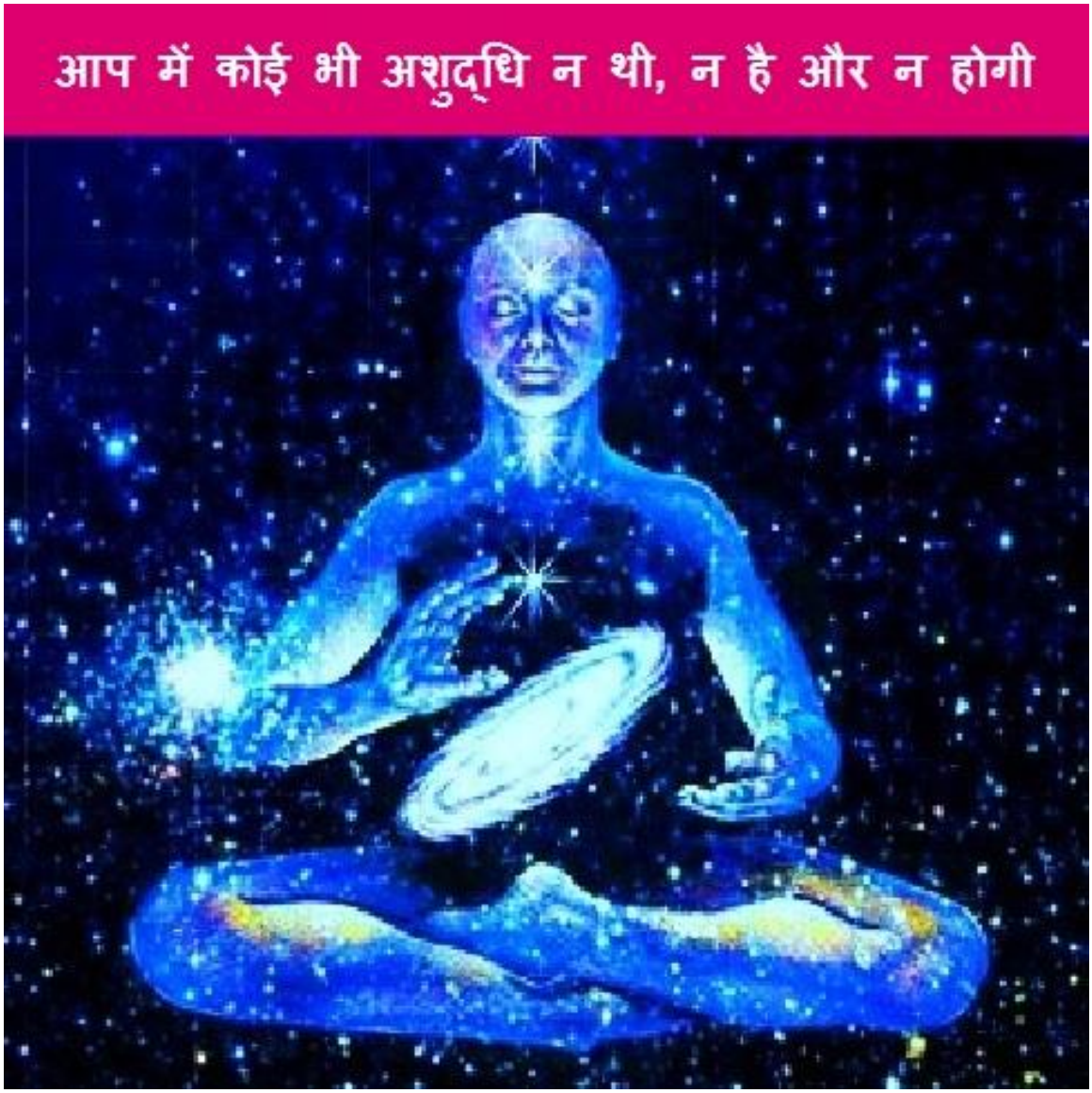

4. वह तो उस परमाणु के बाहरी ऑर्बिट या गोले में ही रहती है.

5. वास्तव में तो उस अशुद्धि का परमाणु के द्रव्य या न्यूक्लियस के अंदर प्रवेश ही नहीं होता है.

6. ऐसे ही आत्म धर्म या जैन मत के अनुसार सभी द्रव्य या पदार्थ या प्राणी शुद्ध ही हैं.

7. इसलिए आप में कभी भी, कोई भी अशुद्धि न थी, न है और न होगी.

8. साथ ही जैसे एक सूक्ष्म परमाणु में अनंत शक्ति छिपी हुई रहती है,

9. इसी तरह हमारे अंदर भी उससे अनंत गुना ज्यादा शक्ति भरी हुई है.

10. अब यदि आप इस शक्ति को पहचान कर उसको अपने चैतन्य स्वभाव में लगा देवें,

11. तो वही शक्ति बढ़ते-बढ़ते त्रिलोकवर्ती हो जायेगी.

12. फिर आपकी उस छत्रछाया में तीन लोक के समस्त जीव आकर अपना कल्याण कर लेंगे.

67 मोक्ष महल के मुक्ति-रथ में बैठें

1. मुझे तो सभी जीव परमात्मा ही दिखते हैं

2. मोक्ष में विराजमान सिद्ध भगवन्तों ने सभी भव्य जीवों का रिजर्वेशन मोक्ष महल को जाने वाले मुक्ति-रथ में अलग-अलग दिन, महीने और साल में कर दिया है.

3. सिद्ध भगवन्तों के केवलज्ञान में वह रिजर्वेशन चार्ट अभी ही डिस्प्ले हो रहा है.

4. अब जब भी वे सभी सिद्ध भगवंत दर्शायेंगे, तब सभी भव्य जीव उनके बताये अनुसार मोक्ष महल के मुक्ति-रथ में बैठ जायेंगे.

5. इस मुक्ति-रथ के रास्ते में चौथे और उससे आगे के सभी गुणस्थानो के स्टेशन जरूर आते हैं.

6. अतः अब आप अगर भव्य जीव हैं, तो बस निश्चिन्त हो जाइये.

7. शीघ्र ही आप भी अब अनंत अमृत सुख का रसास्वादन करने के लिए मोक्ष महल के मुक्ति-रथ में बैठने वाले हैं.

68 सच्चा मुमुक्षु

1. □□ प्रभो, □□□□□□□ □□□ आप □□ □□□ □□ □□□ □□□ हो,

2. □□□ □□□ हो,

3. □□□ □□□ हो,

4. □□□□□ कर □□□ हो,

5. वह सब मात्र आपके □□□□-□□□□□ □□□ □□□□□, □□□□□□□□□□□ □□ परछाई या □□□ □□ □□□

6. सच्चा जिज्ञासु तो यह मानता है कि

7. इस □□□□□ और □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ वह □□□□□□ल हो रहा है

8. उसे बारम्बार □□□□ □□ □□

9. यह □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ अग्नि उसको □□□□□ □□□□ कर रही है.

10. ऐसा जीव ही सच्चा मुमुक्षु है.

11. अब वह कहीं भी नहीं अटकेगा

12. तथा शीघ्र ही वह अब सद्गुरु के सानिध्य में अपना कल्याण कर अनंत सुख को पा लेगा.

69 यह मनुष्य भव फिर कब मिलेगा

1. हे चैतन्यदेव, आप अपने व्यस्त समय में से सिर्फ पांच मिनिट का अल्प समय अपने खुद के कल्याण के लिये भी निकालें.

2. फिर विचार करें कि आपकी खुद की □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□?

3. □□□□□काल □□ आज तक अनंत बार प्रयत्न करने पर भी आप □□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ कर □□ये हो?

4. □□□□□□□ □□□ आपको □□□□ □□□□ □□□□ये □□ आपको खुद के □□□ चैतन्यदेव □□ प्राप्ति हो □□□?

5. □□□□□□□ प्रश्न □□□□ □□□□□ हैं और □□□□□□□□ व्यक्ति □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□ इस □□□□□□ भव □□ एकमात्र कर्तव्य □□□□ □□□□□□ □□ प्राप्ति □□□□ □□ □□,

6. अन्यथा फिर पता नहीं, कितने युगों के कोटि-कोटि वर्षों बाद आपको फिर यह मनुष्य भव मिलेगा.

70 □□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□-□□□□□□

ही हो आप

1. हे प्रभो, आप □□□□ इस □□□□□, अचल, □□□□□□□, □□□□□शी, □□श्वत, सहज □□□□□□□, □□□□□□□□□□□□□ □□□□□□-□□□□□ □□ □□□□□□□;
2. फिर आप □□□□□ ही □□□ हो,

3. □□□ □□नकर अब आपको □□□ □□□ रम जाना चाहिये,

4. जम □□ना चाहिये,

5. समां जाना चाहिये.

6. तब आप □□□□□ □□□□□□ □□ आपके इस □□□□□□-□□□□□□□ □□□□□□-□□□□□□ □□ मात्र एक ज्ञान □□□□ □□ इस □□□□□ □□ अंध□□□ □□□□ □□□□□ □□ सहज □□□□मात्र □□□ □□ नाश हो □□ये□□.

7. □□□□□ आपका □□□ □□, □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ रहता है.

8. □□□ □□□□ □□□□□□□□, □□□□□□, □□□□□□, □□□□□□, □□□□□□, □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□□ रमण □□□□,

9. □□□ □□□□ □□□□□ □□□□ हैं।

71 परम □□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□

1. इस □□□□□ □□□ सच्चे जिज्ञासु को □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□ होता □□□

2. □□□□ □□□□□□□□□□ कर्मो का उदय भी □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□

3. वह बाह्य □□□ भक्ति-□□□□, □□□□-□□□□, जप-तप - □□□□□ □□□ सब कुछ □□□□ □□, □□□□□□ □□□□ पर □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□

4. वह यह □□ □□□□□ □□ □□ □□ सब □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□

5. □□□□□□□□ □□ सब पुण्योदय के कार्य □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ तक □□□ □□, □□□□□□ □□□□ पर □□

वह □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□,
□□□□ □□□□ कर □□□□ □□□

6. अतः उसकी पीड़ा बढ़ती ही जाती है.

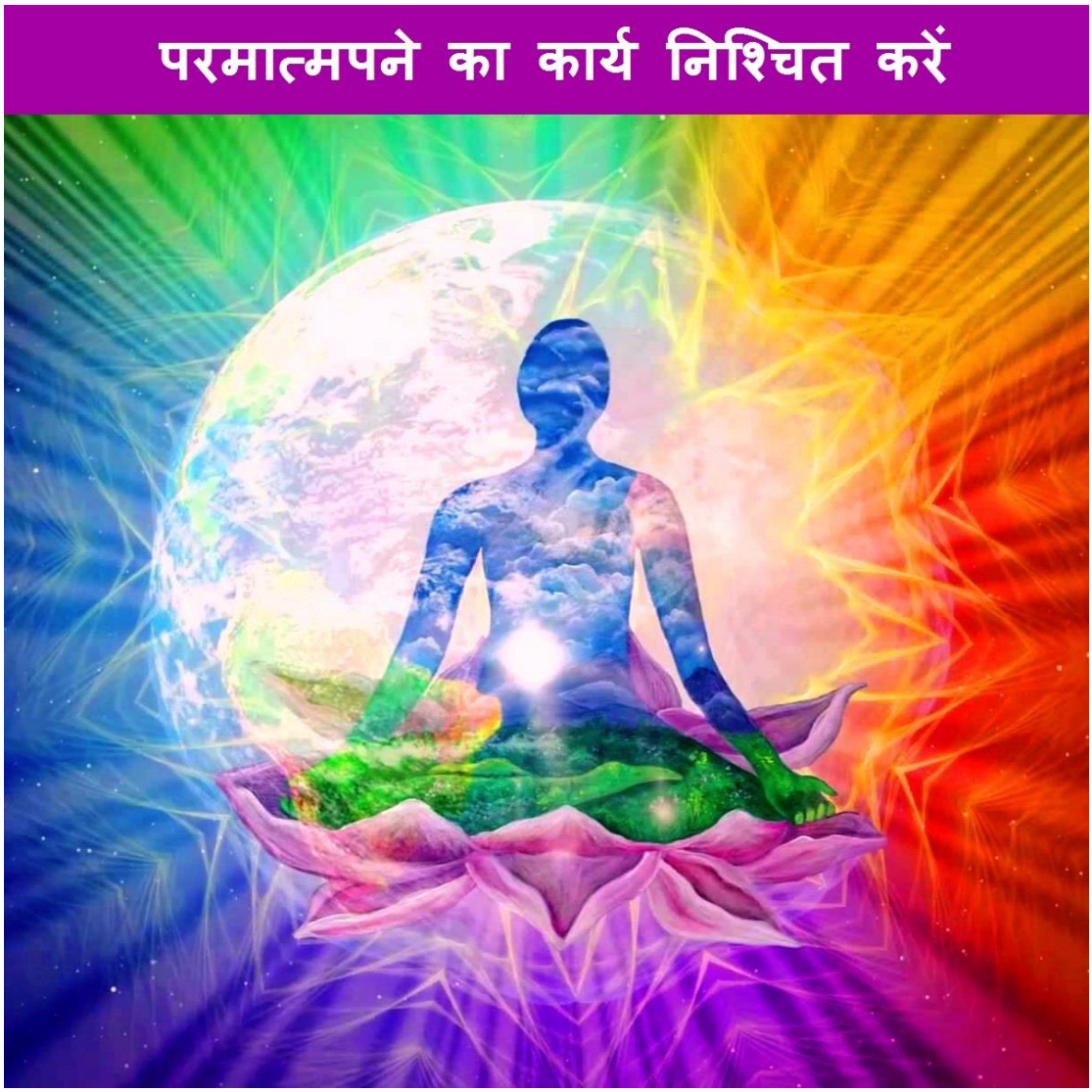

7. हे प्रभो, अब इस जन्म में □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ अनुभवित इस □□□□□ □□□□□ □□□□□□ मुक्ति-□□□र □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□-चैतन्य □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ आपको □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ निज शक्ति □□ □□□□न कर □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ पर चलते हुए □□□□□□□-

□□□□□□□ □□□□-□□□□ उतरते जाना चाहिये, डूबते जाना चाहिये,

8. □□□ आप □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□, □□□□□ पर म □□□□□□□ □□ □□□□□□□ कर सकेंगे।

9. अहोss, यह □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□ कब □□□ आ□□□□, यह □□ निश्चित □□□□ □□, किन्तु फिर भी आपने आजतक □□□□ परम □□□□□□□□□□ □□□□□□□□, □□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□-□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□

10. अतः अब तो यह मान लो कि मैं □□ सहज □□□ □□ □□□□□□ परम □□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ हूँ.

11. □□□□□ □□□□□ और □□□□□ □□□□, □□□□□ □□ बस □□□ □□□□ □□, □□□ □□□□ □□□

12. क्या आप भी अब परम □□□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ बनना चाहेंगे?

डॉ. स्वतंत्र जैन के प्रति

लोगो के हृदयोदगार

तथा स्नेह पूरित भावाभिव्यक्ति

Kripashankar Pandey

डॉ॰साहब ! एक वीतराग सन्यासी जैसा गहन आध्यात्मिक चिन्तन और एक महान कर्मयोगी की तरह नरनारायण की निस्वार्थ सेवा..
आपके व्यक्तित्व के इन दो पहलुओं ने मेरी दृष्टि में आपको एक सच्चा महात्मा घोषित किया है..
आपके चरणों में मेरे प्रणाम निवेदित हैं..!
हार्दिक कृतज्ञता..! अहोभाव..!!
मेरी शुभकामना है कि आप ऐसे ही गीतोक्त कर्मयोग के मार्ग पर चलकर स्वरूपस्थ हों ...!!
ॐ.....!

Mangilal Chandan
श्रीमद् जी तो दूसरे महावीर थे.
इसमें कोई संका नहीं, कोई सनदेह ही नहीं !
बहुत ही सुन्दर लेख लिख कर आपने लोगों को जागृत किया हैं
धन्य हैं आप Dr स्वतंत्र जी
आपकी विचार श्रेणि अति उत्तम हैं
आपकी विचार धारा आत्मा से परमात्मा तक पहुचाने में मार्ग दर्शक हैं
आदरणीय पंडितजी श्री फुलचन्दजी शास्त्रीजी की तरह
आप के भी उच्चविचार हैं
खूब खूब अनुमोदना

Poczta kwiatowa bydgoszcz
June 1, 2017 at 1:44 pm

Undeniably believe that which you said.
Your favorite justification appeared to be on the net
The simplest thing to be aware of.
I say to you,
I definitely get irked
While people think about worries
That they plainly don't know about.
You managed to hit the nail upon the top
And defined out the whole thing without having side effect,
People can take a signal.
Will likely be back to get more.
Thanks

Manu Bharradwaj
साधुवाद महोदय !
आपकी हर पोस्ट मानव उत्थान की है।
ईश्वर सदा आपके साथ रहें।

Anurag Goel

आपका कार्य बहुत प्रशंसनीय और अदभुत है और हम सभी को सामाजिक सरोकार की प्रेरणा भी देता है
आपकी लगभग सभी पोस्ट मैं share करता हूँ और
यथा सम्भव उसका print अपने institute में भी लगाता रहता हूँ
आप इसके लिये बधाई के पात्र हैं
कृपया pdf मेरे id पर भी भेजने की कृपा करें जिससे ज़रूरतमंदों को उपलब्ध कराई जा सके
धन्यवाद

Abhishek Jain
5 star*
अद्भुत है डॉ० साहब,
आपका यह एक महान कर्मयोगी की तरह नर-नारायण की निस्वार्थ सेवा
तथा एक वीतरागी सन्यासी जैसा गहन आध्यात्मिक चिन्तन.

Sulochana Dagli

Dr.Sahib
Paranam
aapko hardik badhai
aap ek Adhayatam jagat ke ek Tejesvi Prakash Stambh hai
aapke nishara me hum sab prakashsit ho rahe hai
aapka yai karya hum sabko adhayatam punj se bandhe rakh raha hai
aap hamare aadarsh hai

Mangilal Chandan
बहुत ही सुन्दर लेख हैं
धन्य हैं आप
जैन धर्म के रत्नों में आप भी एक
रत्न हैं ....
डॉक्टर स्वतंत्र जैन
प्रणाम सा.
Poczta kwiatowa radom

May 31, 2017 at 5:22 pm

If some one wishes expert view concerning running a blog afterward
I propose him/her to pay a quick visit this web site,
Keep up the nice work.

Swami Roopam

बहुत ही हृदयगामी

प्राञ्जल

शिक्षायुक्त

सर्वकल्याणी

बौध प्रदाता

और क्या क्या नही ?

वाह यही है सत्य ।

इसीलिए राजा लोग नंगें ही पाँव चल कर महात्माओं का सानिंध्य पाने जाया करते थे।

Dinesh Chandra Shah

डॉ.साहब, आप पञ्च परमेष्ठी का स्मरण करते हैं,

ज्ञायक में रमण करते हैं,

मिथ्यात्व का वमन करते हैं,

इसलिए मै आपको नमन करता हूँ ।

Poczta kwiatowa 24h

May 31, 2017 at 4:59 pm
I enjoy the efforts you have put in this,
Appreciate it for all the
Great posts.

Rana Thakur

Sir aapki post or jankari ko Mene bahut se ese logo ko batya he Jo doctor ki fees na de pane ke Karan bacho ko na dikha pate the.

Nimonia jesi Kai binaries sahi ho gai he sir.
Sabse pehle to Mene hi apne bête ko diya tha treatment.
Bilkul sahi ho gya aapka bhut bhut aabhar mere or mere jese logo ka.
Kal ek bujurg ko khasi ki dava lakar di
Badi Kush thi aaj mili.
Boli beta meri khasi sahi ho gai
Pese dene lagi
Me bola Amaa ji meri to bête ko laya tha, vo sahi ho gya
Ab aapke kaam aa gai
Aap sirf dua de.

Ye hamre group ki dava he.

Maa Tara —
5 star*
बहुत ही सुन्दर एवं अनुकरणीय विषय जिसे अपनाकर स्वस्थ शरीर रखा जा सकता है।
डॉ.साहब का अनेक धन्यवाद् जो लोगों को सही मार्ग दर्शन कर रहे हैं।
जय माँ तारा !

Kamal Kumar Johari
बार बार मन आपको प्रणाम करता है और यह आवाज आती है कि
इस युग मे आप महान पुरुष है
इसलिए पुनः प्रणाम

Onkar Singh Rana
5 star*
Bahut khoob Ji,
kaya baat hai Ji,
Sir main bhi thoda bahut Ayurveda ka gyan rakhta hoon,
aur logo ko batata rehta hoon Ji,
aapki post padh kar maza aa gaya Ji,
may Sahib Ji bless you.

Sumer Jat Muktiya –
5 star*
आप समाज कल्याण के लिए जो कार्य करते है उन के लिए आप को बहुत बहुत साधुवाद

CP Gupta —
5 star*
Aap bahoot achha kary Manav Sewa ke liye kar rahey h,bahoot kam log kartey h, sarahniy kary ke liye many many thanks

Pushpendra Naik
मैंने 1973 में आयुर्वेद एवं एलौपैथी से इंटीग्रेटेड स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की है, तत्कालीन वरिष्ठ प्राकृतिक चिकित्सक डा० खुशीराम शर्मा दिलकश के मार्गदर्शन में 1975 में उ०प्र० प्राकृतिक चिकित्सा परिषद से प्रशिक्षण प्राप्त किया है
अपने 40 वर्ष से भी अथिक चिकित्सा व्यवसाय के अनुभव के आधार पर मैं निःसंदेह कह सकता हूँ कि डा० स्वतंत्र जैन के कथन से पूर्ण सहमत हूँ
एंजियोप्लास्टी या बाईपास सर्जरी के अपने लाभ हैं परन्तु जहाँ तक मैं समझ रहा हूँ कि डा० जैन गैर जरूरत सर्जरी के प्रति जनचेतना जगाने का सराहनीय कार्य कर रहे हैं

Tikendra Sahu —

5 star*

Bahut prabhawit hu aapki sewa bhawna se.....sahej k rakhane yogya jankariya aapke dwara d jati hai.bahut km log aapke jaise hote hai.pranam

Vasudeo Chandwani

मेरे गूरुजी पूज्यनीय श्री तरूणसागर जी महाराज आप ही की तरह

ज्ञान की गंगा प्रवाहित करते रहते है

Mamta Jaindaga

Aap Bhagwan ke avatar me is dharti pr aaye ho.....
my first God is Mahavir n second is U Sir

Sudhir K Srivastava

Priya Dr. Jain, saprem vande.
Aapne "SWASTH RAHO SWASTH KARO" post mere
e-mail par bheja, maine ise padha.
Mai aapko kin shabdo me dhanyavad dun

samajh nahi aa raha,

phir bhi aap mera hardik dhanyavad sweekar karen.
Mera aapse vinamra nivedan hai ki aap apne anubhoot prayogon ki jankari mere mail par bhejne ki kripa karte rahe,
aapka sada abhari rahunga.

Manu Bharradwaj

धन्यवाद इंजिनियर+डॉ. जैन

उस सब के लिए जो आपने मुझे व मेरे द्वारा भेजे emails पर भेजा।

साथ ही उस सब के लिए जो आप मानवता के लिए कर रहे हैं।

ईश्वर आपको और शक्ति तथा दीर्घायु प्रदान करे।

अस्तु। पुन:धन्यवाद !

Vikas Shivhare

Respected sir aapne bahut acchi jankari di thank you sir
Adv. Sanjeev Abrol
Cell 9855200503
Thanks doctor sahib for this wonderful book.
I am very thankful to u.
I will forward this book to all of my friends.
Regards

Virendra Sharma

अत्यन्त सेवामूलक एवं गरिमामय कार्य।

इस महान कार्य की जितनी प्रशंशा की जाए, कम ही होगा।

पराशक्ति प्रेरित कार्य हेतु माँ भगवती सदैव सहयोग करें एवं आप सपरिवार पर उनकी कृपा बनी रहे।

आपका कल्याण हो।

Cp Jain
Aapka prayas bahot he sarahniya he.
Dharm ke kshetra me bhi aur swasthya ke kshetra me bhi
Bahot he achha lagta he aapke articles padhkar.

Sumer Jat
Muktiya — 5 star
आप समाज कल्याण के लिए जो कार्य करते है,
उन के लिए आप को बहुत बहुत साधुवाद

Sanjiv Kumar Swarnkar
Muktiya — 5 star
This is a very useful and good healts information

Deepak Ladha —
5 star⁎
Very good service provided by you thanks for these types of service

NandKishore Darak
डॉक्टर सां आपके लेख तो स्वास्थ्य के लिए क्रान्तिकारी है

Davinder Dhillon —
5 star⁎
Very nice very much good tips
Very important & beneficial

Vasudeo Chandwani
भाईजी आप की कोई पोस्ट गलत हो नहीं सकती ।
हर पोस्ट से ज्ञान गंगा का अमृत मिलता है ।

Anand Singh
Dr swatantar jain saab ki jai ho
Bhart ka veer real hero

मनोरंजन पाल आर्य
डॉ. साहब प्रणाम
आपका एक पीडीएफ है मेरे पास स्वस्थ रहे स्वस्थ करे.
इस पीडीएफ के द्वारा मैंने मैंने बहुतो को उपचार बताया जिसे बहुत लाभ भी हुआ
जिसमे से ओरिसा के एक भाई का एपेंडिस ठीक किया
पीलिया ठीक किया !

क्या आपके पास और दूसरा भी कोई पीडीएफ फ़ाइल है
क्योंकि मुझे एक भी फलेरिया के बारे में पूछा था
मैंने उसे उपचार तो बता दिया
क्योंकि एक बार आपका पोस्ट आया हुआ था फेसबुक में वही बताया है
क्या कोई और पीडीएफ है
आपके पास जिसमे इस भी बीमारी के उपचार बताया हुआ हो
क्योंकि उस पीडीएफ में फलेरिया का उपचार नही है
धन्यवाद

स्नेहलता जैन —
5 star*
आपकी जन कल्याण और विश्व सुख, शांति और समृद्धि की भावना अत्यंत सराहनीय है.

Dharmendra Singh Parihar —
5 star*
बहुत ही सुन्दर प्रयास ! ईश्वर आपको सफलता प्रदान करे |

Dinesh Chandra Shah
Aap adhyatma jagat ke Dedipyaman nakshatra ho

Raju Raju —
5 star*
Guru ji aap mahan hi ni swarth aap jan sewa kurtay hi aap ko mera koti koti parnaam

Divya Jain —
5 star*
Dr sir, lakho logo ki duaye apke sath hai.
Bhagwan lambi umar de apko

Sumit Motwani
Sir me apke diye upchar fb pr dekhta hu.
apko naman jo aap sub ka sochte hai.

Nandan Mahalwal
Shadhey Dr Muktiya Ji.
SAMAJ. KO DI JANE WALI SEWA KE LIYE
HAM AAP KAA " SAMMAN " KARTE HAIN.
DHANYAWAD. BHAIYA JI

Rohit Singh
Dr sir parnam sir mai apki batai dwai 2 moth she kha RHA hu colistrol kam krne ke liye muje bhut fayda ho RHA h lekin sir mane blood test karwaya h avi

to baki sab thik h lek in sir mera thaioraid tsh 6.16 a RHA h Jo Jada h plzz sir muje thairoid normal karne keep liye dwai btaye sir dil se dua deta hu apko ap sakchat bhagwan ho

Pushpa Sethi Maggu
Thanks for yr great efforts towards the right diection to people in this professional world

Anand Singh
Dr swatantar jain h to hosla buland h thanks

Ashish Bhandari
अंधत्व की पीड़ा।अद्भुत अलौकिक लेख।
हम जैसे अज्ञानियों को राह दिखाने वाला।
आपका अनंत उपकार

Kamalakar Dhabulkar
Koi Magaveer bankar kis roop me janm leta hey aur Dukhiyo ki seva karta h.
Example aapka hi - Din dukhiyo ki anwarat seva hi Dharm

रूद्र नाथ निखिल
प्रिय डॉक्टर साहब नमस्कार
आपकी इस सेवा को देखकर ह्रदय प्रसन्न हो गया है,
आप जैसे डाक्टर बहुत कम मिलते हैं इस धरती पर,
आप जन कल्याण और समाज की जो सेवा कर रहे हैं उसके लिये में ह्रदय से आपका बहुत बहुत स्वागत और धन्यवाद करता हूँ,
मैं महादेव से प्रार्थना करता हूँ की महादेव और धन्वन्तरि आपको यश कीर्ति के साथ उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु प्रदान करे

Pushpa Maggu
Sir u are truly work for the people & god bless u with good health and longevity

Naresh Nayak
Thanks sirji. aap ka kam kalyug me bhagvan jaisa hai
Aapko or koi mandir jane ki jarurat nahi.

Shantnu Sharma
dr sar lakho logo ki duaye apke sath h bhagwan lambi umar de apko

Kripashankar Pandey
हे महात्मन्..! सादर नमन् और अहोभाव..!
समस्त धर्मों का चरम उद्देश्य अनन्त काल के लिये स्वरूपस्थिति ही है।

जब तक यह देह है इसके लिये सेवा ही परमधर्म है जो आपके आचरण में सुस्पष्ट है।
भगवान् महावीर की स्थिरचित्तता मैं भी इसी जीवन में अनुभूत कर सकूँ ;
इस हेतु आप महानुभाव का आशीर्वाद और स्नेह मुझे पुस्तकरूप में प्राप्त हो...
यह मेरे लिये परमसौभाग्य होगा...!!
मेरा पता ह.... डॉ० कृपा शंकर पाण्डेय C/O श्री लाल चन्द्र मिश्र E.W.S. 44 , नीमसराँय कालोनी मुण्डेरा चुंगी, जनपद-इलाहाबाद उत्तर प्रदेश, पिनकोड- 211014

M Azam Siddiqui
Sir aap Jesé ho to sansar me koe Bemar nahe hoga

Sk Pandey
Is jankari ke liye aapko jitna bhi very nice thanks bola jai vah kam hi hai. Thank~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~s

Jagjeet Jandu
Dear doctor sabh I have downloaded your books and prescribing the medicine to our known free of cost as you proclaimed that we have to make india allopathic free so I am also striving a little in this direction.regards j s jandu

Rajesh Gupta
डॉक्टर साहब आप मानवता की बहुत बड़ी सेवा कर रहे हैं।

Mukesh Singh
Namaste sir..
Aapke dwara di gai jankari kafi upyogi hoti hai aur sabse mahawapurna hai aapki niswarth sewa
Jaha aaj ke date me log ek dusre ke dushman bane hain, jyada se jyada dhan kamane ka swarth hai wahi aapki ye nishwarth sewa prashansniye hai aur is kary me shayad aapke dharm ka bhi mahatwapurna yogdan hai
Aapki post mai gahanta se padhta hu.

Yogesh Arya
डा. सहाब नमस्कार मेरे लिऐ बेहद गर्व की बात है कि आप जैसे महान व्यक्तित्व मेरी मित्र सूची की शोभा बढाऐ हुऐ हैं हर रोज आपकी पोस्ट स्वास्थय की दृष्टि से बेहद महत्व पूर्ण जानकारी से परिपूर्ण होती है मैं आपकी सभी पोस्ट अक्सर पढता हूँ आपसे निवेदन है अपनी अब तक की सभी पोस्ट कृपया मेरे ईमेल पर भेंजने की कृपया करें

Anil Mathur
सराहनीये कदम है आपका... ईश्वर आपको लम्बी आयु दे

Nitin Singhal
I am doing it every day after learning it from you and its very helpful... highly recommended... thanks for all the wonderful info

Mahesh Jaiswal

डां0 साहब सुप्रभात आप को समाज के लिए इन सराहनीय कार्य के लिए धन्यवाद

Gopal Narayan
अति महत्वपूर्ण जनहित कार्य कर रहे हैं ..दिर्घायु

Anand Singh
Jain saab you are real hero of India

Vishal Satija
Dr sir It's nice and a great work for humanity ki ap Bahaut sare facts Bina kisi personal benefit k share karte h. Thanks alot for that.

Cherry McGill
ap manavta ki sew ka bot acha kam kar rhe h

Rohit Singh
Hath jodkar parnam karta hu Dr sir apko logo ka bhala kar rhe h ap lakho duaye milegi apko

Pushpendra Naik
I think that due to essence of my good karmas I have to know about you yesterday by your post on cardiac treatment. I am also an ayurvedic professional, retd. as distt. ayurvedic officer, Lalitpur, U.P. in 2011. Individually I am studying and working about Spiritual Treatment and now interested to work under your guidance.

Hansa Rohit —
5 star*
apka prayas achha hai
Aur logo ki duvao se jarur
Aap safal hinge.....
Aur achhe kaam me
Bhagvan bhi sath deta hai
All the best

Vinay Vishwas
Thank you Sir....Thank you very much....I am filled with gratitude for what you are doing for humanity.....thanks a lot..

नरेंदर कुमार भादू
बहुत ही सुंदर विचार हैं चिरंजीवी भव सदा सुखी रहो शुभ प्रभात

Sudhir Rathi
आपके लेखो को पढ़कर सुख मिलता है

Rohit Singh
dr sar ap mahan ho bhagwan apka bhla kre garibo ki lakho duaye apke sath h

Kamal Kumar Johari
sir, i arrang satsang on every sunday and convey ur message to each participants. They are also being benifited. I shall feel obliged if u send me ur book to me

B.k. Chatter
Wah kya khub ati sunder salah rog ko jad se samapt karne ka aachuk nuskha, bahut Bahut aanumodna

Prabhat R. Sharma
Great source of life you provide to all. Well done Sir

M Azam Siddiqui
Sir aap Jesé ho to sansar me koe Bemar nahe hoga

Dev Khandelwal
koti koti dhanyvad aapka

Kripashankar Pandey
इस कलियुग में आप स्वरूपस्थिति की बात करते हैं, यह तो अद्भुत है.
निश्चित ही आपका कल्याण शीघ्र ही होगा.

Ankush Sharma
Aapka amulya samay dekar jankari dene ke liye bahut -bahut aabhar

B.k. Chatter
Wah kya khub ati sunder hamesha swath rahne ka ati uttam upay

Kripashankar Pandey
हे महात्मन्..! आप द्वारा प्रेषित मुक्तियाँ (पुस्तक) मुझे प्राप्त हो गयी है ! विभिन्न युक्तियों तथा उदाहरणों के माध्यम से आत्म तत्त्व को उपदेशित करने वाली यह पुस्तक स्वरूपस्थिति हेतु साधक के लिये पाथेय है..!
आप की इस अकारण करुणा का पात्र हो कर मैं आपके प्रति हार्दिक कृतज्ञतापूर्वक अहोभाव से भर गया हूँ ।
आपके लिये बस यही शुभकामना है कि आप इस देहपर्यन्त नरनारायण की सेवा हेतु पूर्ण समर्थ रहें तथा देहोपरान्त अनन्त काल के लिये स्वस्वरूपस्थ हों ...नतशीश नमन्.

Kamal Singh Shekhawat
Thanks sir ji bhagwan aspko lambi umar de

Navneet Jagatramka
Nice job, great to see a man like u working for social cause

Sudhir Rathi

आपके इस सेवाभाव को नमन

Visu Parmar
पहले तो आपको बहुत बहुत धन्यवाद सर जी
और आप जो ये कार्य कर रहे है वो बहुत ही सराहनीय है

Meenu Jain
Sir jai jinendra
Aapka mere or meri family pe anant upkar hai,
Kyuki maine jeene ki aas hi chhod di thi
Aapke disha nirdesh ne jeevan badal diya

Ramesh Kumar
बहुत अच्छा कार्य कर रहे है आप

Pushpa Maggu
U are doing great job for awareness of people may god bless u sir

Suresh Goswami Anupam
अतिसुन्दर मानवतावादी अनुकरणीय मिशन।बहुत बहुत साधुवाद।

Anshul Vashishtha
Thank you sir ji.... Hats off to ur sense of charity

Rohit Singh
Sar ap mahan h ap logo ka dukh dur kar the h bhagwan apko sada khus rakhe m dil se dua de RHA hu Sar apko

Vineet Krgoel
Dr Saab Namaskar ..sir your posts are really helpful towards humankind. Thanks a lot sir

Amarsingh Rajpurohit
Sir aapka Yeh nek kary desh k liye bahut kam ayega

Seema Seema
Bahut bahut dhanyavad .ap ne bahut achi salah de

Ashok Kumar Gangwal
Dr. Sab
बहुत बहुत धन्यवाद इससे बहुत लोगों को फायदा होगा

Tushar Dutt
सर आप नि:स्वार्थ एक बहुत अच्छा काम करते है वो भी बिना किसी फीस के

Sushil Dubey

आप की पोस्ट पढ़ कर प्रसन्नता मिलती है। साधुवाद ।

Arun Pathak
Sir koti - kot Parnam

Mayank Jain
Sir apko koti koti naman

Manorama Rani
I am very thankful for your help and hope it will help my daughter. Thanks once again and hope u will show your guidance to the needy

Amar Nayak
अतिसुन्दर। अद्भूत

Devendra Nath
Heartiest thank from deep of soul for posting valuable informations . Salute .....Salute.... Dr

Anil Mathur
Great thought sir ji.....We will try to give our best for this thing....Thanks.....

Anil Mathur
Amazing effort by you Dr. sahab ji...Thanku so much

Rohit Singh
Dr Sar namste Sar apnea Jo dwai btai thi colistrol kam Karen keep liye muje bhut fayda ho RHA h

Kailash Bohra
शानदार साधुवाद

Anil Mathur
शानदार शानदार शानदार शानदार शानदार शानदार शानदार

Ram Kumar Ballan
डॉक्टर साहब नमस्कार
बहुत ही सुन्दर कार्य
परमपिता परमात्मा आपको दीर्घायु करे

Mayank Jain
जय जिनेन्द्र
For supporting nd guiding me
I m grateful to u sir

Anshul Vashishtha
Dr satyanarayan thanx for sharing such a valuable information
After reading ur articles I am profoundly impressed

Anshul Vashishtha
U r doing an amazing job sir

Gulshan Jain
डॉक्टर साहब, आप बहुत नेक कम कर रहे है। बधाई। कृपा करके अपनी उपयोगी किताबे Gulshan.jain@gmail.com पर भेज दे। धन्यवाद।

Rana Thakur
sir aapki is post ki hum bhut absykta thi bina mange hi hi moti mile aapka hardik dhanyabaad

Ranjeet Singh Yadav
आज के वक्त मैं यदि कोई इतनी लाभकारी जानकारी
समाज की भलाई के लिये समय निकाल कर
निस्वार्थ बाँटता है,
यह सोच काबिले तारीफ है,
इतनी सुंदर सोच को हम दिल से सम्मान सहित सलाम करते हैं।

Vikas Shivhare
Sar mene aapki side par jaakar aapko msg karna chaha lekin nahi ho raha.
sar me ye kahna chahta hoo ki aap bahut hi shandar docter hai aur minded bhi.
aap free me logo ko rog ki teatment batate hai aur bade pyar se,namrta se baat bhi karte hai
aap best ho sar.
me apne mobile ka net ka recharg kewal aapke teatmet ko padne ke liye.hi karta hoo.
sar me iss samay bahut pareshan hoo.
Lekin me aapase milne indore jaroor aaonge kewal aapse milne aur aapko paas se dekhne ke liye aap best ho sar Charan sparsh sar

Yasmeen Budhwani
डॉक्टर सांब आप जो ये सेवा कर रहे है बहोत बडी मिसाल है
बहोत बडी सेवा कर रहे है
आपके लीये जोबी दुवा माँगे कम ही है
भगवान आपको ख़ुश ओर सुखी रखे,
ये मेरी प्रार्थना है भगवान से.

Harish Chandra Joshi
Thank you for this useful information.
It is really positive way of thinking and good cause for the humanity.

Thank you once again

Subodh Kumar Mishra
डॉ साहब प्रणाम
मै आप का बहुत आभार मानता हूँ
जिस तरह से आप निस्वार्थ भाव से सेवा कर रहे है
वैसा प्रमाण मिलना कठिन है।

Rana Thakur
Ati utaam yogdaan he sir aapka samaj ke prati.

Varun Mishra
हे महामानव, आपका मार्गदर्शन शारीरिक व अध्यात्मिक रुप से सबलता प्रदान करती है।

Durga Joshi
Dr. Shab ko thanks kahuga or sabhi dosto ko ye bhi batauga ki mai bhi dr. shab se Skin ka treatment le raha hu or mujhe 80% thik ho gaya hai.
Aap sabhi pathako ko batana chahuga ki 3 year's se maine English medicine liya tha, magar bimari kam ke jagah badh raha tha.

Kavi Anand Jain Akela
आपका परामर्श मानव मूल्यों की धरोहर है.

Meenu Jain
Jab kisi ko aapki dawa batati hu n,
usko aaram mil jata h
to bhut achha lagta h

Varun Mishra
आपका हर दवाई और विचार मानवीय जीवन के लिए अमूल्य है। इसे आत्मसात कर मानव का शारीरिक, मानसिक व अध्यात्मिक रुप से स्वस्थ व सबल जीवन जी सकता है।
हे महामानव ! आपको शत शत नमन व वंदन।

DrKishan Swaroop Sharma
एक अति सुंदर, कामयाब तथा जीवनोपयोगी पोस्ट के लिये आपको हमारी ओर से कौटी-कौटी धन्यवाद- जय श्री राधै. ..राधै जी की

Neeku Gupta
Aap se Accha Paropkari Insan is Puri Darti par no Milega Sir
Ni SWarth Sava Bhav Sir Aap Bhagwan h Ap Sir Pujniy hai.

Tikam Jain
Jai jinendra sa prnaam sa.
Aapki hr post sadhak ke liye praan vaayu ka kaam krti he.

Aatm pipasu ke liye to amrit hi he.
Chintan Krte Krte Rom Rom Pulkit Ho Jata He Aur Avrnniy Anubhav Hota He.

Anil Garg
पता नहीं कितने लोगों के जीवन में स्वास्थ्य का उजियारा किया होगा आपने डाक्टर साहब और वो भी निस्वार्थ।

Manju Singh
Good Morning Sir. I have reading all your health posts which I have found extremely helpful.
You are doing a very noble service.
Kindly give some advice and treatment of Thyroid .
Can it be cured permanently through homoeopathic treatment and medication.

Anil Garg
सौभाग्यशाली हैं वो जिनके दिल में दूसरों के लिए दर्द है।
आपको हृदय से प्रणाम डाक्टर साहब।

Ramdulare Gupta
डाक्टर साहब प्रणाम आपके आशीर्वाद से मै ठीक हूँ. आपके द्वारा बताई दवाओ से अब मै दूसरो को भी लाभान्वित करा रहा हूँ.

Aadityaa Sharma
आपको प्रणाम।
समाज के लिए आपके विचार, अपने अनुभव, समाधान, ललक
आपकी कितनी भी सराहना करे तो भी कम है।
कहने के शब्द नही मिल रहे।
मै अपनी भावना व्यक्त नही कर पा रहा हूँ।
कोटि कोटि नमन।

Neeku Gupta
Sir ji Ap to Bagwan ho
Sir ji Ap Roj New Acchi Daba Aur Gyan Ki Jankari Post Kar Rahe ho.

Subodh Kumar Mishra
डॉ साहब बहुत बहुत आभार
मै आपके ही सहारे हूँ
आपके ऊपर बहुत विश्वास है ।

Deepak Dewnani
डॉ. साहब ,सादर नमस्कार,

मैं नियमित रूप से आपकी सभी पोस्ट को पढ़ता हूँ।
इनसे काफी महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती हैं।
आपके द्वारा किया गया यह कार्य प्रशंसनीय है
एवं लोक कल्याण हेतु सराहनीय है।

Nishit Sharma
बहुत ही अच्छी जानकारी दी गई है
डाक्टर साहब बहुत आभार व्यक्त करते हैं
आगे भी इस तरह हमारा जीवन में मार्ग सुझाये.

Surender Kaushik
Nice Dr sahib. Great service to mankind.

Chandrakant Singh
Very very useful lines.
thank you so much.

Ramkumar Sharma
Sir ko naman
aap bahut hi punnaya ka Karya kar rahe hai

Manju Singh
Good Evening Sir.
Your prescribed medicines are very effective.
I am really thankful to you.
You are so genuine.

Shivam Saxena
Sir mai swath raho swath karo koi bhi bimari ho
Uski dava puri tarahe se fayda kar rahi hai
Thanks sir

Ramdulare Gupta
डाक्टर साहब प्रणाम आपके आशीर्वाद से मेरा शुगर लेवल बिना दवा के ठीक रहता है.
आपके द्वारा बताये गये इलाज को मैने अपने घर परिवार और गाँव मे बहुत लोगो को दिया है.
सभी को बहुत जल्दी आराम मिलता है.
आपके द्वारा बताया गया बुखार का इलाज बहुत ही प्रभावशाली है.
जिसको भी दिया है शत-प्रतिशत सकारात्मक परिणाम मिले हैं.

Narayan Lal Choudhary
Aapka every treatment 100% useful rhata hai.

Aap sir world ke best doctor ho.

Aapke btayi gyi medicine se mere ko aur mere dost ko bhoot benifit hua hai.
Ek request hai maine upper likha hai body vibration aur stage phobia ke baare mai advice digeye plzz.

Rana Thakur
Dhanyawad sir
Aaj hi le lunga mene aapki bataya anusaar kai treatment liye he or
Dusro ko bi bataya he
Jinse bhut hi fayda ho raha he.
Logo ki duaye aapko mil rahi he sir.

Kailash Chandra Khandelwal
उत्तम स्वास्थ्य हेतु अत्यन्त उपयोगी,हितकारी,जानकारियों के लिए अनंत आत्मीय साधुवाद। बधाई।

Harry Suyal
muktiya — 5 star
This is excellent to help us every time
this is excellent to help us every time

Rana Thakur
आपका बहुत बहुत आभार जो इन्गलिश दवाओ से होने बाली परेशानी ओर लुटने से बचने मै सहायता की हम आपके इस प्रयास को ओरो को भी बताता हूं जिससे गरीब जन मानस फायदा ले सके ओर सुख से रहे. आपका कोटि कोटि आभार.

Atul Singh
muktiya — 5 star
जीवन में स्वस्थ्य शरीर के लिये अति उपयुक्त पेज है,
पाये निरोग व साफ सुथरी जिन्दगी !

Kadar Khan
muktiya — 5 star
Salute dr swatantra jain...
Sacchi manav sewa koi aap se seekhe

Girish Vyas
reviewed muktiya — 5 star
Aapke jese sahi doctor sahab nahi dekha .
Great work.
Aapke pas har bimari ka ilaj he

Hansa Rohit
muktiya — 5 star

Bhagvan ne aapko bahot achhi socha di he.
Aur aajke dorme logo ko
Aapke jese ki sahi me jarurat he sir.
Bhagvan aapko bahot sakti de
Aapka prayas achha hai
Aur logo ki duvao se jarur
Aap safal hinge.....
Aur achhe kaam me
Bhagvan bhi sath deta hai
All the best.

Vipin Garg
muktiya — 5 star
बहुत अच्छा कार्य है
अगर जनता का इस पर विश्वास बनाए रखे
तब जिन्दगी मे किसी को एलोपेथिक दवाईयां खाने के कारण अलसर का भी सामना नही करना पड़ेगा

Jitendra Bhadauriya
Apka koi jod nahi hai sir
Aap logo ke liye God ho.
Jo itna app sochte ho.
Apki sari poste vardaan hai
Thanks

Chetna Kanchan Bhagat
आप दोनों ही मेरे लिए प्रेरणा रूप हो
आपके प्रेम, लोक कल्याण की भावना व सामाजिक उत्तर दायित्व की अमिट छाप मेरे मन ह्रदय में सदा से है।

Kadar Khan
Muktiya — *5 star*
Salute Dr Swatantra Jain...
Sacchi Manav sewa koi aap se seekhe.

Jeetendra Singh
Muktiya — *5 star*
Really very helpful humanity...
Dr swt....is goodman

Arvind Singh
Muktiya — *5 star*
He is great man who serving humanity unconditionally.

Jagannath Tanty

Aap ki saari baatein mere lie Amrit baan hai aor yaha bahot achhi baat hai ki main bhi kisi ke kaam aunga Dhanyabaad sir, my Gmail is

Deepak Rajput
Rajiv Dixit ji ke bad drswatantra jain ji ko maine dekha h jo is desh ke liye dil se kaam krte h warna sab lootne ka hi sochte h.

Arvind Singh
He is great man who serving humanity unconditionally

Sneh Jain
Aapki posts bindas hoti hai aur bilkul real.sach
bahut dukh hota hai
chand rupees ke liye marijo se khilwad karte hai doctors

Rana Thakur
धन्यवाद सर, कल दवाई लाता हूं
सर आपके सहयोग से हम अब काफी टाईम से किसी के द्वारा नही लुटे है
नही तो हमारी तनख्वाह का ज्यादा भाग डाक्टर साहब की फीस मे खर्च हो जाता था.

Lalit Sharma
Swasthya aur Sresth-jeevan kaise haasil ho....is disha me aapka marg-darshan bahot anmol h....
kripaya apna aashirwaad baye rakhiyega....
dhanyawaaaad

Pawan Sharma
आपकी सेवा को नमन है डॉक्टर साहब

Rohit Singh
logo ke dukh ka niwaran karne wale dr sar m apko parnam karta hu

Piyush Jain
So Graceful. God Bless u.

Jitendra Jain Bhavya Atmn
Dr Swatantra jain ji kya Face pr Saralta h,
सबका दुख दूर करने वाले डॉक्टर, आपको सादर जयजिनेन्द्र

Devendra Pandey
Apke bare m bhut suna h
Garv hota h Hume apke sath jud k
thank you sir

Ashok Patil
Very good.
Feeling pleasure n proud of you after reading your post.
I read you for the first time.

Pc Bargot
सर में दो साल से आयुर्वेदि और एलोपेथी दवाई खाई और फिर बाद में होम्योपैथी लेकिन किसी भी दवाई से लाभ नही हुआ सिर्फ आपके द्वारा बताई गई दवाई से लाभ हुआ

Prakash Maan
You are really so great
Perhaps God have chosen you sir ji carry on please.

Tripurari Sharma
आपकी सेवा व सेवा भावना की जितनी तारीफ की जावे वो कम है

OM Singh
A Great person on a great mission.
He always helps people

Pawan Sharma
नमनः है आपकी सेवा को डॉक्टर साहब

Jeenu Bhansali Jain
Bahut hi badiya...
Anmol Jaankaari share karne ke liye.
aapko tahedil se Dhanyawaad aur naman karta hu,

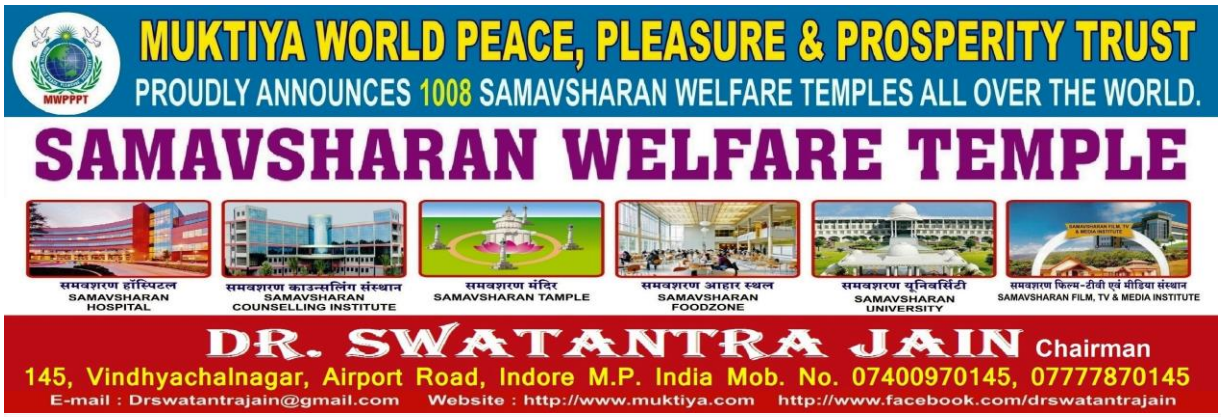

-: डॉ. स्वतंत्र जैन एक परिचय :-

डॉ. स्वतंत्र जैन सा. एक प्रख्यात निःस्वार्थ डॉक्टर, लोक कल्याणकारी और मानवाधिकार के क्षेत्र के मनीषी, जनहित, प्रेरणादायी और आध्यात्मिक लेखक हैं.

देश और विदेश के लाखों लोगो तक डॉ. सा. के मुक्तियाँ ट्रस्ट द्वारा निशुल्क पहुंचाया जा रहा □□□□□ रोगी के परिवार □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□.

आपकी बताई नेचरल होम्योपैथी की दवाई रोगी के शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत कर लोगो को स्वस्थ बनाती है और रोग से पूर्ण लाभ देती है.

आज तक लाखों लोगों ने उनके इस □□□□□ को लिया है और उन □□□□ □□□□ हुआ □□.

साथ ही डॉ. सा. की भावना है कि उनकी इस नेचरल होम्योपैथी की पद्धति का विदेश में भी प्रचार-प्रसार कर सम्पूर्ण विश्व के लोगो को इसका लाभ पहुंचाना चाहते हैं.

साथ ही डॉ. सा. के मुक्तियाँ विश्व शांति, सुख समृद्धि ट्रस्ट द्वारा हर देश में समवशरण सेवा मंदिर काम्प्लेक्स की स्थापना का अति विशाल कार्य भी शुरू किया जाना है.

ये सभी एक हजार आठ समवशरण सेवा मंदिर काम्प्लेक्स दीन-दुखी, बेबस, लाचार तथा बीमार व्यक्ति को भोजन, औषधि, शिक्षा तथा सुरक्षा देंगे तथा फिर उनको सर्वांग सुखी कर सहजानंदी शुद्ध स्वरूपी चैतन्य भगवान के ज्ञान का दिव्य-प्रकाश प्रदान कर पामर से परमात्मा बनने की प्रेरणा देते रहेंगे.

इन सभी समवशरण सेवा मंदिर काम्प्लेक्स में सम्पूर्ण मानव समाज के कल्याण लिए चार प्रकार के दान या सेवा की व्यवस्था रहेगी –

a. औषधि दान या सेवा
b. शास्त्र दान या ज्ञान सेवा
c. अभय दान या सुरक्षा प्रदान करना
d. आहार दान या पौष्टिक भोजन प्रदान करना

पूरे विश्व में ऐसे 1008 समवशरण सेवा मंदिर बनाना है.

आप अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन के इन्दौर शहर के अध्यक्ष एवं मध्यप्रदेश राज्य के उपाध्यक्ष भी हैं.

आप मानवाधिकार के क्षेत्र में अतुलनीय जनहितकारी कार्य कर रहे हैं.

प्राणी मात्र के चैतन्य-सम्राट की बात करने वाले आपके आध्यात्मिक लेख भी आपकी खुद की आत्मानुभूति, आत्मज्ञान, आत्मवैभव,

निजी अनुभव और नय, न्याय एवं वैज्ञानिक प्रमाणों के आधारों पर ही लिखे गये होते हैं.

अतः आप चाहे तो उनकी लिखी सभी आध्यात्मिक पुस्तको को भी उनकी वेब साईट से डाउन लोड कर सकते हैं.

डॉ. सा. का जन्म एक जनवरी 1949 को भोपाल में हुआ था और आपने इंजीनियरिंग की डिग्री मौलाना आजाद कालेज आफ टेक्नोलाजी, भोपाल से प्राप्त की।

फिर आपने म.प्र. विधुत मंडल में विभिन्न पदों पर रहते हुए अत्यंत कुशलता एवं कर्मठता के साथ अपना कार्य निष्पादित किया एवं अधीक्षण यंत्री पद से समय पूर्व सेवानिवृत्ति ले ली। आपने डॉक्टर आफ मेडीसिन (वैकल्पिक चिकित्सा) की उपाधि भी प्राप्त की। आपके पास आने वाले सभी पीड़ित और परेशान लोगों की दुख, बीमारी और समस्याओं का उपचार, परामर्श, सलाह एवं इलाज आप निस्वार्थ भाव से करते हैं।

आपने विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के अध्यक्ष एवं सचिव पद पर रहते हुए बहुत ही निपुणता के साथ उन संस्थाओं के कार्य को आगे बढ़ाया है।

आपके लेख सन्मति संदेश दिल्ली एवं अन्य पत्रिकाओं, समाचार पत्रों में छपते रहे हैं।

आपके द्वारा लिखी गई पुस्तके निम्नानुसार हैं -

1. मुक्तियाँ
2. मुक्तिशिखर
3. MUKTIYA THE ULTIMATE FREEDOM (अंग्रेजी)
4. MUKTIYA RAYS (अंग्रेजी)
5. छहढाला
6. मुक्ति-धारा
7. मुक्ति किरण
8. मुक्ति-पथ
9. मुक्ति-कुंज
10. मुक्ति महल
11. मुक्ति दीप
12. मुक्ति मार्ग
13. मुक्ति सुख
14. मुक्ति तरंग
15. मुक्ति दर्पण

आपकी वेबसाइट www.muktiya.com पर आपके सभी लेख और पुस्तके उपलब्ध हैं।

आपकी शैली अत्यंत सरल, सुबोध, शास्त्रोक्त, वैज्ञानिक एवं तर्क संगत है।

आत्मा जैसे गंभीर एवं दुरूह विषय को भी आप अपने तर्क एवं उदाहरण द्वारा इतने सहज रूप में समझाते हैं कि आत्मा की सत्ता को ही नकारने वाला श्रोता भी उस पर विचार करने को मजबूर हो उठता है।

आपकी स्पष्ट उदघोषणा है कि जिस तरह हर नागरिक को राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री बनने की स्वाधीनता है,

उसी तरह आत्मा के क्षेत्र में भी प्रजातंत्र की ही प्रतिष्ठा है। यहाँ पर भी प्रत्येक प्राणी अपनी आत्मा को गृहण कर अपना कल्याण कर परमात्मा बन सकता है।

वर्तमान में आपके द्वारा निम्न कार्य और केंद्र संचालित किये जा रहे हैं -

1. □□□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ के अध्यक्ष के रूप में आपके □□□□□□□ □□□□□□□, □□□□□□□□ □□□□□□□ और □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□-□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□, □□□□□□□ और □□□□□□□□□□□ □□ केंद्र और राज्य सरकारों के समक्ष रख कर उन्हें □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□

2. लोक हित, प्राणिमात्र के कल्याण के लिये आपके प्रवचन छः माह तक भास्कर टी.वी. पर आते रहे हैं।

3. फेसबुक और Samadhan समाधान ग्रुप पर भी आपके लेख और बीमारियों के उपचार से सम्बंधित लेख आते रहते हैं.

4. देश-विदेश के हजारो लोग उनकी बीमारियों और परेशानियों के निवारण के लिए आपसे सम्पर्क करते रहते हैं.

आपके द्वारा संचालित निशुल्क संस्थायें और कार्य इस तरह हैं -

1. मुक्तियाँ विश्व शांति, सुख, समृद्धि ट्रस्ट –

संसार में हर ओर आज लड़ाई, झगड़ा, मार-पीट, हिंसा आतंकवाद आदि दिखते हैं, उससे मुक्ति पाने की दिशा में प्रत्येक मनुष्य अगर अपने सर्वजनहितकारी स्वरूप को स्वीकार कर हरेक दीन-हीन, दुखी, बीमार, निम्न जाति एवं वर्ण के मनुष्यों को अपने अंतरमन से मुक्त-हस्त से तन, मन एवं धन से मदद करे तो विश्व शांति की कल्पना की कल्पना साकर हो उठेगी; सुख और समृद्धि का साम्राज्य स्थापित होगा। यह कल्पना साकार करने का प्रयत्न करना ही आपका उद्देश्य है।

2. मुक्तियाँ नेचुरल होम्योपथिक हॉस्पिटल –

किसी भी तरह की तकलीफ, परेशानी है, बीमारी अगर आपको है, तो उसकी पीड़ा से आपको मुक्त करने और आपके शरीर की समस्त क्रियाओं को अत्यंत सुचारू रूप से कार्य करने योग्य बनाने और आपकी सभी तरह की शारीरिक पीड़ा से आप मुक्ति पा सकें, यही आपका प्रयत्न है और उद्देश्य है।

3. आप अपने पास आने वाले हर बीमार को दवाई के अतिरिक्त यह सलाह अवश्य देते हैं कि वे रात्रि को खाना और जमीकंद खाना बंद करें.

4. सिर्फ सूर्य तप्त शाकाहारी सादा भोजन ही लें.

5. अपने आसपास की झोपड़पट्टी में रहने वाले किसी गरीब व्यक्ति की हर हफ्ते मदद करें.

6. अध्यात्मिक कैप्सूल के रूप में आपकी पुस्तक मुक्तियाँ की एक-एक मुक्ति तीन माह तक रोज पढ़ें. इससे उनकी नेगेटिव एनर्जी कम होगी और पॉजिटिव एनर्जी बहुत तेजी से बढेगी.

आपके द्वारा सभी को खुद को स्वस्थ रखने और अन्य दूसरे हजारो-लाखों लोगो को भी स्वस्थ करने की प्रेरणा दी जा रही है.

फेसबुक के कई दोस्तों ने बताया है कि उन्होंने अपने गाँव या शहर में डॉ. सा. द्वारा बताई चिकित्सा पद्धति से मरीजों को हर तरह से निशुल्क सलाह देना और उनका उपचार करना भी शुरू कर दिया है. इस तरह इन सेवाभावी लोगो ने न केवल अपने परिवार को स्वस्थ रखा, अपितु अन्य लोगो को भी स्वस्थ बनाये रखने को कोशिश की. साथ ही गरीबों का निशुल्क उपचार भी शुरू कर दिया है और लोगों को इससे बहुत लाभ भी हुआ है.

इस तरह सभी लोग स्वस्थ रहे और अपने आसपास के लोगो को भी स्वस्थ रहने में मदद करे.

तथा विश्व-बंधुत्व की ज्योत को जलाये रखने में हमे सहयोग करें.

यदि आप चाहे तो डॉ. सा. के हजारों आध्यात्मिक लेखों को पढ़ने के लिए उनकी लिखी मुक्तियाँ, मुक्ति शिखर, मुक्ति धारा, मुक्ति पथ और मुक्ति कुञ्ज आदि पंद्रह आध्यात्मिक पुस्तको को muktiya.com से आप निशुल्क डाउन लोड कर सकते हैं –

इन को रोज पढने से आपकी नेगेटिव एनर्जी निश्चित ही कम होगी और पॉजिटिव एनर्जी बहुत तेजी से बढेगी.

आप सभी को यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता होगी कि डॉ. स्वतंत्र जैन सा. के प्रवचनों और साक्षात्कारों की 15 डीवीडी के सेट सभी जिज्ञासुओं को भेजे जा रहे हैं.

इन सभी 15 डीवीडी के सेट को आपके बताये पते पर कोरियर द्वारा निशुल्क प्राप्त करने के लिए कृपया आप अपना पता और मोबाइल नं. डॉ. स्वतंत्र जैन सा. के मेसेज बाक्स में भेजे.

डॉ. सा. के पचासों विडियो प्रवचन, इंटरव्यूज को यू-ट्यूब पर भी डाल दिया गया है जिनको देखने का लिंक इस तरह से है –

https://www.youtube.com/channel/UCuVsIg6F2zYNLxUNbBqalkg

डॉ. सा. के □सुख की ओर□ के पचासों प्रवचनों को □□-3 में सुनने के लिए आप इस लिंक में जाएँ –

https://we.tl/RoT5BnIbiy

डॉ. सा. के □WAY TO HAPPINES□ के इंटरव्यूज को □□-3 में सुनने के लिए आप इस लिंक में जाएँ –

https://we.tl/1Il2BRAp94

भक्त से भगवान बनें

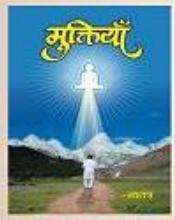

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com

अगर आप नीरोगी काया, स्वस्थ शरीर, सुंदर छवि चाहते हैं
तो ब्यूटी पॉर्लर, हेल्थ क्लब जाना, घूमना, कसरत करना आदि क्रियाओं में घंटो समय बिताना
और हजारो रुपये खर्च करने के बदले अगर आप उससे आधे समय भी दीन–हीन, दुखी,
बेबस, लाचार, बीमार मनुष्यों की सेवा करोगे तो इससे आपकी अन्तर्चेतना शक्ति जागृत
होगी जिससे न सिर्फ आपका वर्तमान शरीर स्वस्थ एवं सुन्दर होगा अपितु आपके आगे
आने वाले हजारों भवों में भी आप स्वस्थ, सुंदर एवं समृद्ध रहेंगे एवं शीघ्र ही पामर से परमात्मा बन जावेंगे।

भक्त से भगवान बनें

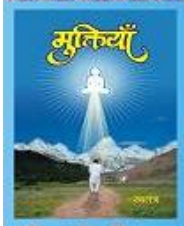

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com

प्रजातंत्र में जिस तरह हर नागरिक को राष्ट्रपति
प्रधानमंत्री बनने की संवैधानिक योग्यता है,
उसी तरह प्राकृतिक संविधान से प्रत्येक मानव अपनी आत्मा को गृहण कर स्वयं

पामर से परमात्मा बन सकता है
खुद से खुदा बन सकता है
भक्त से भगवान बन सकता है

भक्त से भगवान बनें

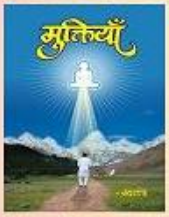

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com

सिद्ध भगवन्त बाहें फैलाये तुझे पुकारे रे
घर आजा परदेशी तेरा मोक्ष बुलाये रे।

भक्त से भगवान बनें

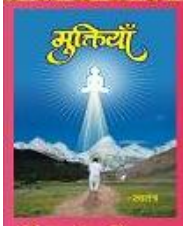

डॉ.स्वतंत्र जैन
Website : www.muktiya.com

यह संसार एक सपना है
मोक्ष महल ही अपना है

भक्त से भगवान बनें

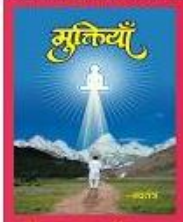

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com

धर्म का कार्य सदाकाल सुख देना है अपनी आत्मा को पहिचानकार मानकर एवं गृहणकर आप भी अन्य परमात्माओं के समान अपने सम्पूर्ण सुख को प्राप्तकर अमर हो कर भगवान बन सकते हो।

भक्त से भगवान बनें

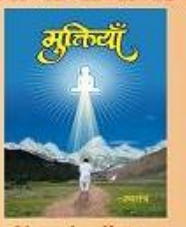

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
मो. 94248 76961, 99265 00416
Website : www.muktiya.com

अगर आपको अपनी दीन-हीन अवस्था, दुख, बीमारी, गरीबी, लाचारी, बेबसी परेशान कर रही हैं तो अपने भगवान आत्मा को मानने से आप इन तकलीफो से शीघ्र ही मुक्त होकर सदाकाल रहने वाले सुख को पाकर अमर हो जावेंगे।

भक्त से भगवान बनें

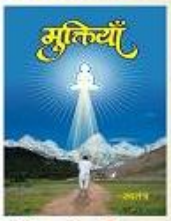

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com

इस संसार में एक परमाणु भी नष्ट नही होता हैं। हर बार वह दूसरे परमाणु से क्रिया कर नया यौगिक (शरीर) बनाता हैं और पुराना यौगिक नष्ट हो जाता है। आप भी एक शरीर (यौगिक) से दूसरे शरीर में भ्रमण करते रहते हो। नये शरीर के धारण करते ही पुराना शरीर नष्ट हो जाता है। इस तरह जब एक सुक्ष्म परमाणु भी इस जन्म-मरण की क्रिया में नष्ट नहीं होता है तो फिर यह मान लें कि आप भी सदाकाल अविनाशक ही हैं अमर ही हैं। पुनः जैसे परमाणु में अपार शक्ति भरी है वैसे ही आप में भी अनन्त शक्ति एवं गुण भरे हुए हैं। इस तथ्य को स्वीकार करने से आप भी भक्त से भगवान बन जाओंगे।

भक्त से भगवान बनें

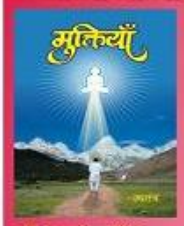

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com

आप अनन्त सुख, अनन्त शक्ति, अनन्त ज्ञान, अनन्त शान्ति के भंडार हो एवं वर्तमान में ही त्रिलोकीनाथ भगवान हो।

भक्त से भगवान बनें

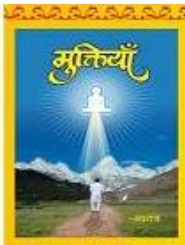

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com

तुम स्वयं ही हो तीन लोक के नाथ

भक्त से भगवान बनें

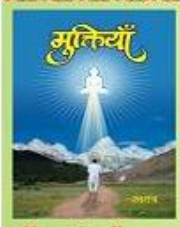

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com

हिन्दु मुस्लिम सिख इसाई

सब ही हैं परमात्मा भाई

भक्त से भगवान बनें

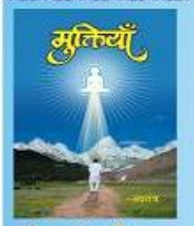

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com

तुम स्वयं सिद्ध-बुद्ध-शुद्ध हो,
एवं सम्पूर्ण ब्रह्मांड के स्वामी हो

भक्त से भगवान बनें

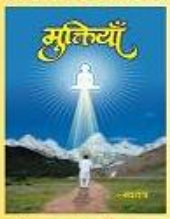

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com

सभी मनुष्य समान रुप से भगवान हैं
चाहे राजा हो या रंक, अमीर हो या गरीब, स्त्री हो या पुरुष
बालक हो या जवान हो या वृद्ध, उच्च वर्ग हो या निम्न वर्ग

भक्त से भगवान बनें

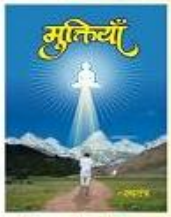

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
115, विंध्याचल शंकर, एरोड्रम रोड, मंडीदीप
मो. 94248 76961, 99265 00416

विश्व बंधुत्व

इस संसार में प्रत्येक प्राणों नें चौरासी लाख योनियों में से प्रत्येक योनी में अनन्त बार जन्म–मरण किया हैं। आपको दिखने वाला प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी जन्म में आपका ही पारिवारिक सदस्य, दोस्त आदि रहा हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि सभी मानव कभी न कभी आपके ही माँ, बाप, भाई, बहिन, सम्बन्धी या दोस्त रहे होंगे। अत: अब प्रत्येक दीन–हीन, दुखी, बीमार, लाचार, बेबस भाई–बहिन के आंसू पोंछना उनकी मदद करना ही विश्वबंधुत्व की भावना को साकार करना है और इस मार्ग पर चलकर आप शीघ्र ही भक्त से भगवान बन जाओंगे ''